Digitized by Madhuban Trust, Delhi

[illegible]

सरला [illegible]

[illegible]

[illegible]

RESEARCH SCHOLAR

[illegible]

[illegible] 1951 [illegible]

मूल्य 60 [illegible]

[illegible]
C 25, Green Park, Extension
New Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

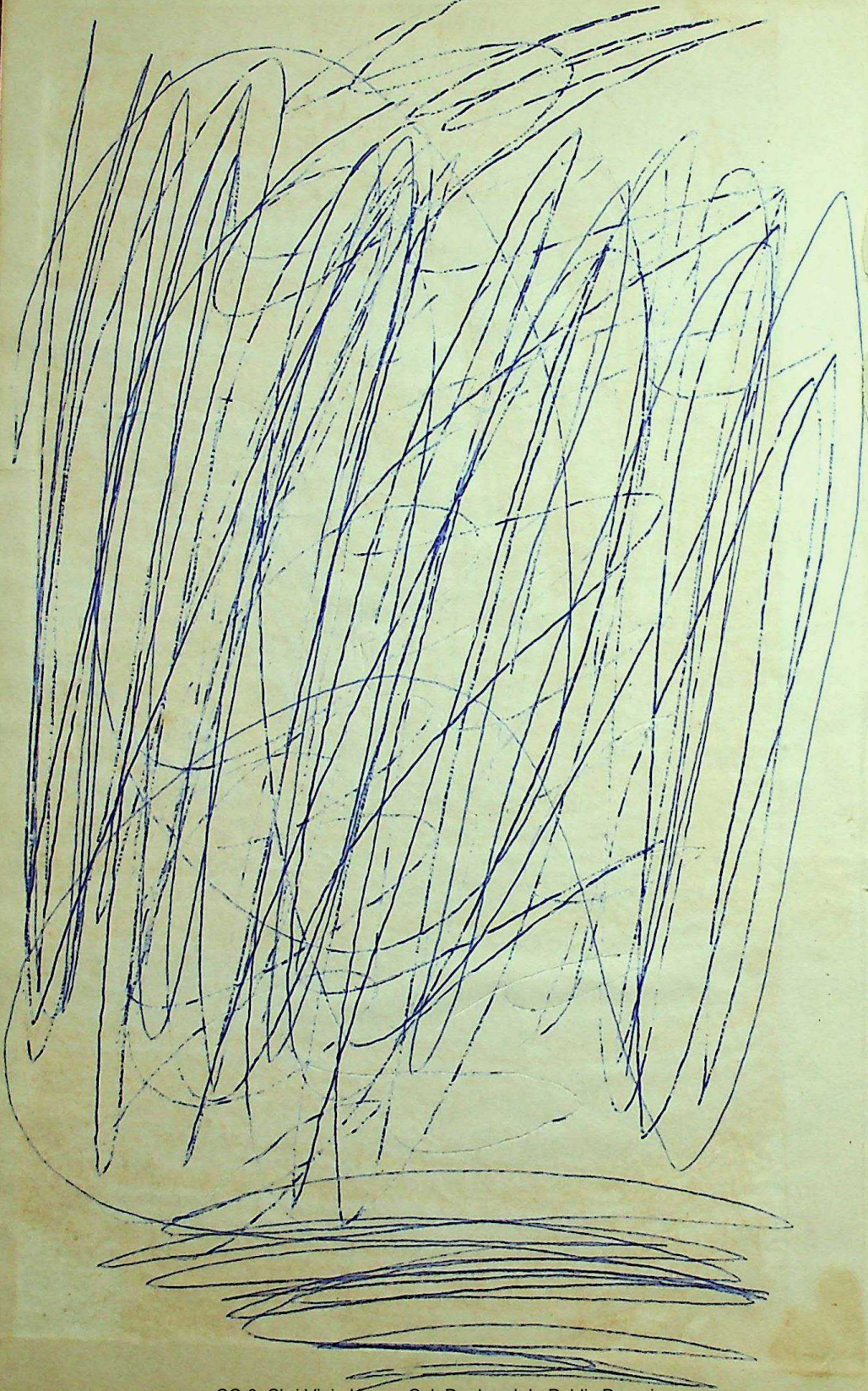

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वैशेषिक सूत्र

सरला टीका सहित

जिसको

अखिल तंत्र स्वतन्त्र, ज्योतिष-शास्त्र निष्णात कवि तार्किक

RESEARCH SCHOLAR

पं० ज्ञानचन्द्र शर्मा वेदान्त शास्त्री

ने निर्माण किया 195वां पुष्प

संशोधक

भारत के सुप्रसिद्ध, पीयूषपाणि विभूषित

नाड़ी विशेषज्ञ वैद्यराज बृहस्पतिदेव त्रिगुणा जी नें किया

मूल्य 60 रुपये

मिलने का पता
C 25, Green Park, Extnion
New Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

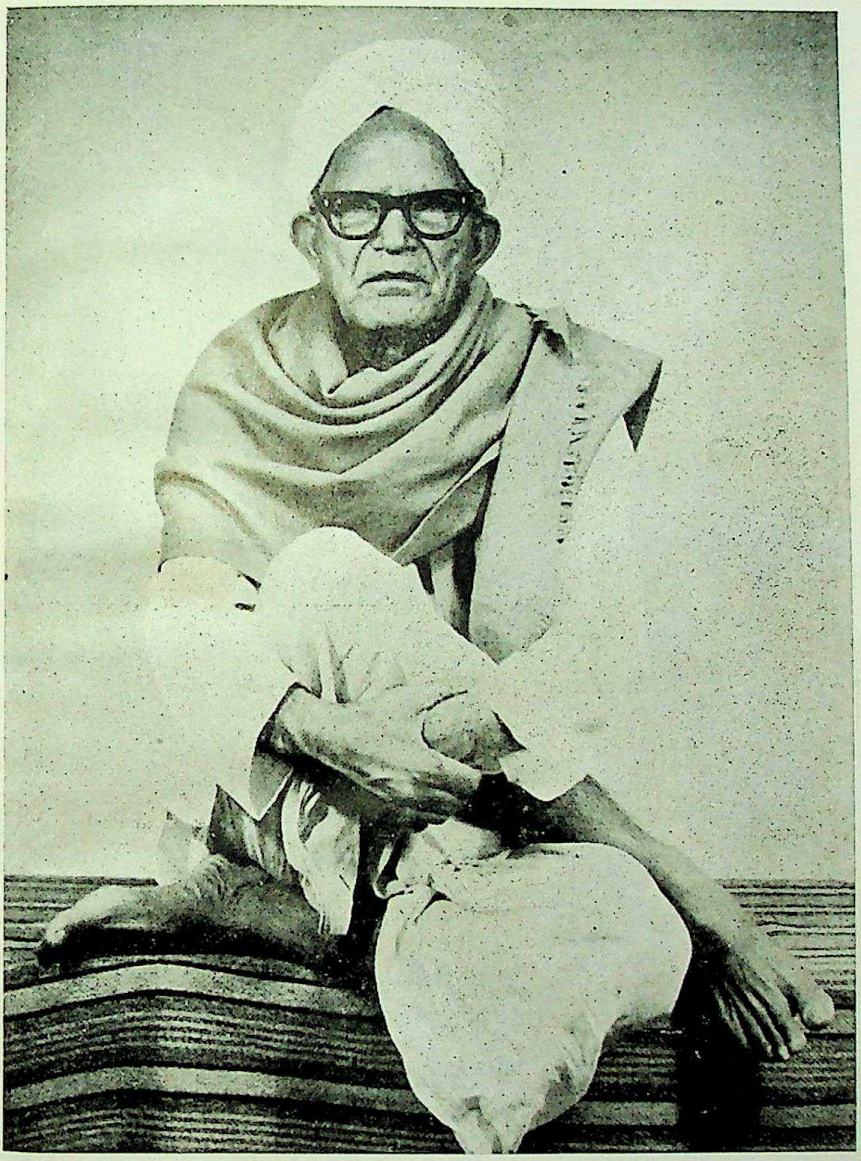

कोमले काव्यविषये कर्कशे तर्कवस्तुनि
समं लीलायते यस्य ज्ञानचन्द्रस्य भारती

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्रस्तावना

वेद तथा उनके अन्तिम भाग उपनिषद् आस्तिक दर्शनों के स्रोत हैं। मूलतः तीन दर्शन परिगणनीय होते हैं। **सांख्य, वैशेषिक** तथा **पूर्वमीमांसा**। यद्यपि उक्त तीनों दर्शन वेद का प्रामाण्य स्वीकृत करने के कारण आस्तिक हैं, तथापि ये तीनों ईश्वर को नहीं मानते। **पद्मपुराण** में इन्हें वेदवाह्य कहा है। इनके सेश्वर के लिए पूरकरूप में अन्य तीन दर्शनों का अवतार हुआ। वे हैं क्रमशः **योग, न्याय** तथा **उत्तरमीमांसा (वेदान्त दर्शन)**। उक्त दर्शनों के जो तत्त्वबीज वेदों में संनिहित हैं, उन्हीं को सूत्ररूप में प्रस्तुत करने का कार्य **कपिल, पतञ्जलि, कणाद, गौतम, जैमिनी**, तथा **व्यास** ने किया है। कणाद के वैशेषिक सूत्रों में परमाणुओं को चराचर विश्व का कारण माना है। जिसे जैन दर्शनकारों ने **'पुद्गल'** के नाम से कहा है। पदार्थों के स्वरूप निर्णय के के लिए भारतीय विद्वानों को वैशेषिक दर्शन का ज्ञान उसी प्रकार अनिवार्य है, जिस प्रकार पदसाधुत्व के निर्णय के लिये पाणिनीय व्याकरण का अनुशीलन। **वायुपुराण** में कहा है।

'कणादेन तु संप्रोक्तं शास्त्रं वैशेषिकं महत्'।

कणाद 150 B.C. में गुजरात प्रान्त के **प्रभास पत्तन** में हुए, इनके पिता का नाम **सोमशर्मा** था। ये **महेश्वर** के अवतार माने जाते हैं। **कणाद नाम क्यों पड़ा**=जब कृषक अपने खेत की खड़ी फ़सल काट ले जाते तब उससे झड़े हुए कण (दाने grains) जो खेत में पड़े रहते थे, उनको इकट्ठा कर उसी से अपना जीवन निर्वाह करते थे। इसी कारण उनका नाम **'कणाद'** या 'कणभुक्' पड़ा। कुछ विद्वान् कण का अर्थ परमाणु करते हैं, उनके खाने वाला अर्थात् परमाणु विद्या के जानने वाला। The Founder of the atomic theory) इनका एक नाम **'उलूक'** भी प्रसिद्ध है। यह नाम इसलिए पड़ा कि ये दिन में ग्रंथ रचना करते और रात में उलूक (owl) के समान जीविकोपार्जन किया करते थे। कुछ विद्वानों का कथन है कि ये बाल्यकाल में पाणिनि के समान जड़मति रहे हों, उसी आधार पर इनका नाम उलूक पड़ गया हो। एक और भी विद्वानों की धारणा है, कि इन्होंने शंकर की घोर तपस्या की, प्रसन्न हुए शंकर ने

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उलूक के रूप को धारण कर इन्हें इस शास्त्र का उपदेश दिया। मेरे पूज्यपिता सर्वतन्त्रस्वतन्त्र पंडित जमीताराम जी का विचार था कि इनके गुरु का उपनाम उलूक था, जिससे इन्होंने इस शास्त्र का अध्ययन किया। नैषधीयचरित के व्याख्याकार नारायण भट्ट ने भी उलूक को कणाद का पर्याय माना है। **वाचस्पत्यम्** में इन्हें उलूक ऋषि की सन्तान मानकर इन्हें **'औलूक्य'** कहा गया है। **'सम्मतितर्क'** की व्याख्या में **'अभयदेव सूरि'** ने भी इसका अनुमोदन किया है। कहीं-कहीं परमाणुवाद के आधार पर इनका नाम **'पैलुक'** भी है। यहाँ **'पीलु'** शब्द का अर्थ है परमाणु, जैसा कि **पीलु-पाक-वाद** से स्पष्ट होता है। इस दर्शन का सबसे प्रसिद्ध नाम वैशेषिक दर्शन है। क्योंकि अत्यन्त प्रसिद्ध तथा बहुमत व्याख्या यह है कि इस दर्शन में **'विशेष'** पदार्थ कहा गया है जिसका नाम अन्य किसी दर्शन में नहीं मिलता। इसी के कारण इसका नाम **वैशेषिक** पड़ा। **षड्दर्शनसमुच्चय** की वृत्ति में **मणिभद्र** ने नैयायिकों की अपेक्षा द्रव्य गुण आदि तत्त्वों की व्याख्या होने के कारण ही इसे वैशेषिक कहा है। **न्यायलीलावती** में भी **वल्लभाचार्य** ने इसी तत्त्व की ओर संकेत किया है।

वैशेषिक सूत्रों के भाष्य तथा टीकाकार

सूत्रों पर **'वाक्य'** नाम की टीका का संकेत जैन लेखक महातार्किक (great-logician) **मल्लवादी** ने अपने **द्वादशारनयचक्र** में किया है। यह संक्षिप्त टीका है। इस पर एक भाष्य तथा उन दोनों पर एक **प्रशस्तमति** की टीका जिसका नाम भी **प्रशस्तमति** ही सम्भावित है।

आयस्क कृत व्याख्या=प्रमाणसमुच्चय की व्याख्या करते हुए **जिनेन्द्रबुद्धि** ने **केचित्** शब्द से **आयस्क** का स्मरण किया है।

रावणभाष्य=**पद्मनाभमिश्र** ने **किरणावलीभास्कर** में **अनुभूतिस्वरूपाचार्य** ने **प्रकटार्थविवरण** में और **गोविन्दप्रभु** ने ब्रह्मसूत्र शंकरभाष्य व्याख्या **रत्नप्रभा** में रावण-भाष्य का उल्लेख किया है। **मुरारिमिश्र** ने **अनर्घराघव नाटक** के पंचम अंक (act) में रावण के **कटन्दी पंडित** होने का उल्लेख किया है। नाटक के टीकाकार **रुचिपति** उपाध्याय ने संदर्भ की व्याख्या करते हुए लिखा है कि, **'कटन्दी'** (वैशेषिक शास्त्र ग्रन्थः) यह रावण की रचना थी। यह स्मरण रहे कि लंकाधिपति रावण का इस भाष्य से कोई सम्बन्ध नहीं। यह रावण पंजाब की नदी **चन्द्रभागा** के किनारे का रहने वाला महान् दार्शनिक था।

इस का काल ईस्वी की तीसरी शताब्दी का प्रतीत होता है। वैशेषिक सूत्रों पर **आत्रेयवृत्ति** अथवा **आत्रेय भाष्य** का पता चलता है। बड़ौदा, **गायकवाड़ ओरिएण्टल**

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सीरीज से व्याख्या का प्रकाशन ई० 1961 में हुआ। रचयिता का नाम **चन्द्रानन्द** है। इसकी पाण्डुलिपि (manuscript) का सम्पादन मुनि श्री **जम्बूविजय** जी ने किया। **मिथिला विद्यापीठ** दरभंगा से वैशेषिक दर्शन का संस्करण 1955 ई० में प्रकाशित हुआ। इसका संपादन **अनन्तलाल ठाकुर** जी ने किया। भट्ट वादीन्द्र ने **कणादसूत्रनिवन्ध** नामक टीका लिखी।

प्रशस्तपाद=कणाद के सूत्रों का आधार लेने पर भी **'पदार्थधर्मसंग्रह'** स्वतन्त्र ग्रन्थ है, व्याख्या ग्रन्थ नहीं। न्यायदर्शन के भाष्कार **वात्स्यायन** ने अपने भाष्य में **प्रशस्तपाद** भाष्य से सहायता ली है। बौद्ध विद्वान् **'वसुबन्धु'** ने प्रशस्तपाद द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों का खण्डन करने की चेष्टा की है। प्रशस्तपाद की विशिष्टता तथा महनीयता इसी से समझी जा सकती है, कि संग्रह ग्रंथ होते हुए भी परवर्ती आचार्यों ने इसे भाष्य के रूप में मान्यता प्रदान की। इस भाष्य के पश्चात् वैशेषिक सूत्रों का तथा रावण-भाष्य का सर्वथा लोप हो गया। इस भाष्य पर आठवीं शताब्दी में **व्योमशिवाचार्य** ने **व्योमवती** नामक व्याख्या लिखी। दसवीं शताब्दी में **उदयनाचार्य** ने **किरणावली** तथा वैशेषिक दर्शन पर **लक्षणावली** नामक एक स्वतन्त्र ग्रंथ की रचना की। **श्रीधराचार्य** ने भाष्य पर **न्यायकंदली** की रचना की यह बड़ी प्रौढ़ एवं विशद व्याख्या है।

श्रीधर ने वैशेषिक के स्थान पर न्याय शब्द का प्रयोग बड़ी सूझ-बूझ के साथ किया है। श्रीधर के परवर्ती **पद्मनाभमिश्र** ने **न्यायकंदलीसार** और जैन पंडित **राजशेखर** ने **न्यायकंदली पञ्चिका** नामक टीका की रचना की। **शालिकनाथ** ने भाष्य पर अज्ञात नामा टीका लिखी। **अभिनवगुप्त** का **पदार्थप्रवेशनिर्णय**। **शंकरमिश्र** का **कणाद रहस्य**। **मल्लीनाथ** का **भाष्यनिकष**। **पद्मनाभ मिश्र** का **सेतु**। **जगदीश तर्कालंकार** का **सूक्ति**। तथा श्री वल्लभ की **न्यायलीलावती**, ये सब टीकाएं प्रशस्तपाद भाष्य पर हैं।

वैशेषिक दर्शन की सेश्वरता को स्थापित करने का श्रेय प्रशस्तपाद को ही प्राप्त है। उन्हीने भाष्य के मंगलाचरण में कहा है।

प्रणम्य हेतुमीश्वरं मुनिं कणादमन्वतः।
पदार्थधर्मसंग्रहः प्रवक्ष्यते महोदयः॥

अर्थ=(सभी जन्य पदार्थों के) कारण ईश्वर को प्रणाम करने के पश्चात् कणाद मुनि को प्रणाम करके **'महोदय'** अर्थात् मोक्ष देने वाले पदार्थधर्मसंग्रह नामक ग्रन्थ को लिख रहा हूं। प्रशस्तपाद ने अपने पदार्थधर्मसंग्रह नामक ग्रन्थ के अन्त में यह बतलाया है, कि कणभुक् ने अपने यौगिक सदाचार से महेश्वर को प्रसन्न कर उनकी कृपा से वैशेषिक शास्त्र का निर्माण किया।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

योगाचारविभूत्या यस्तोषयित्वा महेश्वरम् ।
चक्रे वैशेषिकं शास्त्रं तस्मै कणभुजे नमः ॥

उपस्कार—पन्द्रवीं ई० के प्रसिद्ध मैथिल दार्शनिक **शंकर मिश्र** द्वारा रचित वैशेषिक **उपस्कार** आजकल सबसे अधिक प्रचलित व्याख्या है। यह नव्यन्याय से ओत-प्रोत है। इनके पिता **भवनाथ मिश्र** मीमांसा के मर्मज्ञ विद्वान् थे। उनकी आर्थिक स्थिति बहुत दयनीय थी, वे कहीं याचना करने नहीं जाते थे, इसी कारण उनका नाम **अयाची मिश्र** पड़ गया।

उनकी स्त्री का नाम **भवानी** था। उनके कोई सन्तान न थी। भगवान् वैद्यनाथ की आराधना से उनके घर पुत्र हुआ, जिसका नाम उन्होंने **शंकर** रखा। ऐसी प्रसिद्धि है कि जब भवानी प्रसव वेदना का अनुभव कर रही थी; तो उसी समय **चमारिन** के घर का ढोल आघात के बिना ही बजने लगा, यह देख, चमारिन पति से बोली, ऐसा प्रतीत होता है कि ग्राम में किसी महापुरुष का जन्म होने वाला है। उसी समय नवजात शिशु शंकर के घर ढोल बजाने के लिए एक व्यक्ति आया। चमारिन ने मंगलकामना करते हुए उसके घर जाकर ढोल बजाया, पर निर्धनता के कारण भवानी कुछ न दे पाई और कहा कि शिशु शंकर की प्रथमार्जित सारी सम्पत्ति चमारिन को दे दी जाएगी। अभी पाँच वर्ष की आयु भी पूर्ण न हो पाई थी कि शंकर पिता के प्रभाव से प्रौढ़ विद्वान् हो गया। एक मिथिला के राजा शिवसिंह अपनी यात्रा के प्रसंग में भवनाथमिश्र के घर के पास रुक गए, उन्होंने खेलते हुए शंकर की ओजिस्वता पर आकृष्ट होकर उसे अपने पास बुलाया और उसके अध्ययन के बारे में पूछा शंकर ने कहा मैं सद्यःनिर्मित अपना श्लोक सुनाता हूं। बोला,

बालोऽहं जगदानंद न मे बाला सरस्वती।
अपूर्णे पंचमे वर्षे वर्णयामि जगत् त्रयम् ॥

शंकर की प्रतिभा पर राजा अत्यन्त प्रसन्न हो उठा और 500 स्वर्ण मुद्रायें उसे पारितोषक के रूप में दीं। जब उस द्रव्य को लेकर शंकर घर आया तो उसकी माता ने पूर्व प्रतिज्ञानुसार वह सम्पत्ति चमारिन को दे दी।

उस चमारिन ने अपनी और शंकरमिश्र की कीर्ति को अमर रखने के लिए शंकरमिश्र के घर के पास उसी द्रव्य से एक तालाब बनवाया · पं० भवनाथ मिश्र को शंकर की याचकता तथा दानग्राहकता उनकी अयाचक मनोवृत्ति के लिए सर्वथा प्रतिकूल सिद्ध हुई। उन्होंने अन्त में अपने घर से कुछ दूर एक कुटी बनवा ली और अपने जीवन के शेष दिन वहीं गुजारे। शंकरमिश्र का पाण्डित्य सभी शास्त्रों में अप्रतिहत

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

था इनकी कृति मुख्यतः न्याय वैशेषिक शास्त्र से ही सम्बद्ध है **'खण्डनखण्डखाद्य'** जैसे प्रौढ़ ग्रन्थ पर भी इनकी टीका है। **प्रगल्भ मिश्र** जैसे विद्वान् को भी अपनी खण्डनटीका **खण्डनदर्पण** के प्रारम्भ में लिखना पड़ा।

'श्रीमच्छंकरवर्धमानरचितोपायान् विलोड्यापि च'

वैशेषिक सूत्रों पर इनका उपस्कार ही एकमात्र व्याख्या है।

नोट = मिथिला के ब्राह्मण वंश में शंकर मिश्र के वंश में जितने **'महामहोपाध्याय'** हुए हैं उतने अन्य किसी भी संप्रदाय के किसी वंश में भी नहीं।

जैन और बौद्ध विद्वानों ने भी वैशेषिक सूत्रों को अपने ग्रन्थों में उद्धृत किया है। उपर्युक्त व्याख्याओं के अतिरिक्त कुछ आधुनिक व्याख्याएँ भी हैं। चन्द्रकान्त तर्कालंकार का भाष्य। जयनारायण तर्कपञ्चानन की **विवृत्ति**। रघुदेव का **व्याख्यान**। हरिप्रसाद शास्त्री की **वैदिक वृत्ति**। पं० प्रभुदयाल तेहरी जिला बांदा का हिन्दी अनुवाद। पं० आर्य मुनि का हिन्दी अनुवाद। श्री तुलसीराम स्वामी का भाषानुवाद। हिमाचल में मण्डीराज्य के अन्तर्गत पं० काशीराम जी का संस्कृत अनुवाद। विद्याभास्कर वेदरत्न उदयवीर शास्त्री जी का हिन्दी अनुवाद। मेरे पूज्यपिता सर्वतन्त्रस्वतंत्र पं० जमीता राम जी का कणादसूत्रमीमांसा।

सूत्रों के अनुवाद में मैंने अर्थ को स्पष्ट करने के अभिप्राय से कुछ अधिक शब्दों का प्रयोग किया है। इसलिए ग्रन्थ में न्यूनता, भ्रम और प्रमाद की पूरी सम्भावना है। आचार्य कुमारिल भट्ट के इस श्लोक के साथ में इस भूमिका को समाप्त करता हूं।

तद् विद्वांसोऽनुगृह्णन्तु चित्तश्रोत्रैः प्रसादिभिः।
सन्तः प्रणयिवाक्यानि गृह्णन्ति ह्यनसूयवः॥

ज्ञानचन्द्रः

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वैशेषिक-दर्शन

प्रथम अध्याय प्रथम आह्निक

सम्बन्ध—महर्षि कणाद निःश्रेयस के हेतु तत्त्वज्ञान का उपदेश करने के लिये वैशेषिक शास्त्र का आरम्भ करते हुए प्रथम उसके साधन-धर्म निरूपण की प्रतिज्ञा करते हैं। शिष्यों के प्रश्न करने पर महर्षि कणाद बोले।

अथातो धर्मं व्याख्यास्यामः 1

(अथ) अब (अतः) इस से आगे (धर्मं) धर्म की हम (व्याख्यास्यामः) व्याख्या करेंगे।

Now, then, we will explain (what) merit (is)

सं० धर्म का लक्षण करते हैं।

यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः 2

(यतः) जिस से (अभ्युदय) भोग, ऐश्वर्य और (निःश्रेयस) मोक्ष की (सिद्धः) प्राप्ति हो (सः) वह (धर्मः) धर्म है।

नोट—उदयनाचार्य ने इस सूत्र का ऐसा अर्थ किया है। धर्म से तत्त्वज्ञान और तत्त्व ज्ञान से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

Merit is that from which (results) attainment of elevation and of the highest good.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सं० अब धर्म में प्रमाण कथन करते हैं।

तद्वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यम् 3

(तद् वचनात्) ईश्वर से निर्मित होने के कारण (आम्नायस्य) वेद को (प्रामाण्यम्] प्रमाणता है।

Authoritativeness belongs to revelation because it is a declaration of that.

सं० धर्मजन्य तत्त्वज्ञान से निःश्रेयस की प्राप्ति का कथन करते हैं।

धर्मविशेषप्रसूताद् द्रव्यगुणकर्मसामान्य-विशेषसमवायानां पदार्थानां साधर्म्य वैधर्म्याभ्यां तत्त्वज्ञानान्निःश्रेयसम् 4

(धर्मविशेषप्रसूताद्) धर्म विशेष से उत्पन्न हुए, द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, तथा समवाय नामक (पदार्थानां) पदार्थों के (सधार्म्य) समान धर्म और (वैधर्म्य) विपरीत धर्म से उत्पन्न (तत्त्वज्ञानात्) तत्त्वज्ञान से (निःश्रेयसम्) मोक्ष की प्राप्ति होती है।

नोट—महर्षि गौतम के 16 पदार्थों का समावेश (amalgamation) इन्हीं 6 पदार्थों में हो जाता है। भूषणकार कर्म को अतिरिक्त पदार्थ नहीं मानते। बौद्ध आचार्य सामान्य, विशेष और समवाय तीनों पदार्थों को नहीं मानते।

The highest good (results) from knowledge of the truth which springs from particular merit (and is obtained) by means of the similarity and dissimilarity of the categories, substance, attribute, action, generality, particularity and inhesion.

सं० द्रव्य पदार्थों का विभाग करते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पृथिव्यापस्तेजो वायुराकाशं कालो दिगात्मा मन इति द्रव्याणि 5

पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिशा, आत्मा और मन ये नव द्रव्य हैं। सूत्र में 'इति' शब्द के प्रयोग से द्रव्य केवल नौ हैं न न्यून न अधिक।

नोट—इन छः पदार्थों में द्रव्य वह है जिसमें उत्तर पाँचों पदार्थ रहते हों।

Earth, water, light, air, ether, time, space, soul and the internal organ, are the substances.

सं० गुणों का विभाग करते हैं।

रूपरसगन्धस्पर्शाः संख्याः परिमाणानि पृथक्त्वं संयोगविभागौ परत्वाऽपरत्वे बुद्धयः सुखदुःखे इच्छाद्वेषौ प्रयत्नाश्च गुणाः 6

1. रूप, 2. रस. 3. गन्ध, 4. स्पर्श, 5. संख्या, 6. परिमाण, 7 पृथक्त्व, 8. संयोग, 9. विभाग, 10. परत्व, 11. अपरत्व, 12. बुद्धि, 13. सुख, 14. दुःख, 15. इच्छा, 16. द्वेष, प्रयत्न। यह सूत्र पठित, 17. गुण हैं। अन्य सात गुणों का निर्देश 'च' पद से किया गया है। वे यह हैं। 1. गुरुत्व, 2. द्रवत्व, 3. स्नेह, 4. संस्कार, 5. धर्म, 6. अधर्म और 7. शब्द कुल मिलकर 24 गुण हैं।

Colour, taste, smell and touch, numbers, extensions, individuality, conjunction and disjunction, priority and posteriority, intellections, pleasure and pain, desire and aversion, and volitions are qualities. This list commentators add seven more, under the shelter of 'च' शंकर मिश्र, the author of उपस्कार, explains the omission by saying that these seven are are not expressly mentioned is in the सूत्र because they are too well known. The addition is expressly made by

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्रशस्तपाद—gravity, fluidity, viscidity, self-restitution, merit-demerit and sound.

सं० कर्म का विभाग करते हैं।

उत्क्षेपणमवक्षेपणमाकुञ्चनं प्रसारणं गमन-मिति कर्मणि 7

(उत्क्षेपणं) ऊपर को फेंकना (अवपेक्षणं) नीचे को गिराना(आकुञ्चनं) सिकुड़ना (प्रसारणं) फैलाना (गमन)चलना या जाना ये पाँच प्रकार के कर्म हैं।

Motion or action is of five kinds only (उत्क्षेपणं) throwing upwards, (अवपेक्षणं) throwing dcwnwards (आकुञ्चन) contraction (प्रसारण) expansion and (गमनं) going.

भ्रमणं रेचनं स्यन्दनोर्ध्वज्वलनमेव च।
तिर्यग्गमनमप्यत्र गमनादेव लभ्यते॥

चक्र में घूमना, किसी वस्तु का बाहर निकलना (जैसे शरीर से मल आदि) बहना, ऊपर की ओर जलना तथा तिरछा चलना, ये सब कर्म गमन में ही आ जाते हैं।

(भ्रमणं) gyration (रेचनं) evacuation (स्यन्दन) flow (उर्ध्व-ज्वलनं) flaming up और (तिर्यगमनं) stanting motion are to be classed under simple going (गमन)।

सं० द्रव्य, गुण तथा कर्म का विभाग कथन किया, अब तत्त्व ज्ञान के उपयोगी पदार्थों के साधर्म्य, वैधर्म्य प्रकरण का आरम्भ करते हुए प्रथम उक्त तीनों का साधर्म्य बतलाते हैं।

सदनित्यं द्रव्यवत् कार्यं कारणं सामान्य-विशेषवदिति द्रव्यगुणकर्मणामविशेष : 8

सत्ता वाले का नाम 'सत्' है। नष्ट होने वाले का नाम 'अनित्य' है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

द्रव्यसमवायि कारण वाले का नाम 'द्रव्यवत्' है। उत्पन्न होने वाले का नाम 'कार्य' है। कार्य के उत्पन्न करने वाले का नाम 'कारण' है। पर तथा अपर जाति वाले का नाम (सामान्यविशेषवत्) है (इति) यह छः द्रव्य, गुण, और, कर्म तीनों के (अविशेषः) साधर्म्य हैं।

Existence, transitoriness, inhesion in substance, effect, cause and possession of generality and particularity are the common element of substances, qualities and actions.

सं० द्रव्य और गुण का साधर्म्य कथन करते हैं।

द्रव्यगुणयोः सजातीयारम्भकत्वं साधर्म्यम् 9

(द्रव्यगुणयोः) द्रव्य और गुण का (सजातीयारम्भकत्वम्) अपने समान जातीय पदार्थ का उत्पन्न करना (साधर्म्यम्) साधर्म्य है।

The common property of substance and quality is that they originate things of the same class.

सं० उक्तार्थ को स्पष्ट करते हैं।

द्रव्याणि द्रव्यान्तरमारभन्ते गुणाश्च गुणान्तरम् 10

(द्रव्याणि) पृथिवी आदि द्रव्य (द्रव्यान्तरम्) दूसरे द्रव्यों को (आरभन्ते) उत्पन्न करते हैं (गुणाः च) और गुण पदार्थ (गुणान्तरं) दूसरे गुणों को उत्पन्न करते हैं।

Substances, originate another substance, and qualities another quality.

सं० जैसे, द्रव्य अपने सजातीय द्रव्य का तथा गुण अपने सजातीय गुण का उत्पन्न करने वाला है। वैसे ही कर्म अपने सजातीय कर्म का उत्पन्न करने वाला क्यों नहीं?

उत्तर :—

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कर्म कर्मसाध्यं न विद्यते 11

(कर्म) पूर्वोक्त पाँच प्रकार के कर्मों के मध्य में कोई कर्म भी (कर्म-साध्यं) सजातीय कर्म का उत्पन्न करने वाला (न) नहीं (विद्यते) होता है।

An action cannot be effected by an action.

सं० गुणों कर्मों और द्रव्यों का वैधर्म्य कहते हैं।

न द्रव्यं कार्यं कारणं च बधति 12

(कार्यं) कार्य (च) और (कारणं) कारण (द्रव्यं) द्रव्य को (न) नहीं (वधति) नष्ट करता।

नोट "वधति" यह आर्ष प्रयोग 'हिनस्ति' के स्थान में है।

A substance is not destroyed either by its effect or by its cause.

सं० गुणपदार्थ कार्य तथा कारण दोनों से नष्ट होते हैं।

उभयथा गुणा: 13

(उभयथा) कार्य तथा कारण दोनों से (गुणा:) गुण पदार्थ नष्ट होते हैं।

Qualities (are destroyed) in both (the above) manners.

सं० प्रश्न कर्म कैसा होता है? उत्तर

कार्यविरोधि कर्म 14

(कर्म) कर्म (कार्यविरोधि) अपने कार्य से नाश वाला है

An action is opposed to its effect.

सं० द्रव्य का क्या लक्षण है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

क्रियागुणवत् समवायिकारणमिति द्रव्य-लक्षणम् 15

(क्रियागुणवत्) क्रिया वाला, गुणों वाला, तथा (समवायिकारणं) समवायिकारण वाला हो (इति) यह (द्रव्यलक्षणं) दव्य का लक्षण है।

The definition of substance is that it is possessed of actions and qualities, and is a coinherent cause.

सं० गुण का लक्षण करते हैं।

द्रव्याश्रय्यगुणवान् संयोगविभागेष्वकारण-मनपेक्ष इति गुणलक्षणम् 16

(द्रव्याश्रयी) द्रव्य में आश्रित (अगुणाम्) अन्य गुणों वाला न हो (संयोग-विभागेषु) संयोग और विभाग में (अनपेक्षः) अपेक्षा रहित (अकारणम्) कारण न हो (इति) यह (गुणलक्षणम्) गुण का लक्षण है।

That it has substance as a substratum, that it is without qualities and that it is not a cause of conjunctions and disjunction being unconcerned with them, is the definition of quality.

सं० कर्म का लक्षण करते हैं।

एकद्रव्यमगुणं संयोगविभागेष्वनपेक्षकारण-मिति कर्मलक्षणम् 17

(एकद्रव्यं)) जो एक द्रव्य आश्रित हो (अगुणं) गुण से रहित हो (संयोग-विभागेषु) संयोग और विभाग में (अनपेक्षकारणम्) निरपेक्ष स्वतन्त्र कारण हो (इति) यह (कर्म लक्षणम्) कर्म का लक्षण है।

That it abides in one substance, is without qualities,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

and is the obsolute cause of conjunctions and disjunctions, is the definition of action.

सं० द्रव्य, गुण, कर्म, का साधर्म्य बतलाते हैं।

द्रव्यगुणकर्म्मणां द्रव्यं कारणं सामान्यम् 18

(द्रव्यगुणकर्म्मणां) द्रव्य, गुण, और कर्म का (द्रव्यं कारणम्) द्रव्य कारण होता है (सामान्यम्) यह समानता है।

Substance is the common cause of substance, quality and actions.

सं० उक्त तीनों का और साधर्म्य बतलाते हैं।

तथा गुणः 19

(तथा) जैसे द्रव्य, गुण, तथा कर्म इन तीनों का द्रव्य कारण है वैसे ही (गुणः) गुण भी कारण है।

Likewise quality (is the common cause of substances, qualities and actions.)

सं० संयोगादि गुणों का साधर्म्य बतलाते हैं।

संयोगविभागवेगानां कर्म समानम् 20

(संयोगविभागवेगानां) संयोग, विभाग, और वेग इन तीनों का (कर्म) कर्म (समानम्) समान कारण हैं।

Action is the common cause of conjunctions disjunctions, and impetus.

सं० कर्म द्रव्य का साक्षात् कारण नहीं होता, यह बतलाते हैं।

न द्रव्याणां कर्म 21

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(कर्म) कर्म (द्रव्याणां) द्रव्यों का (न) साक्षात् कारण नहीं होता।

Action is not (a cause) of substances.

सं० उक्त अर्थ में हेतु कथन करते हैं।

व्यतिरेकात् 22

द्रव्य के उत्पत्ति काल में कर्म का अभाव होने से वह द्रव्य का कारण नहीं हो सकता।

Because it is excluded (from them).

सं० कार्यद्वारा द्रव्यों का साधर्म्य कथन करते हैं।

द्रव्याणां द्रव्यं कार्यं सामान्यम् 23

(द्रव्याणां) द्रव्यों का (द्रव्यं) द्रव्य(कार्यं) कार्य होता है यह (सामान्यं) समानता है।

Substance is the common effect of substances.

सं० जिस प्रकार अनेक द्रव्यों का एक द्रव्य तथा अनेक गुणों का एक गुण कार्य होता है उसी प्रकार अनेक कर्मों का भी एक कर्म कार्य होता है। इस संदेह पर सूत्रकार कहते हैं।

गुणवैधर्म्यान्न कर्मणां कर्म 24

(गुणवैधर्म्यात्) गुणों से विरुद्ध धर्म वाला होने के कारण (कर्मणाम्) कर्म का (कर्म) कर्म (न) कार्य नहीं।

Action because of its dissimilarity from quality is not (an effect) of actions.

सं० संख्या आदि गुणों का साधर्म्य कथन करते हैं।

द्वित्वप्रभृतयः संख्याः पृथक्त्वसंयोग-विभागाश्च 25

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(द्वित्वप्रभृतयः) द्वित्थादि संख्या (च) और पृथक्त्व संयोग और विभाग यह सब अनेक द्रव्यों से उत्पन्न होते हैं। अर्थात् इनका "अनेक द्रव्यकार्यकत्व" साधर्म्य है।

Numbers from duality upwards, individualiy, conjunction, and disjunction (are originated by more than one substance.)

सं० जिस प्रकार द्वित्वादि, द्रव्यों का कार्य हैं, वैसे कर्म भो हैं ? उत्तर नहीं, क्योंकि—

असमवायात्सामान्यकार्यं कर्म न विद्यते 26

(असमवायात्) समवाय सम्बन्ध न होने से (कर्म) कर्म (सामान्यकार्यं) सामान्य कार्य (न) नहीं (विद्यते) है।

Action is not the common effect (of several substances) because it does not inhere (in more than one substance.)

सं० गुणों का "एकद्रव्यकार्यकत्व" साधर्म्य कहते हैं।

संयोगानां द्रव्यम् 27

(संयोगानां) अनेक संयोगों का कार्य (द्रव्यम्) एक द्रव्य होता है।

Substance is the effect of conjunctions.

सं० गुणों का "एकगुणकार्यकत्व" साधर्म्य कहते हैं।

रूपाणां रूपम् 28

(रूपाणाम्) अनेक रूप गुणों का (रूपम्) एक रूप गुण कार्य होता है।

A colour is the effect of colours (more than one.)

सं० कर्म रूप एक कार्य कथन करते हैं।

गुरुत्वप्रयत्नसंयोगानामुत्क्षेपणम् 29

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(गुरुत्वप्रयत्नसंयोगानाँ) गुरुत्व, प्रयत्न, तथा संयोग इन तीनों का (उत्क्षेपणम्) उत्क्षेपण रूप कर्म समान कार्य है।

Throwing upwards (is the effect) of gravity. volition and conjunction.

सं० कर्म के समानकार्य को कहते हैं।

संयोगविभागाश्च कर्मणाम् 30

(कर्मणाम्) कर्मों का (संयोगविभागाः) संयोग, विभाग (च) और वेग, यह तीनों समान कार्य हैं।

नोट—'च' शब्द से आचार्य ने वेग का ग्रहण किया है। क्योंकि कर्म से ही संयोग, विभाग और वेग, उत्पन्न होते हैं।

Conjunctions and disjunctions (are the effects) of actions.

सं० सूत्रकार प्रकृत विषय का निगम करते हैं।

कारणसामान्ये द्रव्यकर्मणां कर्माकारण-मुक्तम् 31

(कारणसामान्ये) कारण की समानता में (कर्म) कर्म को (द्रव्यकर्मणाम्) द्रव्यों और कर्मों का (अकारणम्) कारण न होना (उक्तम्) कहा है।

In (treating of) causes in general action is said not be a cause of substances and actions.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्रथम अध्याय द्वितीय आह्निक

सं० साधर्म्य वैधर्म्य के उपयोगी कार्य तथा कारण का स्वरूप कहते हैं।

कारणाभावात् कार्याभावः 1-32

(कारणअभावात्) कारण के अभाव से (कार्य अभावः) कार्य का अभाव होता है। जैसे बीज कारण और अंकुर कार्य है।

From non-existence of cause is non-existence of effect.

सं० शंका, जैसे कारण के न होने से कार्य नहीं होता, वैसे ही कार्य के न होने से कारण भी न होना चाहिये? उत्तर

न तु कार्याभावात् कारणाभावः 2-33

(तु) परन्तु (कार्य अभावात्) कार्य के अभाव से (कारण अभावः) कारण का अभाव (न) नहीं होता।

नोट—कार्य के अभाव में कारण भी न हो, यह नियम नहीं। मिट्टी के अभाव में घट तो अवश्य न होगा, परन्तु घट के अभाव में मिट्टी का अभाव आवश्यक नहीं।

But there is not from non-existence of effect non-existence of cause.

सं० अब क्रम प्राप्त सामान्य का लक्षण सूत्रकार बताते हैं।

सामान्यं विशेष इति बुद्धयपेक्षम् 3-34

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(सामान्यं) सामान्य है (विशेषः) विशेष है (इति) ऐसा (बुद्धयपेक्षम्) बुद्धि की अपेक्षा से ।

नोट –(1) जो एक पदार्थ से दूसरे के भेद की बुद्धि को उत्पन्न करता है, वह 'विशेष' है । (2) जो नित्य तथा अनेक व्यक्तियों में समवाय सम्बन्ध से रहे उसको 'सामान्य' कहते हैं । व्यावर्त्तक = भिन्नता के लिये विशेष निश्चय करवाने वाला ।

Generality and particularity both depend upon intellection.

सं० अब सत्ता के सामान्य होने में हेतु बतलाते हैं ।

भावोऽनुवृत्तेरेव हेतुत्वात् सामान्यमेव 4-35

(भावः) सत्ता (अनुवृत्तेः) अनुगत बुद्धि का (एव) ही (हेतुत्वात्) कारण होने से (सामान्यं) सामान्य (एव) ही है ।

Existence is general only, for it is a cause of extensive intellection.

सं० अब सामान्य के विशेष भेद का वर्णन करते हैं ।

द्रव्यत्वं गुणत्वं कर्मत्वं च सामान्यानि विशेषाश्च 5-36

(द्रव्यत्वं) द्रव्यत्व, (गुणत्वं) गुणत्व, (च) और (कर्मत्वं) कर्मत्व, (सामान्यानि) यह तीनों सामान्य हैं (च) और (विशेषः) विशेष भी ।

The essences of substance, quality, and action, are general and particular.

सं० जो अन्त्य विशेष पदार्थ कहा गया है, क्या वही सामान्य विशेषरूप सूत्रकार ने कहा है ?

अन्यत्रान्त्येभ्यो विशेषेभ्यः 6-37

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(अन्तेभ्यः) अन्त में रहने वाले (विशेषेभ्यः) विशेषों से (अन्यत्र) भिन्न में सामान्य और विशेष का कथन है।

With the exception of the ultimate particulars.

सं० अब सत्ता का लक्षण कहते हैं।

सदिति यतो द्रव्यगुणकर्मसु सा सत्ता 7-38

(यतः) जिस पदार्थ से (द्रव्य गुण कर्मसु) द्रव्य सत् है, गुण सत् है, और कर्म सत् (सत्) है (इति) ऐसा जाना जाता है (सा) वह (सत्ता) सत्ता है।

That is existence from which (there arises the conviction) with respect to substances, qualities, and actions, that they are existent.

सं० अब सत्ता का द्रव्यादि तीनों से भेद कथन करते हैं।

द्रव्यगुणकर्मभ्योऽर्थान्तरं सत्ता 8-39

(द्रव्य गुण कर्मभ्यः) द्रव्य, गुण और कर्म से (सत्ता) भाव (अर्थान्तरम्) अन्य पदार्थ है।

Existence is something different from substances, qualities and actions.

सं० सत्ता के भिन्न होने में हेतु कथन करते हैं।

गुणकर्मसु भावान्न कर्म न गुणः 9-40

(गुणकर्मसु) गुण और कर्म में (च) और द्रव्य में भी (भावात्) होने से (न) न तो (कर्म) कर्म है (न) और न (गुणः) गुण है।

नोट—इससे ज्ञात होता है कि सत्ता एक भिन्न पदार्थ है जो द्रव्य गुण कर्म रूप नहीं है।

Existence is neither an action nor a quality, because it exists in qualities and actions.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सं० द्रव्यादि तीनों से सत्ता के भिन्न होने में और हेतु कहते हैं।

सामान्यविशेषाभावेन च 10-41

(च) और (सामान्यविशेषाभावेन) सामान्य और विशेष के न होने से भी उक्त अर्थ की सिद्धि होती है।

And by reason of the non-existence (in existence) of generality and particularity.

सं० द्रव्यत्वरूप अपरसामान्य का द्रव्यादि तीनों से भेद का वर्णन करते हैं।

अनेकद्रव्यवत्त्वेन द्रव्यत्वमुक्तम् 11-42

(अनेकद्रव्यवत्त्वेन) अनेक द्रव्य वाला होने से (द्रव्यत्वम्) द्रव्यत्व (उक्तम्) कहा है।

The essence of substance is explained by means of its inherence in many substances.

सं० द्रव्यादि तीनों से द्रव्यत्व के भिन्न होने में और हेतु बतलाते हैं।

सामान्यविशेषाभावेन च 12-43

(च) और (सामान्यविशेषाभावेन) द्रव्यत्व जाति में सामान्य और विशेष धर्म के न पाये जाने से भी उक्त अर्थ की सिद्धि होती है।

And by reason of the non-existence (in the essence of substance) of generality and particularity.

सं० गुणत्व जाति को सूत्रकार सिद्ध करते हैं।

तथा गुणेषु भावाद् गुणत्वमुक्तम् 13-44

(तथा) वैसे ही (गुणत्वं) द्रव्यत्व की तरह गुणत्व जाति भी (उक्तम्) द्रव्यादि तीनों से भिन्न है, क्योंकि (गुणेषु) वह सब गुणों में (भावात्) समवाय सम्बन्ध से रहती है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

In like manner the universal in quality is explained from its existence in qualities.

सं० द्रव्यादि तीनों से गुणत्व के भिन्न होने में और हेतु बतलाते हैं।

सामान्यविशेषाभावेन च 14-45

(च) और (सामान्यविशेषाभावेन) गुणत्व जाति में सामान्य और विशेष धर्म के न पाये जाने से भी उक्त अर्थ की सिद्धि होती है।

Also by the non-existence (in it) of generality and particularity.

सं० कर्मत्व जाति का द्रव्यादि तीनों से भेद बतलाते हैं।

कर्मसु भावात् कर्मत्वमुक्तम् 15-46

(कर्मसु) कर्मों में (भावात्) होने से (कर्मत्वम्) कर्मत्व (उक्तम्) कहा गया।

The essence of action is explained from its existence in actions.

सं० द्रव्यादि तीनों से कर्मत्व जाति के भिन्न होने में और हेतु कहते हैं।

सामान्यविशेषाभावेन च 16-47

(च) और (सामान्यविशेषाभावेन) कर्मत्व जाति में द्रव्यादि सामान्य विशेष धर्मों के न पाये जाने से भी उक्त धर्म की सिद्धि होती है।

Also by the non-existence (in it) generality particularity.

सं० सत्ता का एक होना सिद्ध करते हैं।

सदितिलिंगाविशेषाद् विशेषलिंगाभावच्चैको भावः 17-48

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(सत्) सत् है (इति) इस प्रकार (लिङ्गाविशेषात्) प्रतीति के सामान्य से (च) और (विशेषलिङ्गाभावात्) विशेष की प्रतीति न होने से (भावः) सत्ता (एकः) एक है।

Because of the non-particularity of the property of being, and of the non-existence of a particular property therein there is (only) one existence.

द्वितीय अध्याय प्रथम आह्निक

सं० पृथिवी का लक्षण करते हैं।

रूपरसगन्धस्पर्शवती पृथिवी 1-49

रूप, रस, गन्ध, और स्पर्श वाली पृथिवी है। पृथिवी में गन्ध गुण अपना है।

Earth is possessed of colour, taste, smell and touch.

सं० जल का लक्षण करते हैं।

रूपरसस्पर्शवत्य आपो द्रवाः स्निग्धाः 2-50

रूप रस स्पर्श वाले (द्रवाः) बहने वाले (स्निग्धाः) और चिकने (आपः) जल हैं।

Water is possessed of colour, taste and touch and is fluid and viscid.

सं० तेज का लक्षण करते हैं।

तेजोरूपस्पर्शवत् 3-51

रूप और स्पर्श वाला तेज या अग्नि है।

Light has colour and touch.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सं० वायु का लक्षण करते हैं।

स्पर्शवान् वायुः 4-52

स्पर्श वाला वायु है।

Air is possessed of touch.

सं० आकाश का लक्षण करते हैं।

त आकाशे न विद्यन्ते 5-53

(ते) रूप रस गन्ध और स्पर्श आकाश में उपलब्ध नहीं होते।

Those (qualities) do not exist in ether.

सं० शंका—जल का जो स्वाभाविक 'द्रवत्व' लक्षण पहले कहा गया है, वह घृतादि पृथिवी में भी द्रवत्व की उपलब्धि होने से अतिव्याप्ति दोष ग्रस्त होने से अयुक्त है। इस शंका का सूत्रकार उत्तर देते हैं।

सर्पिर्जतुमधूच्छिष्टानामग्निसंयोगाद् द्रवत्व-मद्भिः सामान्यम् 6-54

(सर्पिर्जतुमधूच्छिष्टानाम्) घी, लाख, शहद का छत्ता (अग्निसंयोगाद्) तेज के संयोग से (अद्भिः) जलों के साथ (सामान्यम्) सामान्य है।

नोट—घृत, लाख और शहद के छत्ते को गरमी पहुँचने से (द्रवत्व) बहाव उत्पन्न हो जाता है, तब ये द्रव होकर जल के समान हो जाते हैं।

The fluidity, through conjunction with fire, of clarified butter, lac and wax, is common to them and water.

सं० रांगा आदि में उक्त जल के लक्षण की अतिव्याप्ति का निराकरण करते हैं।

त्रपुसीसलोहरजतसुवर्णानामग्निसंयोगाद् द्रवत्व द्भिः सामान्यम् 7-55

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(त्रपुसीसलोहरजतसुवर्णानाम्) जिस्त सिक्का लोहा चांदी और स्वर्ण में (अग्निसंयोगाद्) अग्नि के सम्बन्ध से जो (द्रव्यत्वं) पिघलनापन उत्पन्न होता है वह (अद्भिः) जलों के (सामान्यम्) समान है।

The fluidity, through conjuhction with fire, of tin, lead, iron, silver and gold, is common to them with water.

सं० अदृष्टलिंग द्वारा वायु की सिद्धि कथन करने के लिये प्रथम दृष्ट लिंग का निरूपण कहते हैं।

विषाणी ककुद्वान् प्रान्तेवालधिः सास्नावान् इति गोत्वे दृष्टं लिंगम् 8-56

(विषाणी) सींगवाली. (ककुद्मान्) कन्धे की उभरी हड्डी वाली (प्रान्तेबालधिः) पुच्छ के अन्तिम भाग में बालों वाली, (सास्नावान्) गल-कम्बल-गले के नीचे लटकता हुआ चर्मवेष्टित मांस वाली, (इति) यह सब (गोत्वे) गोत्व सिद्धि में (दृष्टं) दृष्ट (लिङ्ग) लिङ्ग =चिन्ह हैं।

That she has horns, a hump, a tail hairy at the extermity, and a dewlap is received mark of being a cow.

सं० वायुसिद्धि में अदृष्ट लिंग का वर्णन करते हैं।

स्पर्शश्च वायोः 9-57

(स्पर्शः) स्पर्श (च) शब्द और कम्प यह (वायोः) वायु की सिद्धि में अदृष्ट लिंग हैं अर्थात् जाने के साधन हैं।

Also touch is (a mark) of air.

सं० उक्त स्पर्श पृथिवी आदि का है वायु का नहीं इसलिये वह उसका लिंग नहीं हो सकता है? उत्तर—

न च दृष्टानां स्पर्श इत्यदृष्टलिंगो वायुः 10-58

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(च) और (दृष्टानां) दीखने वाले द्रव्यों का (स्पर्श) स्पर्श गुण (न) नहीं है, (इति) इस कारण (वायुः) वायु (अदृष्टलिंग) अदृष्टलिंग वाला है।

And it is not the touch which belongs to visible things, therefore air has an invisible mark.

सं० शंका, वायु के द्रव्य होने पर ही उक्त स्पर्श वायु का लिंग हो सकता है अन्यथा नहीं? उत्तर

अद्रव्यवत्त्वेन द्रव्यम् 11-59

(द्रव्यम्) वायु द्रव्य है (अद्रव्यवत्त्वेन) क्योंकि वह द्रव्य भिन्न का आश्रय हैं।

It is a substance because of its not inhearing in any substance.

सं० और भी हेतु है कि जिनसे वायु का द्रव्यत्व पाया जाता है।

क्रियावत्त्वाद् गुणत्ववाच्च 12-60

(क्रियावत्त्वाद) क्रिया वाला होने से (च) और (गुणवत्त्वात्) गुणवाला होने से वायु द्रव्य है।

Also (air is a substance) from its possessing actions and qualities.

सं० वायु का नित्यत्व कथन करते हैं।

अद्रव्यत्वेन नित्यत्वमुक्तम् 13-61

(अद्रव्यत्वेन) द्रव्य वाला न होने से वायु की (नित्यत्वम्) नित्यता (उक्तम्) कही गई है।

(Air) is said to be eternal because it does not inhere in any substance.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सं० वायु का अनेक होना कथन करते हैं।

वायोर्वायुसम्मूर्च्छनं नानात्वे लिंगम् 14-62

(वायोः) वायु से (वायुसम्मूर्च्छनं) वायु की टक्कर (नानात्वे) अनेक होने में (लिंगम्) पहचान है।

The concurrence of air with air is a mark of its multiplicity.

सं० शंका-वायु के स्पर्श का प्रत्यक्ष होता है इसलिये वह दृष्टिलिंग है अदृष्टलिंग नहीं ? उत्तर

वायुसन्निकर्षे प्रत्यक्षाभावाद् दृष्टं लिंगं न विद्यते 15-63

(वायुसन्निकर्षे) वायु के सामीप्य में (प्रत्यक्षाभावात्) प्रत्यक्ष न होने से (दृष्टं) दृष्ट (लिंगं) चिन्ह (न) नहीं (विद्यते) है।

Inasmuch as in the contact with air there is no act of perception there exists (in it) no visible mark.

सं० सामान्यतोदृष्ट अनुमान से वायु सिद्धि बतलाते हैं।

सामान्यतो दृष्टाच्चाविशेषः 16-64

(सामान्योदृष्टात्) सामान्यतोदृष्ट अनुमान से (च) भी (अविशेषः) सामान्य रूप से वायु की सिद्धि होती है।

And inasmuh as its existence is known by general inference it is not a particular.

सं० सामान्यतोदृष्ट अनुमान के अनुसार द्रव्य का बोध तो हो जायगा, पर वह 'द्रव्य' वायु है यह कैसे जाना गया।

तस्मादागमिकम् 17-65

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(तस्मात्) इसलिये (आगमिकम्) शब्द प्रमाण सिद्ध है। उसकी वायु संज्ञा वेद प्रमाण सिद्ध है।

It is therefore declared by revelation.

सं० यदि कहो कि वायु संज्ञा मात्र से विशेष क्या सिद्ध हुआ ? तो उत्तर

संज्ञा कर्म त्वस्मद्विशिष्टानां लिंगम् 18-66

(संज्ञा) नाम और (कर्म) काम (तु) ही तो (अस्मद्विशिष्टानां) हमारे विशिष्टों का (लिंगम्) चिन्ह है।

नोट—यहाँ 'तु' शब्द प्रकरण की समाप्ति का सूचक है। यहाँ से विशिष्टों का प्रकरण आरम्भ होता है।

But word and work are the mark of those beings who are distinguished from ourselves.

सं० नाम और काम ही से तो आप और हम विशेष वाले पदार्थों को पहचानते हैं, तब नाम (वायु) से विशेष क्यों सिद्ध नहीं, अवश्य है। क्योंकि—

प्रत्यक्षप्रवृत्तत्वात् संज्ञाकर्मणः 19-67

(संज्ञाकर्मणः) नाम और काम के (प्रत्यक्षप्रवृत्तत्वात्) प्रत्यक्ष प्रवृत्त होने से।

Because words and works are known by perception to be produced.

सं० वायु का वर्णन करके आकाश का वर्णन करते हैं।

निष्क्रमणं प्रवेशनमित्याकाशस्य लिंगम् 20-68

(निष्क्रमणं) निकलना और (प्रवेशनं) प्रवेश करना (इति) यह (आकाशस्य) आकाश का (लिंग) चिन्ह या पहचान है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

Egress and ingress, such is the mark of the existence of ether.

सं० अब पूर्णसूत्र पर शंका करते हैं कि—

तदलिंगमेक द्रव्यत्वात् कर्मणः 21-69

(कर्मणः) कर्म को (एकद्रव्यत्वात्) एक द्रव्य वाला होने से (तत्) वह निष्क्रमण और प्रवेश (अलिंगम्) लिंग नहीं हो सकता।

That is not a mark (of the existence of ether) for an action inheres in one substance only.

सं० आगे समाधान करते हैं कि—

कारणान्तरानुक्लृप्तिवैधर्म्याच्च 22-70

(कारणान्तरनुक्लृप्तिवैर्धम्यात्) अन्य कारण के लक्षण के वैर्धम्य से (च) भी अनुक्लृप्ति=लक्षण या स्थिति।

Also because the properties (of ether) differ from the mark of another cause.

सं० आगे समाधान करते हैं कि

संयोगादऽभावः कर्मणः 23-71

(संयोगात्) संयोग से (कर्मणः) कर्म का (अभावः) अभाव है।

Non existence of action results from conjunction.

सं० आकाश का ही गुण शब्द है इस को सिद्ध करने के लिये परिशेषानुमान से वर्णन करते हैं।

कारणगुणपूर्वकः कार्यगुणो दृष्टः 24-72

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(कार्यगुणः) कार्य का गुण (कारणगुणपूर्वकः) कारण के गुण पूर्वक (दृष्टः) देखा जाता है।

The quality of an effect is observed to be pre-existent in the quality of the cause.

सं० शब्द को पृथिवी आदि का गुण होना निषेध करते हैं।

कार्यान्तराप्रादुर्भावाच्च शब्दः स्पर्शवतामगुणः 25-73

(कार्यान्तराप्रादुर्भावात्) किसी अन्य कार्य के प्रकट न होने से (स्पर्शवतां) स्पर्श वाले पृथिवी से वायुपर्यन्तों का (शब्दः) शब्द (अगुणः) गुण नहीं है।

Sound is not a quality of tangible things, since there appears no other effect.

सं० यदि शब्द को आत्मा आदि का गुण मान लें तो क्या रोष है? उत्तर

परत्र समवायात् प्रत्यक्षत्वाच्च नात्मगुणो न मनोगुणः 26-74

(परत्र) अन्य द्रव्यों में (समवायात्) समवेत होने (च) और (प्रत्यक्षत्वात्) प्रत्यक्ष होने से (न) न तो (आत्मगुणः) मन का गुण है और (न) न (मनोगुणः) मन का गुण है।

Since it inheres in something else and is known by perception, sound is neither a quality of soul nor a quality of the internal organ.

सं० किन्तु—

परिशेषाल्लिंगमाकाशस्य 27-75

(परिशेषात्) बच रहने से (आकाशस्य) आकाश का (लिंगम्) चिन्ह शब्द है।

It remains that sound is a mark of ether.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सं० आकाश को द्रव्य तथा नित्य कथन करते हैं।

द्रव्यत्वनित्यत्वे वायुना व्याख्यायते 28-76

(वायुना) वायु की तरह (द्रव्यत्व-नित्यत्वे) आकाश द्रव्य तथा नित्य (व्याख्यायते) है।

The substantiality and eternity of ether are explained by air.

सं० आकाश को 'एक' कथन करते हैं।

तत्त्वं भावेन 29-77

(भावेन) सत्ता की तरह (तत्त्वं) आकाश एक है।

Its unity is explained by existence.

सं० उक्त अर्थ की सिद्धि में और हेतु कथन करते हैं।

शब्दलिंगा विशेषाद्विशेषलिंगाभावाच्च 30-78

(शब्दलिंगाविशेषात्) शब्द लिंग के सामान्य से (च) और (विशेषलिंगा भावात्) विशेष लिंग के न होने से आकाश एक तत्त्व है।

Also because sound, its mark, is not particular, and because there does not exist a particular mark of ether.

सं० आकाश में एक पृथक्त्व गुण का कथन करते हैं।

तदनुविधानादेकपृथक्त्वं चेति 31-79

(इति) इस प्रकार (तत्) उस एकत्व के (अनुविधानात्) साहचर्य से आकाश का (एकपृथक्त्वं) एक पृथक्त्व गुण (च) भी है। जो पदार्थ एक होता है, वह सब से पृथक् होता है।

In conformity with this is its individual unity.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

द्वितीय अध्याय द्वितीय आह्निक

सं० पृथिवी आदि पांच द्रव्यों की परीक्षा का आरम्भ करते हैं। पृथिवी से अन्य किसी द्रव्य का गन्ध गुण नहीं हैं। जैसे

पुष्पवस्त्रयोः सति सन्निकर्षे गुणान्तरा-प्रादुर्भावो वस्त्रे गन्धाभावलिंगम् 1-80

(पुष्पवस्त्रयोः) पुष्प और वस्त्र का (सन्निकर्षे) परस्पर सम्बन्ध (सति) होने पर (गुणान्तर-प्रादुर्भावः) अन्य गुण का प्रकट न होना (वस्त्रे) वस्त्र में (गन्धाभावलिंगम्) गन्ध न होने की पहचान है।

A flower and a garment being brought into contact, the non-appearance in the garment of another quality is a mark of the non-existence of smell in the garment.

शंका—यदि गन्ध जलादि का स्वाभाविक-गुण नहीं तो किस का है? उत्तर—

व्यवस्थितः पृथिव्यां गन्धः 2-81

(पृथिव्यां) पृथिवी में (गन्धः) गन्ध (व्यवस्थितः) ठीक सिद्ध है।

Smell is established as the mark of earth.

सं० तेज में उष्णता का व्याख्यान करते हैं।

एतेनोष्णता व्याख्याता 3-82

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(एतेन) इस से (उष्णता) गरमी (व्याख्याता) व्याख्यान की गई है।

By this heat is explained.

सं० आगे इसको स्पष्ट करके कहते हैं।

तेजस उष्णता 4-83

(तेजसः) अग्नि तत्त्व की (उष्णता) गरमी है।

Heat is (the characteristic) of light.

सं० इसी तरह

अप्सु शीतता 5-84

(अप्सु) जलों में (शीतता) ठण्ढापन है।

Cold is (the characteristic) of water.

सं० काल की परीक्षा करते हुए उसकी सिद्धि में चिह्न बतलाते हैं।

अपरस्मिन्नपरं युगपच्चिरं क्षिप्रमिति काललिंगानि 6-85

(अपरस्मिन्, अपरं) अपर में अपर ज्ञान तथा पर में पर ज्ञान, (युगपत्) एक साथ, (चिरं) देरी से, (क्षिप्रं) जल्दी से, (इति) ये (काललिंगानि) काल के चिह्न हैं।

The notions of posteriority in relation to posteriority of simultaneity, of slowness and quickness are marks of the existence of time.

सं० काल को द्रव्य तथा नित्य कहा गया गया है।

तस्य द्रव्यत्वनित्यत्वे वायुना व्याख्याते 7-86

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(वायुना) वायु की तरह (तस्य) काल (द्रव्यत्वनित्यत्वे) द्रव्य तथा नित्य (व्याख्याते) कहा है।

Its substantiality and eternity are explained by air.

सं० काल को एक कथन करते हैं।

तत्त्वं भावेन 8-87

(भावेन) सत्ता की तरह (तत्त्वं) काल एक है।

Its unity is explained by existence.

सं० काल कार्यमात्र का कारण है।

नित्येष्वभावादनित्येषु भावात् कारणे कालाख्येति 9-88

(नित्येषु) नित्य पदार्थों में (अभावात्) न होने से और (अनित्येषु) अनित्यपदार्थों में (भावात्) होने से (कारणे) कारण में काल संज्ञा है (इति] इस प्रकार यह काल परीक्षा प्रकरण समाप्त हुआ।

The term time is applicable to a cause, inasmuch as it exists not in eternal and exists in not eternal things.

सं० दिशा का वर्णन करते हैं।

इत इदमिति यतस्तद्दिश्यं लिंगम् 10-89

(इतः) इस तरफ से (इदम्) यह है (इति) यह व्यवहार (यतः) जिस कारण से होता है, (ततः) वही (दिव्यं) दिशा का (लिंगम्) चिह्न है। अर्थात् इससे यह निकट है या दूर है ऐसा ज्ञान होता है वह दिशा है।

The mark pertaining to space is that whence the knowlede arises that one thing is remote or not remote from another.

सं० दिशा को द्रव्य तथा नित्य कथन करते हैं।

द्रव्यत्वनित्यत्वे वायुना व्याख्याते 11-90

(वायुना) वायु की तरह (द्रव्यत्व-नित्यत्वे) दिशा द्रव्य और नित्य (व्याख्याते) है। यह नित्यता व्यावहारिक है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

The substantiality and eternity of space are explained by air.

सं० दिशा को एक कथन करते हैं।

तत्त्वं भावेन 12-91

(भावेन) सत्ता की तरह (तत्त्वं) दिशा एक है।

Its unity is explained by existence.

शंका जब दिशा एक है तो फिर अनेक क्यों कहाती है ? उत्तर

कार्यविशेषेण नानात्वम् 13-92

(कार्यविशेण) कार्य विशेष से दिशा (नानात्वम्) अनेक हैं। अनेकत्व तो केवल औपाधिक है स्वाभाविक नहीं।

Its diversity is (caused to be conceived) by the difference of its effects.

सं० कार्य विशेष क्या है ? उत्तर

आदित्यसंयोगाद् भूतपूर्वाद् भविष्यतो भूताच्च प्राची 14-93

(आदित्यसंयोगाद्) सूर्य के संयोग से (भूतपूर्वाद्) जो पूर्वकाल में हुआ हो (भविष्यतः) जो आगे होने वाला है (च) और जो (भूतात्) वर्तमान में हो वह (प्राची) पूर्व दिशा कहलाती है।

Space is regarded as east because of a past, future or present conjunction of the sun.

सं० उसी प्रकार दक्षिण आदि दिशा का स्वरूप वर्णन करते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तथा दक्षिणा प्रतीच्युदीची च 15-94

(तथा) उसी प्रकार (दक्षिणा) दक्षिण (प्रतीची) पश्चिम (च) और (उदीची) उत्तर दिशा है।

So likewise space is regarded as south, west, and north.

सं० उपदिशाओं का वर्णन करते हैं।

एतेन दिगन्तरालानि व्याख्यातानि 16-95

(एतेन) इसी से (दिग्+अन्तरालानि) दिशाओं के कोने (व्याख्यातानि) कहे गये समझने चाहियें।

By this similiarly the intermediate divisions of space are explained.

सं० शब्द के विषय में अनेक प्रकार के संशय होते हैं इस कारण संशय के स्वरूप का वर्णन करते हैं।

सामान्यप्रत्यक्षाद् विशेषाप्रत्यक्षाद् विशेष-स्मृतेश्च संशयः 17-96

(सामान्यप्रत्यक्षाद्) सामान्य-साधारण धर्म के प्रत्यक्ष से (विशेषा-प्रत्यक्षात्) विशेष धर्म का प्रत्यक्ष न होने से (च) और (विशेषस्मृतेः) विशेष के स्मरण से (संशयः) संशय होता है।

Doubt arises from percaption of a general, non-perception of a particular, and remembrance of particuliarity.

सं० किस प्रकार का सामान्य ज्ञान संशय का कारण है? उत्तर

दृष्टं च दृष्टवत् 18-97

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(दृष्टम्) देखा हुआ (च) और (दृष्टवत्) देखे हुए के समान है।

That which is seen, and that which was formerly seen are causes of doubt.

सं० एक धर्मिविषयक संशय का उदाहरण देते हैं।

यथादृष्टमयथादृष्टत्वाच्च 19-98

(यथादृष्टं) जैसा पूर्व में देखा हुआ (अयथादृष्टत्वात्) वैसा न देखा हुआ होने से (च) भी संशय का कारण होता है।

नोट किसी मनुष्य को पूर्व काल में केश युक्त देखा था, उसी को दूसरे समय केश रहित देखा था, पश्चात् दूसरे काल में वस्त्र से ढके हुए मस्तक वाले उसी मनुष्य को देखकर यह केश सहित अथवा केश रहित है ऐसा जो संशय होता है वह एक ही मनुष्यरूपी धर्मी में होने से "एक धर्मिविषयक संशय" है।

That which is perceived in a certain way is a cause of doubt because it is at another time perceived not in that way.

सं० आभ्यन्तर संशय का वर्णन करते हैं।

विद्याविद्यातश्च संशयः 20-99

नोट—(विद्याविद्यातः) विद्या तथा अविद्या से (च) भी (संशयः) हो जाता है। यथार्थ ज्ञान का नाम विद्या तथा मिथ्या ज्ञान का नाम अविद्या है।

Doubt also arises from knowledge and want of knowledge.

सं० आकाश का लक्षण बतलाते हैं।

श्रोत्रग्रहणोयोऽर्थः स शब्दः 21-100

(यः) जो (अर्थः) विषय (श्रोत्रग्रहणः) श्रवणेन्द्रिय से ग्रहण किया जाये (सः) वह (शब्दः) शब्द है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

The object which is apprehended by hearing is sound.

सं० आगे शब्द में संशय दिखाते हैं।

तुल्यजातीयेष्वर्थान्तरभूतेषु विशेषस्योभयथा दृष्टत्वात् 22-101

(विशेषस्य) विशेष धर्म (तुल्यजातीयेषु) शब्द के तुल्य जाति वाले रूपादि गुणों और (अर्थान्तरभूतेषु) और दूसरे पदार्थ द्रव्य, तथा कर्मों में (उभयथा, दृष्टत्त्वात्) दोनों प्रकार से देखा जाता है इसलिये संशय होता है कि शब्द रूपादि गुणों में कोई गुण है, या पृथिव्यादि द्रव्यों में कोई द्रव्य है या उत्क्षेपणादि कर्मों में कोई कर्म है।

Since the particular class of sound is perceived both in things homogeneous and in things heterogeneous a doubt arises with respect to it.

सं० प्रथम उसका द्रव्य होना निषेध करते हैं।

एकद्रव्यत्वान्नद्रव्यम् 23-102

(एकद्रव्यत्वात्) एक द्रव्य वाला होने से (द्रव्यं न) शब्द द्रव्य नहीं है।

Since it inheres in one substance only, sound is not a substance.

सं० उस का कर्म होना निषेध करते हैं।

नापि कर्माचाक्षुषत्वात् 24-103

(चाक्षुषत्वात्) आंख का विषय न होने से (न) न (अपि) ही (कर्म) कर्म हो सकता है।

Now is it an action, for it is invisible.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सं० आशुविनाशत्व धर्म, शब्द और कर्म दोनों में देखा जाता है इस साधर्म्य से शब्द को कर्म माना जाना चाहिये ? समाधान

गुणस्य सतोऽपवर्गः कर्मभिः साधर्म्यम् 25-104

(गुणस्य) गुण के (सतः) होते हुए शब्द का (अपवर्गः) शीघ्र नाश होना (कर्मभिः) कर्मों से (साधर्म्यम्) समान धर्म है।

The transiency of sound which is a quality, is a property common also to actions.

सं० और

सतो लिंगाभावात् 26-105

(सतः) अविनाशी का (लिंगाभावात्) लिंग न होने से शब्द को नित्य नहीं मान सकते।

Since there is no mark of (sound as) existing (before utterance, it does not so exist)

सं० तथा

नित्यवैधर्म्यात् 27-106

नित्य से विरुद्ध धर्म वाला होने के कारण भी वह शब्द नित्य नहीं।

Since sound differs from the eternal it does not exist previously to utterance.

सं० इस वैधर्म्य से शब्द अनित्य है।

अनित्यश्चायं कारणतः 28-107

(अयं) यह शब्द (कारणतः) कारण से (च) भी (अनित्यः) अनित्य है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

नोट जैसे घट अनित्य है कारण वाला होने से ।

It is not eternal, for it has a cause.

सं० उस शब्द की अनित्यता कैसे सिद्ध होगी ? उत्तर

न चासिद्धं विकारात् 29-108

(विकारात्) विकार से (असिद्धं) शब्द का कारण वाला होना असिद्ध (च) भी (न) नहीं ।

नोट विकार होने से शब्द असिद्ध नहीं है ।

This is not unproved by change.

सं० शंका=कारण द्वारा शब्द की अभिव्यक्ति होती है उत्पत्ति नहीं, इसलिये वह कारण वाला होने पर भी अनित्य नहीं हो सकता ? उत्तर—

अभिव्यक्तौ दोषात् 30-109

(अभिव्यक्तौ) अभिव्यक्ति में (दोषात्) दोष होने से उक्त अर्थ की सिद्धि नहीं हो सकती ।

नोट शब्द अभिव्यक्त नहीं होता, किन्तु उत्पन्न होता है । अभिव्यक्ति=प्रकट होना ।

Since in its manifestation there would be a defect (sound is not manifested,)

सं० शब्द की उत्पत्ति का कारण बतलाते हैं ।

संयोगाद् विभागाच्छब्दाच्च शब्दनिष्पत्तिः 31-110

(संयोगात्) संयोग से (विभागात्) विभाग से (च) और (शब्दात्) शब्द से (शब्दनिष्पत्तिः) शब्द उत्पन्न होता है ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

नोट भेरी दण्डादि संयोग, बांस की ग्रन्थी आदि का विभाग तथा वीचीतरङ्गन्याय अथवा कदम्बगोलकन्याय द्वारा उत्पन्न हुआ शब्द । यह तीनों शब्द की उत्पत्ति के कारण हैं ।

Sound is produced by conjunction, disjunction and (other) sound.

सं० शब्द के अनित्य होने में हेतु बतलाते हैं ।

लिंगाच्चानित्यः शब्दः 32-111

(च) और (लिंगात्) उत्पत्ति रूप लिंग से (शब्दः) शब्द (अनित्यः) अनित्य है ।

नोट—जैसे मृत्तिका आदि कारणों से उत्पन्न होने के कारण घट आदि अनित्य हैं वैसे ही संयोगादि कारणों से उत्पन्न होने के कारण शब्द भी अनित्य है ।

Sound is not eternal, because of its mark.

सं० आगे पूर्व पक्ष करते हैं ।

द्वयोस्तु प्रवृत्त्योरभावात् 33-112

(द्वयोः) दोनों (तु) ही (प्रवृत्त्योः) प्रवृत्तियों के (अभावात्) अभाव से शब्द अनित्य नहीं ।

नोट—यहां 'तु' शब्द पूर्वपक्ष के अभिप्राय से आया है ।

गुरु और शिष्य के पठन-पाठन में प्रवृत्ति के पाये जाने से शब्द अनित्य नहीं किन्तु नित्य है । यह मीमांसकों का पूर्व पक्ष है ।

But (were sound quickly destructible) the activities of two would not exist.

सं० अन्य हेतु से भी शब्द अनित्य जान पड़ता है ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्रथमाशब्दात् 34-113

प्रथमा शब्द से=शब्द को नित्य मानना युक्त है।

From the word 'first' it follows that sound is eternal,

नोट—ऋग्वेद 3-27-1 में एकादश ऋचायें 'सामिधेनी' संज्ञक हैं, उनमें से प्रथमा (पहली) ऋचा को तीन बार पढ़ा जाता है यदि शब्द अनित्य होता तो एक ऋचा तीन बार कैसे पढ़ी जाती क्योंकि एक बार पढ़ी हुई अगले क्षण में शब्द की अनित्यता से नष्ट हो जाती। इससे सिद्ध होता है कि शब्द अनित्य नहीं।

From the word 'first' it follows that sound is eternal.

सं० इसी पक्ष में तीसरा हेतु देते हैं।

सम्प्रतिपत्तिभावाच्च 35-114

(च) और (सम्प्रतिपत्तिभावात्) ठीक ठीक पहचान होने से भी शब्द को नित्य मानना युक्त है।

नोट—राम वही श्लोक पढ़ता हैं, जो कृष्ण ने पढ़ा था।

सम्प्रतिपत्ति=प्रत्यभिज्ञा=ठीक ठीक पहचान

Also from the existence of recognition.

सं० आगे उत्तर पक्ष कहते हैं और तीनों पूर्व पक्षस्थ हेतुओं का खण्डन करते हैं।

सन्दिग्धा सति बहुत्वे 36-115

(बहुत्वे) बहुत (सति) होने पर भी (संदिग्धाः) संदिग्ध हैं।

नोट—पूर्व पक्ष में दिये गये तीनों हेतु संदिग्ध हैं इसलिये उनसे शब्द की अनित्यता नहीं सिद्ध होती।

A plurality existing these arguments are doubtful.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सं० शंका=शब्द के नित्य पक्ष में पचास वर्ण हैं, चौदह स्वर हैं, इस प्रकार संख्या का नियम नहीं हो सकता ? उत्तर—

संख्याभावः सामान्यतः 37-116

(संख्याभावः) संख्या का होना (सामान्यतः) जाति के अभिप्राय से है। अर्थात् सामान्य से है।

The existence (in sound) of number, (results) from generality.

सं० तृतीय अध्याय में आत्मा तथा मन की परीक्षा का विस्तारपूर्वक निरूपण करने के लिये प्रथम आह्निका का आरम्भ करते हुए आत्मा की सिद्धि को बतलाते हैं।

तृतीय अध्याय प्रथम आह्निक

प्रसिद्धा इन्द्रियार्थाः 1-117

(इन्द्रियार्थाः) इन्द्रियों के विषय (प्रसिद्धाः) प्रसिद्ध हैं।

The objects of sense are universally known.

सं० इन्द्रियार्थ प्रसिद्धि को आत्मा की सिद्धि में हेतु कथन करते हैं।

इन्द्रियार्थप्रसिद्धिरिन्द्रियार्थेभ्योऽर्थान्तरस्य हेतुः 2-118

(इन्द्रियार्थप्रसिद्धिः) इन्द्रिय तथा विषयों की प्रसिद्धि (इन्द्रियार्थेभ्यः) इन्द्रिय और अर्थ उन दोनों से (अर्थान्तरस्य) अन्य अर्थ यानी आत्मा की सिद्धि में (हेतुः) हेतु है।

नोट—इससे यह भी प्रमाणित होता है कि कोई अन्य पदार्थ है जो नाक से सूंघकर इस विषय का ग्रहण करता है, वह आत्मा है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

The universal cognition of the objects of sense is an argument for the existence of another object than the objects of sense.

सं० आत्मा के स्थान पर शरीर को क्यों न मान लें ? उत्तर

सोऽनपदेशः 3-119

(सः) वह हेतु (अनपदेशः) अहेतु है।

That is an invalid argument which affirms that sensible cognition is an attribute either of the body or of the senses.

सं० शंका रूपादि की तरह ज्ञान भी शरीर में समवेत है आत्मा में नहीं इसलिये उक्त हेतु का व्यभिचार नहीं ? उत्तर—

कारणाज्ञानात् 4-120

शरीर के कारण सूक्ष्म भूतों में ज्ञान का अभाव होने से.

Because there is unconsciousness in the causes.

सं० यदि कहो कि हम तो पंच भूतों में ज्ञान मानते हैं, तद्भिन्न आत्मा को क्यों मानें ? तो उत्तर

कार्येषु ज्ञानात् 5-121

(कार्येषु) घट पटादि पंचभूत कार्यों में (ज्ञानात्) ज्ञान होना चाहिये था।

Because there would be consciousness in the effects.

सं० शंका घट पट आदि पदार्थों में भी ज्ञान है परन्तु अनुद्भूत होने के कारण उसकी उपलब्धि नहीं होती ? उत्तर

अज्ञानाच्च 6-122

(अज्ञानात्) अज्ञान से (च) भी

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

नोट—सूक्ष्मभूत तथा उनके कार्य घट पट आदि में किसी प्रमाण से ज्ञान सिद्ध नहीं, यदि सूक्ष्म भूत तथा उनके कार्य घट पट आदि पदार्थों में ज्ञान होता तो रूपादि की तरह अवश्य प्रतीत होता परन्तु वह किसी प्रमाण से प्रतीत नहीं होता, और बिना किसी प्रमाण के मानना ठीक नहीं, इसलिये घट पट आदि पदार्थों में उद्भूत अथवा अनुद्भूत किसी प्रकार से ज्ञान नहीं।

And because it is not known (that any minute degree of consciouness exists in products of matter.)

सं० आत्मा और ज्ञान में तादात्म्य सम्बन्ध नहीं ? तो उत्तर

अन्यदेव हेतुरित्यनपदेशः 7-123

(हेतुः) हेतु (अन्यत्) साध्य से भिन्न (एव) ही होता है (इति) इससे (अनपदेशः) यह हेतु नहीं।

The means of proof is something else than has been supposed,'this is not a valid argument.

सं० शंका = यदि साध्य से भिन्न ही हेतु माने तो 'धूम' वह्नि सिद्धि की तरह रासभ-सिद्धि का भी लिङ्ग होना चाहिये ? उत्तर

अर्थान्तरं ह्यर्थान्तरस्यानपदेशः 8-124

(अर्थान्तम्) सर्वथा साध्य से भिन्न पदार्थ (हि) भी (अर्थान्तरस्य) साध्य की सिद्धि में (अनपदेशः) हेतु नहीं होता।

One thing cannot be an argument (of the existence of another thing with which it is wholly unconnected.)

सं० हेतु के भेद वर्णन करते हैं।

संयोगिसमवय्येकार्थसमवायिविरोधि च 9-125

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हेतु चार प्रकार का होता है। (संयोगि) संयोग वाला (समवायि) नित्य सम्बन्ध वाला (एकार्थसमवायि) एक अर्थ में समवाय सम्बन्ध से रहने वाला (च) और (विरोधि) विरोध रखने वाला।

The conjunct, the inherent, the co-inherent in one thing, and the contradictory (are means of proof.)

सं० आगे स्वयं सूत्रकार उदाहरण देते हैं, एकार्थसमवायी का उदाहरण—

कार्यं कार्यान्तरस्य 10-126

(कार्य) एक कार्य (कार्यान्तिरस्य) अन्य कार्य का लिंग होता है। एक कार्य 'रूप' है जो अन्य कार्य 'स्पर्श' का एकार्थसमवायी लिंग है।

One effect is a mark of the existence of another effect.

सं० विरोधि लिङ्ग का उदाहरण।

विरोध्यभूतं भूतस्य 11-127

(अभूतम्) अर्वत्तमान (वर्षा) (भूतस्य) वर्तमान वर्षा का (विरोधी) विरोधी लिंग है। अर्थात् वर्षा का अभाव, हुई वर्षा का विरोधी लिंग है।

A non-existent contradictory is a mark of the existent.

सं० इसी प्रकार i

भूतम भूतस्य 12-128

(भूतम्) जो है, वह (अभूतस्य) न हुए का विरोधि लिंग है अर्थात वर्तमान वर्षा, न वर्तमान वर्षा का लिंग हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

That which has been is a mark of that which has not been.

सं० तथा—

भूतो भूतस्य 13-129

(भूतः) जो है, वह (अभूतस्य) हुवे का विरोधी लिंग है। वर्तमान फुंकारता हुआ सर्प, वर्तमान झाड़ी के नीचे स्थित नकुल (ichneumon) का लिंग है। यह भी विरोधी लिंग है।

नोट शेष संयोगी लिंग का उदाहरण जैसे विलक्षण गति वाले रथ को देखकर उससे तत् संयुक्त चतुर सार्थी का अनुमान करना। समवायी लिंग जैसे स्पर्श से वायु का, रूप से तेज का, गन्ध से पृथ्वी का पहचानना लिंग है। इसी प्रकार लिंगी जीवात्मा का देह इन्द्रिय संघात से पृथक् होना सिद्ध है। षष्ठी विभक्ति के व्यपदेश से भी आत्मा देहादिसे भिन्न है। देवदत्त का हाथ, इससे पाया जाता है कि देवदत्त नाम वाले आत्मा से हाथ भिन्न है। देवदत्त का घोड़ा।

That which has been is a mark of something repugnant which has been.

सं० अब लिंग ज्ञान का सार्वभौम उपाय कथन करते है।

प्रसिद्धिपूर्वकत्वादपदेशस्य 14-130

(अपदेशस्य) लिंग का ज्ञान (प्रसिद्धिपर्वकत्वात्) प्रसिद्धिपूर्वक होने से अर्थात् व्याप्तिज्ञान के अधीन है।

(These forms of inference are valid) because the mark is preceded by knowledge (of invariable concomitance.)

सं० हेतु में दोष होने से वह यथार्थ हेतु नहीं रहता हेत्वाभास कहलाता है। वह दोष क्या है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अप्रसिद्धोऽनपदेशः 15-131

(अप्रसिद्धः) जिसमें व्याप्ति न पाई जावे, वह (अनपदेशः) हेत्वाभास कहलाता है।

Fallacious arguments are the unobserved.

सं० क्या वैशेषिक में एक ही हेत्वाभास ? नहीं, किन्तु।

असन् संदिग्धश्चाऽनपदेशः 16-132

(असन्) असिद्ध (च) और (संदिग्धः) सन्देह युक्त (अनपदेशः) हेत्वाभास होता है। (हेत्वाभास इस शास्त्र में दो प्रकार के हैं)।

The non-existent and the dubious.

सं० विरुद्ध तथा संदिग्ध हेत्वाभास का उदाहरण देते हैं।

यस्माद् विषाणी तस्मादश्वः 17-133

(यस्माद्) क्योंकि (विषाणी) सींगों वाला है (तस्मात्) इस कारण (अश्वः) घोड़ा है। यह विरुद्ध हेत्वाभारु का उदाहरण है। क्योंकि जिस जिसके सींग होंगे वह वह घोड़ा कभी नहीं होता।

Because this has horns, therefore it is a horse.

सं० अनैकान्तिक का उदाहरण देते हैं।

यस्माद् विषाणी तस्माद्गौरित्यनैकान्तिकस्योदाहरणम् 18-134

(यस्मात्) क्योंकि (विषाणी) सींग वाला है (तस्मात्) इससे (गौः) है (इति) यह (अनैकान्तिकस्य) अनैकान्तिक हेत्वाभास का (उदाहरणम्) उदाहरण है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

नोट केवल गौ के सींग नहीं देखे जाते किन्तु भैंसे बकरी आदि के भी देखे जाते हैं, इस लिये सींग वाला होना गौ होने में हेतु तो है परन्तु असाधारण हेतु नहीं क्योंकि गौ के अतिरिक्त भैंसे बकरे आदि में पाये जाते हैं इसलिये अतिव्याप्ति वाला है ।

And because it has horns, therefore it is a cow is an example of the fallacy of plurality of consequents.

सं० प्रकारान्तर से आत्मा के अस्तित्व को सिद्ध करते हैं।

आत्मेन्द्रियार्थसन्निकर्षाद्यन्निष्पद्यते तदन्यत्
19-135

(आत्मेन्द्रियार्थसन्निकर्षात्) आत्मा इन्द्रिय और अर्थ=विषय के समीप होने से (यत्) जो (निष्पद्यते) सिद्ध होता है (तत्) वह (अन्यत्) अन्य है । यहाँ आत्मा का अर्थ है मन ।

That which is effectuated from the connection of soul with objects of sense is other than a fallacious orgument

सं० अन्य शरीर वर्त्ति आत्मा की सिद्धि में लिंग कथन करते हैं।

प्रवृत्तिनिवृत्ती च प्रत्यगात्मनि दृष्टे परत्र लिंगम् 20-136

(प्रवृत्तिनिवृत्ती च) प्रवृत्ति और निवृत्ति (प्रत्यगात्मनि) अपने-अपने आत्मा में (दृष्टे) देखी जाती है, (परत्र) पराये में (लिंगम्) वही लिंग है ।

Activity and inactivity observed in one's own soul are the mark of the existence of other souls.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तृतीय अध्याय द्वितीय आह्निक

सं० आत्मा की पहचान में जिस प्रकार प्रथम आह्निक में इन्द्रियार्थप्रसिद्धि को लिंग कहा गया है, उसी प्रकार इस द्वितीय आह्निक में मन की गति को आत्मा का लिंग बतावेंगे. इसलिये, प्रथम मन की परीक्षा आरम्भ करते हैं और उद्देश्य के क्रम को छोड़ कर भी आवश्यकतावश मन की परीक्षा करते हैं।

आत्मेन्द्रियार्थसन्निकर्षे ज्ञानस्य भावोऽभावश्च मनसो लिंगम् 1-137

(आत्मेन्द्रियार्थसन्निकर्षे) आत्मा, इन्द्रिय, और विषय, की समीपता में भी (ज्ञानस्य) ज्ञान का (भावः) होना (च) और (अभावः) न होना (मनसः) मन का (लिंग) लिंग है। एक साथ अनेक ज्ञानों का उत्पन्न न होना मन का लिंग है।

Existence and non-existence of knowledge on contact of soul with the objects of sense, are the mark of the existence of an internal organ.

सं० मन को द्रव्य तथा नित्य कथन करते हैं।

तस्य द्रव्यत्वनित्वत्वे वायुना व्याख्याते 2-138

(तस्य) उस मन के (द्रव्यत्वनित्वत्वे) द्रव्यत्व और नित्यत्व (वायुना) वायु से (व्याख्याते) स्पष्ट हो चुका।

Its substantiality and eternitv are explained by air.

सं० शंका, मन प्रति शरीर में एक है या अनेक ? उत्तर

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्रयत्नायौगपद्याज्ज्ञानायौगपद्याच्चैकम् 3-139

(प्रयत्न + अयौगपद्यात्) प्रयत्न के एक साथ न होने से (च) और (ज्ञान + अयौगपद्यात्) ज्ञान के एक साथ न होने से (एकम्) मन एक है।

Because of non-simultaneity of volitions, and non-simultaneity of cognitions it is one (in each body.)

सं० अब आत्मा की परीक्षा करते हुए उसके साधक लिंगों का वर्णन करते हैं।

प्राणापाननिमेषोन्मेषजीवनमनोगतीन्द्रियान्तर-विकाराः सुखदुःखेच्छाद्वेषप्रयत्नाश्चात्मनो लिंगानि 4-140

प्राण-अपान-निमेष-उनमेष जीवन-मनोगति और इन्द्रियान्तरविकार तथा, सुख-दुःख-इच्छा-द्वेष और प्रयत्न यह (आत्मनः) आत्मा के (लिंगानि) लिंग हैं।

The ascending and descending vital airs, opening and closing of the eyes, life, motions of the internal organ, affections of the other organs of sense, pleasure and pain, desire and aversion, and volition, are marks of the existence of soul.

सं० आत्मा को द्रव्य तथा नित्य कथन करते हैं।

तस्य द्रव्यत्वनित्यत्वे वायुना व्याख्याते 5-14

(वायुना) वायु की तरह (तस्य) आत्मा (द्रव्यत्वनित्यत्वे) द्रव्य तथा नित्य (व्याख्याते) है।

Its substantiality and eternity are explained by air.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सं० आत्मा की सिद्धि में दृष्टलिंग का निषेध करते हैं।

यज्ञदत्त इति सन्निकर्षे प्रत्यक्षाभावाद् दृष्टं लिंगं न विद्यते 6-142

(दृष्टं लिंगं) आत्मसिद्ध में दृष्टलिंग (न) नहीं (विद्यते) हो सकता (सन्निकर्षे) समीप होने पर भी (यज्ञदत्तः इति) यज्ञदत्त है ऐसा (प्रत्यक्षाभावात्) प्रत्यक्ष न होने से (दृष्टं) दृष्ट (लिंगम्) लिंग (न) नहीं (विद्यते) होता है।

In the contact of the organs of sense and the object from which the Judgmcnt. This is यज्ञदत्त is derived, there being no perception, there exists no visible mark.

सं० अब आत्मा की सिद्धि कथन करते।

सामान्यतोदृष्टाच्चाविशेषः 7-143

(सामान्यतोदृष्टात्) सामान्यतोदृष्ट अनुमान से (च) भी और ज्ञानादि गुणों से (अविशेषः) विशेष नहीं कह सकते।

Moreover, from that which is observed generally there result no distinction.

सं० उसकी आत्मसंज्ञा में क्या प्रमाण ?

तस्मादागमिकः 8-144

(तस्मात्) इस कारण (आगमिकः) उसकी आत्म संज्ञा वेद में कही है।

Therefore the soul is proved to exist by revelation.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सं० अब पृथिवी आदि आठ द्रव्यों में आत्मा के अन्तरभाव का निषेध कथन करते है।

अहमितिशब्दस्य व्यतिरेकान्नागमिकम् 9-145

(आगमिकं) वेद सिद्ध आत्मा का (न) पृथिवी आदि आठ द्रव्यों में अन्तरभाव नहीं हो सकता, क्योंकि (अहं इति) मैं इस (शब्दस्य) शब्द के (व्यतिरेकात्) भिन्न होने से।

नोट—इस सूत्र में अनुमान द्वारा आत्मा की सिद्धि की है।

Existence of the soul being the conditio sine qua non of the use of the word I, is not evidenced only by revelation.

सं० आत्मा के प्रत्यक्ष के विषय में कहते हैं।

यदि दृष्टमन्वक्षमहं देवदत्तोऽहं यज्ञदत्त इति 10-146

(यदि) जो (अहं) मैं (देवदत्त):) देवदत्त हूं (यज्ञदत्त:) मैं यज्ञदत्त हूं (इति) ऐसा (अन्वक्षं) प्रत्यक्ष (दृष्टं) देखा जाता है।

नोट—हस्ती के प्रत्यक्ष देखने पर उसके चीत्कार रूप शब्द के अनुमान की कोई आवश्यकता नहीं। न्याय वार्त्तिक

If the cognition I am देवदत्त, I am यज्ञदत्त, is a visual presentation (what need of any inference) ?

सं० अनुमान के लिये किया गया प्रयास व्यर्थ नहीं, क्योंकि।

दृष्ट आत्मनि लिंगे एक एव दृढ़त्वात् प्रत्यक्षवत् प्रत्यय: 11-147

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(आत्मनि) आत्मा के (लिंगे) लिंग के (दृष्टे) दृष्टहोने पर तो (दृढ़त्वात्) दृढ़ होने से (एकः) एक (एव) ही (प्रत्ययः) प्रतीति होती (प्रत्यक्षवत्) जैसा कि प्रत्यक्ष में होती है।

नोट—प्रत्यक्ष से जाने हुए विषय का भी (तर्करसिकाः) नैयायक अनुमान से जानने की इच्छा करते हैं।

नोट—सूत्र के 'आत्मनि' पद में षष्टी के स्थान पर सप्तमी आई है।

If a mark of the existence of the soul were seen, there could be but one assurance, for it would be as evident as a percept.

सं० देह को आत्मा माना जाये, अथवा देहातिरिक्त को ?

देवदत्तो गच्छति यज्ञदत्तो गच्छतीत्युपचाराच्छरीरे प्रत्ययः 12-148

(देवदत्तः) देवदत्त (गच्छति) जाता है (यज्ञदत्तः) यज्ञदत्त (गच्छति) जाता है, (इति) इस प्रकार के (उपचारात्) व्यवहार से (शरीरे) शरीर में (प्रत्ययः) प्रतीति है। यह ऐसा स्पष्ट होता है।

नोट—उपचारात्=लक्षणा शक्ति से।

The cognition देवदत्त goes, यज्ञदत्त gose, is a applied tropically to the body.

सं० अब उक्त अर्थ में शंका करते हैं।

सन्दिग्धस्तूपचारः 13-149

(तु) तु शब्द पूर्व के अभिप्राय से आया है (उपचारः) उक्त व्यवहार में (सन्दिग्धः) संदेह है।

नोट—आत्मा और शरीर दोनों के लिये (अहम्) मैं पद का प्रयोग लोक में सिद्ध है, तब सन्देह होता कि किस के लिये होना चाहिये। यह पूर्व पक्ष है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

The secondary application, however, is doubted.

सं० शंका =(अहम्) मैं पद की प्रतीति दोनों में होती है तो मुख्य किसमें ? उत्तर

अहमिति प्रत्यगात्मनि भावात्परत्राभावादर्थान्तर-प्रत्यक्षः 14-150

(अहम्) में देवदत्त हूं (इति) यह प्रतीति (प्रत्यगात्मनि) अपने आत्मा में (भावात्) होती है (परत्र) दूसरे के आत्मा में (अभावात्) नहीं, इसलिये (अर्थान्तर प्रत्यक्षः) शरीर से भिन्न अर्थ में है।

The cognition of the Ego is a perception of a distinctive entity, since it applies to self reflective-soul, and not to aught else.

सं० आगे पूर्व पक्षी अपने पक्ष का समाधान करता है कि—

देवदत्तोगच्छतीत्युपचारादभिमानात्तावच्छरीर प्रत्यक्षोऽहंकारः 15-151

(देवदत्तः) देवदत्त (गच्छति) जाता है (इति) ऐसी (उपचारात्) बोल-चाल से (अभिमानात्) और अभिमान से (तावत्) तथा (अहंकारः) "मैं", ऐसा कथन (शरीर प्रत्यक्षः) शरीर विषयक प्रत्यक्ष है।

From the secondary applicatlon, through self-consciousness of the expression देवदत्त goes, it follows that self-consciousness is presentative of the body.

सं० फिर शंका करते हैं कि—

संदिग्धस्तूपचारः 16-152

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(उपचारः) बोलचाल, या लक्षणा, या उपचार, (तु) तो (संदिग्धः) सन्देह युक्त ही रहा ।

The secondary application however, is doubted.

सं० आगे उक्त शंका का परिहार करते हैं कि—

न तु, शरीरविशेषाद् यज्ञदत्तविष्णुमित्रयोर्ज्ञानं विषयः 17-153

(शरीरविशेषाद्) शरीर के भेद से (यज्ञदत्तविष्णुमित्रयोः) यज्ञदत्त और विष्णुमित्र का पृथक् पृथक् (ज्ञानं) ज्ञान (विषयः) वक्ता का विषय है, (न तु) तब सन्देह नहीं रहता ।

But the knowledge of यज्ञदत्त and विष्णुमित्र does not, in consequence of the difference of their bodies. become an object.

सं० अब केवल शब्द प्रमाण से आत्म सिद्धि का निषेध कथन करते है .

अहमिति मुख्ययोग्याभ्यां शब्दवद् व्यतिरेकाव्यभिचाराद् विशेषसिद्धेर्नागमिकः 18-154

(मुख्ययोग्याभ्यां)मुख्य और योग्यरूप (अहं इति) अहं प्रत्यय से (विशेषसिद्धेः) आत्मरूप द्रव्यविशेष की सिद्धि होने से (आगमिकः) वह केवल शब्द प्रमाण सिद्ध (न) नहीं, क्योंकि (शब्दवत्) शब्द की तरह (व्यतिरेकाव्यभिचाराद्) अहं प्रत्यय के अभाव का भी अव्यभिचार-नियम है ।

नोट—वह आत्मा केवल शब्द प्रमाण सिद्ध नहीं किन्तु अनुमान और शब्द दोनों से सिद्ध है।

The knowledge of the Ego, being individually established, like sound as a conditio sine qua non neither

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

too narrowly nor too widely affirmed, by its predominant and sensible attributes, does not depend upon revelation.

सं० आत्मा की परीक्षा करके, अब उसके नानात्व की परीक्षा करते हुए प्रथम पूर्वपक्ष करते हैं।

सुखदुःखज्ञाननिष्पत्त्यविशेषादैकात्म्यम् 19-155

(ऐकात्म्यम्) आत्मा एक है, क्योंकि (सुखदुःखज्ञाननिष्पत्यविशेषात्) प्रत्येक शरीर में सुख, दुःख, तथा ज्ञान की उत्पत्ति समान होती है।

Because of the indifference of the origin of pleasure, pain and knowledge, soul is one.

सं० आगे सिद्धान्त सूत्र में उत्तर देते हैं।

व्यवस्थातो नाना 20-156

(व्यवस्थातः) सुख दुःख की व्यवस्था होने से (नाना) आत्मा अनेक हैं।

नोट—प्रत्येक आत्मा में सुख दुःख आदि की भिन्न उपलब्धि का नाम 'व्यवस्था' है।

Because of its circumstances soul is manifold.

सं० यदि कोई कहे कि केवल युक्ति से आत्मा का अनेक होना सिद्ध किया, शास्त्र से नहीं, तो उत्तर—

शास्त्रसामर्थ्याच्च 21-157

(शास्त्रसामर्थ्यात्) शास्त्र प्रमाण से (च) भी आत्मा अनेक हैं।

And on the authority of the शास्त्र।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

चतुर्थ अध्याय प्रथम आह्निक

कणाद मुनि चतुर्थ अध्याय का आरम्भ करते हुए मूल कारण प्रकृति का स्वरूप वर्णन करते हैं।

सदकारणवन्नित्यम् 1-158

(सत्) जो विद्यमान हो (अकारणवत्) कारण से रहित हो (नित्यम्) वह नित्य है। वह मूलप्रकृति तथा परमाणु है।

The eternal is existent and uncaused.

सं० प्रकृति की सिद्धि में लिंग कथन करते हैं।

तस्य कार्यं लिंगम् 2-159

(तस्य) उस प्रकृति या परमाणु का (कार्यं) घटादि कार्य या जगत् रूप कार्य (लिंगम्) साधक है।

नोट—प्रशस्तपाद के भाष्य में कहा है वह पृथिवी नित्य तथा अनित्य भी है अर्थात् नित्य परमाणुरूप और अनित्य कार्यरूप।

The effect thereof is the mark of its existence.

सं० कार्य को कारण का लिंग क्यों माना जाये ? उत्तर

कारणभावात् कार्यभावः 3-160

(कारणभावात्) कारण के होने से (कार्यभावः) कार्य होता है।

From existence of the cause is existence of the effect.

सं० संपूर्ण पदार्थों को अनित्य ही मानने वालों का मत खण्डन करने के लिये सूत्रकार कहते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अनित्य इति विशेषत: प्रतिषेधभाव: 4-161

(अनित्य:) पदार्थ नित्य नहीं (इति) इस प्रकार (विशेषत:) नित्य का (प्रतिषेधभाव:) निषेध ही उसकी सिद्धि में प्रमाण है।

The negation Non-eternal is of the particular.

सं० सूत्रकार ने बताया, ऐसा न समझना।

अविद्या 5-162

(परमाणु को अनित्य सिद्ध करने वाली सारी अनुमितियां) (अविद्या) भ्रम हैं।

The suppcsition that atoms are non-eteronal is) nescience.

सं० अब मूल कारण प्रकृति के प्रत्यक्ष का निषेध करते हैं।

महत्यनेकद्रव्यवत्त्वाद् रूपाच्चोपलब्धि: 6-168

(महति) स्थूल वस्तु में या महत्तत्त्व में (अनेकद्रव्यवत्त्वात्) अनेक द्रव्य वाला होने से (च) और (रूपात्) रूप से (उपलब्धि:) प्रत्यक्ष होता है।

Perception is of the great, in consequence of its containing substances more than one, and in cansequence of colour.

सं० अनेक द्रव्यों वाला होने पर भी वायु का प्रत्यक्ष क्यों नहीं होता। उत्तर

सत्यपि द्रव्यत्वे महत्त्वे रूपसंस्काराभावाद् वायोरनुपलब्धि: 7-164

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(वायोः) वायु का (अनुपलब्धिः) प्रत्यक्ष न होना (द्रव्यत्वे) द्रव्य होने (महत्त्वे) महान् होने (सति) पर (अपि) भी (रूपसंस्काराभावाद्) रूप सम्बन्ध के न होने से है।

The non-perception of air, though there be therein substantiality and magnitude, is in consequence of the non-existence of the impression of colour.

सं० रूप के प्रत्यक्ष होने की स्थिति को समझाते हैं।

अनेकद्रव्यसमवायाद् रूपविशेषाच्च रूपोपलब्धिः 8-165

(अनेकद्रव्यसमवायाद्) अनेक द्रव्यों के साथ सम्बन्ध होने से (च) और (रूपविशेषात्) रूप के विशेष से (रूपोपलब्धिः) रूप की उपलब्धि-प्राप्ति होती है।

Perception of colour is cansequent on co-inhesion of substances more than one, and on particularity of colour.

सं० उक्त नियम का रस आदि गुणों में अतिदेश=समानता कथन करते हैं।

तेन रसगन्धस्पर्शेषु ज्ञानं व्याख्यातम् 9-166

(तेन) उसी प्रकार से (रसगन्धस्पर्शेषु) रस, गन्ध, और स्पर्श, इन तीनों में भी (ज्ञानम्) ज्ञान को (व्याख्यातम्) कहा गया समझना चाहिये।

By this is explained cognition in the case of taste, smell, and touch.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सं० शंका=पाषाण में गन्ध का प्रत्यक्ष न होने से उक्त नियम में दोष आ जायेगा ?
उत्तर—

तस्याभावादव्यभिचारः 10-167

(तस्य) उस गन्ध विशेष के (अभावात्) न होने से (अव्यभिचारः) उक्त नियम का दोष नहीं आयेगा।

नोट—उद्भूत गन्ध का नाम **'गन्धविशेष'** है। पाषाणादि में गन्ध तो है परन्तु छिपा हुआ होने से उपलब्ध नहीं होता। आर्चाय प्रशस्तपाद ने **'गुरुत्व'** गुण का प्रत्यक्ष होना नहीं माना। परन्तु न्याय लीलावतीकार वल्लभाचार्य ने गुरुत्व का प्रत्यक्ष चक्षु से न मान त्वक् इन्द्रिय से स्वीकार किया है।

Because of the non-existence of this, there is no deviation.

सं० दो इन्द्रियों से प्रत्यक्ष होने योग्य गुणों का वर्णन करते हैं।

संख्याः परिमाणानि पृथक्त्वं संयोगविभागौ परत्वापरत्वे कर्म च रूपिद्रव्यसमवायाच्चाक्षुषाणि 11-168

(संख्याः) गिनती (परिमाणानि) लम्बाई, चौड़ाई, गोलाई आदि (पृथक्त्वं) किन्हीं वस्तुओं का अलग अलग होना (संयोगाविभागौ) संयोग और विभाग (परत्वापरत्वे) दैशिक तथा कालिक परत्व और अपरत्व (कर्म) क्रिया गति आदि (च) और स्नेह, द्रवता और वेग ये सब भी (रूपिद्रव्यसमवायात्) रूप वाले द्रव्यों के साथ समवाय सम्बन्ध होने से (चाक्षुषाणि) आंख से उपलब्ध होने वाले हैं।

नोट—सूत्र में 'चाक्षुष' पद से स्पर्श का भी ग्रहण करना। यह दो इन्द्रियग्राह्य पदार्थ हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

Numbers, extensions, separatieness, conjunction and disjunction, prioity and posteriority and action, as inhering in coloured substance, are visible.

सं० शंका—किस द्रव्य में संख्यादि गुणों का प्रत्यक्ष नहीं होता ?

अरूपिष्वचाक्षुषाणि 12-169

(अरूपिषु) रूप रहित द्रव्यों में (अचाक्षुषाणि) चक्षु एवं त्वक् से ग्रहण नहीं होता संख्यादि निर्दिष्ट पदार्थों का ।

In uncooured substances they are mperceptible to sight.

सं० उक्त नियम का 'गुणत्व' आदि जातियों में अतिदेश कथन करते हैं ।

एतेन गुणत्वे भावे च सर्वेन्द्रियं ज्ञानं व्याख्यातम् 13-170

(एतेन) इसी से (गुणत्वे) गुणजाति में (च) और (भावे) सत्ता जाति में (सर्वेन्द्रियं) सब इन्द्रियों से होने वाला (ज्ञानं) प्रत्यक्ष ज्ञान (व्याख्यातम्) कहा गया समझना चाहिये ।

By this it is explained that knowledge is regard to quality and existence is of all the senses.

चतुर्थ अध्याय द्वितीय आह्निक

सं० पृथिवी आदि के शरीरादि तीन भेदों का निरूपण करते हैं ।

तत् पुनः पृथिव्यादिकार्य्यद्रव्यं त्रिविधं शरीरेन्द्रियविषय संज्ञकम् 1-171

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(तत्) वह (पृथिव्यादिकार्य्यद्रव्यं) पृथिवी आदि कार्य्य द्रव्य (पुनः) फिर (शरीरेन्द्रियविषयसंज्ञकम्) शरीर, इन्द्रिय और विषय नाम वाला (त्रिविधम्) तीन प्रकार का है।

नोट—गन्धवती पृथिवी=गन्ध होना पृथिवी का लक्षण है।

The aforesaid product substance, earth and the like, is threefold, under the names of body, organ and object.

सं० मानव आदि शरीर को पार्थिव बतलाया, और पंचमहाभूतों से नहीं।

प्रत्यक्षाप्रत्यक्षाणां संयोगस्याप्रत्यक्षत्वात् पञ्चात्मकं न विद्यते 2-172

(प्रत्यक्ष अप्रत्यक्षाणां) प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष द्रव्यों का (संयोगस्य) संयोग (अप्रत्यक्षत्वात्) प्रत्यक्ष न होने से (पंचात्मकं) पंचात्मक (न विद्यते) नहीं है।

नोट—पृथिवी, जल, तेज यह तीनों प्रत्यक्ष हैं और वायु तथा आकाश अप्रत्यक्ष हैं।

The body is not composed of the five elements, for the conjunction of things perceptible and imperceptible is imperceptible.

सं० उक्त अर्थ की सिद्धि में और हेतु कथन करते हैं।

गुणान्तराप्रादुर्भावाच्च 3-173

(गुणान्तराप्रादुर्भावात्) अन्य गुणों का प्रादुर्भाव न होने से (च) भी पृथिवी आदि कार्य द्रव्यों को पंचात्मक नहीं मान सकते।

Because there is not manifested another quality.

सं० पंचात्मक न हो तो त्र्यात्मक हो सकता है? उत्तर

न त्र्यात्मकम् 4-174

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथवा (त्र्यात्मकम्) पृथिवी, जल, तेज से (न) नहीं है।

The body is not composed of three elements.

सं० यदि कहो कि पृथिवी में गन्ध गुण के समान अन्य द्रव्यों के गुण रस प्रकाश, अवकाश आदि न होते तो पृथिवी में गीलापन जल का, पकना अग्नि का, उड़ना वायु का और अवकाश आकाश का गुण क्यों देखा जाता है ? उत्तर

अणुसंयोगस्त्वप्रतिषिद्धः 5-175

(अणुसंयोगः) परमाणुओं का संयोग (तु) तो (अप्रतिषिद्धः) निषेध नहीं किया गया। (वैशेषिक शास्त्र में)।

A conjunction of atoms is not denied.

सं० आगे शरीर का विभाग करते हैं, कि शरीर कितने प्रकार के होते हैं।

तत्र शरीरं द्विविधं योनिजमयोनिजं च 6-176

(तत्र) उनमें (शरीरं) शरीर (योनिजं) योनि से उत्पन्न होने वाला (च) और (अयोनिजं) बिना योनि के उत्पन्न होने वाला (द्विविधं) दो प्रकार का है।

व्याख्या=पुरुष का शुक्र और स्त्री का रज इनके मेल से उत्पन्न होने वाले शरीर योनिज कहलाते हैं उससे भिन्न अयोनिज हैं।

'शुक्रशोणितसन्निपातजन्यं योनिजं तद्भिन्नमयोनिजम्'।

जल अग्नि और वायु से उत्पन्न शरीर **अयोनिज** होते हैं, तथा पृथिवी से उत्पन्न शरीर **योनिज** तथा **अयोनिज** भी होते हैं=ऐसा प्रशस्तपाद आचार्य का मत है। फिर योनिज दो प्रकार के होते हैं **जरायुज** और **अण्डज**। गर्भ को लपेटने वाली झिल्ली=जरायु कहलाती है उससे जन्म लेने वाले मनुष्य, पशु-मृगादि हैं। अण्डे से उत्पन्न होने वाले शरीर को **अण्डज** कहते हैं। जैसे पक्षी, सर्पादि के शरीर। अयोनिज शरीर चार प्रकार के हैं सांकल्पिक **सांसिद्धिक, स्वेदज,** और **उद्भिज**।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सृष्टि के आदि में परमेश्वर के संकल्पमात्र से उत्पन्न होने वाले ऋषि, मुनि मनुष्य तथा पशु आदि, योगसिद्धि से होने वाले योगियों के विलक्षण शरीर का नाम सांसिद्धिक है। स्वेद=पसोने आदि से उत्पन्न होने वाले मच्छर जूका आदि का शरीर। बीज को फाड़कर अंकुर निकलता है इस कारण इन्हें उद्भिज कहते हैं। वृक्षों के सजीव होते हुए भी प्रायः उनमें शरीर व्यवहार नहीं होता। वृक्षों में जीवन है, इस तथ्य को प्राचीन आचार्य्यों ने स्वीकार किया है, और आधुनिक वैज्ञानिकों ने भी इसे स्वीकार किया है। वृक्षों में भग्नक्षतसंराहण और साजात्यप्रजनन को देखकर उनमें जीवन का होना प्रमाणित होता है। हमारे यहाँ तो वृक्ष आयुर्वेद का वर्णन है उनके रोगों का तथा उनको चिकित्सा का भी वर्णन है।

वैशेषिक सूत्रों के व्याख्याकार परम विद्वान् शंकर मिश्र ने अपने उपस्कार में इस विषय पर आगम वचन दिये हैं।

नर्मदातीरसम्भूताः सरलार्जुनपादापाः।
नर्मदातायसंस्पर्शाद् ये यान्तिपरमां गतिम्॥

नर्मदा नदी के तीर में उत्पन्न देवदार और अर्जुन नामक वृक्ष नर्मदा नदी के जल के स्पर्श से वे वृक्ष श्रेष्ठ गति को पाते हैं।

श्मशाने जायते वृक्षः कंकगृध्रादि सेवितः।

श्मशान में उत्पन्न हुआ वृक्ष पर कंक और गीध बैठते हैं।

Of these, body is twofold uterine and non-uterine. The bodies of the gods and sages are non-uterine, according to the text of revelation.

The uterine is twofold, Viviparous जरायुज and oviparous अण्डज snakes, worms, fishes are called reptiles; beceuse it is thair nature to creep about.

The सरल and अर्जुन trees which grow on the banks of नर्मदा, from contact with the waters of the river attain to the highest state hereafter.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

and such as in the burning-ground grows a tree haunted by herons and Vultures.

सं० अब अयोनिज शरीरों की उत्पत्ति का कारण कथन करते हैं।

अनियतदिग्देशपूर्वकत्वात् 7-177

आदि सृष्टि में अयोनिज़ शरीर, (अनियतदिग्देश) परमाणुओं से उत्पन्न होते हैं।

नोट—दिशा और देश न होने से यह पद परमाणु का वाचक है।

Because (the non-uterine body) has antecedents of indeterminate time and space.

सं० अब और कारण कथन करते हैं।

धर्मविशेषाच्च 8-178

(धर्मविशेषात्) धर्मविशेष से (च) और अधर्म विशेष से।

नोट—जीवात्मा अपने शुभ अशुभ कर्मों के अनुसार आगे आने वाले शरीरों को धारण किया करते हैं।

Also because of peculiar merit.

सं० सर्गारम्भ के शरीरों के अयोनिज होने में अन्य भी हेतु है यथा।

समाख्याभावाच्च 9-179

(समाख्या) प्रसिद्ध नाम (भावात्) पाये जाने से (च) भी।

नोट—दुर्वासा इत्यादि नाम सदा के लिये प्रसिद्ध है और इनके शरीर अयोनिज है।

Also because names exist.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सं० इसी विषय में और हेतु बतलाते हैं।

संज्ञाया अनादि[illegible] उत्पन्न हुए (मुसलादौ) मूसल आदि में [illegible] होती है उसमें (हस्तसंयोगः) हाथ का संयोग (सं[illegible] नहीं है (व्यतिरेकात्) क्योंकि (व्यतिरेकात्) हस्त संयोग [illegible] भी उसकी उत्पत्ति देखी जाती है।

नोट—हाथ का संयोग मूसल के उठाने में कारण नहीं है किन्तु वेग कारण है घट की उत्पत्ति में रासभ की तरह हस्तसंयोग भी अन्यथा सिद्ध है। ओखल = Mortar।

In this action produced in a pestle and the like by impact, conjunction with the hand is not a cause, being excluded from it.

सं० और भी।

तथात्मसंयोगो हस्तकर्मणि 4-186

(तथा) इसी प्रकार (आत्मसंयोगः) आत्मा का संयोग (हस्तकर्मणि) हाथ के उठाने रूप कर्म में कारण नहीं है।

In like manner conjunction with soul in relation to action in the hand (is not a cause).

सं० शंका—हाथ के उठाने में कारण क्या है ? उत्तर

अभिघातान्मुसलसंयोगाद्धस्ते कर्म 5-187

(अभिघातात्) चोट मारने से (मुशलसंयोगात्) मुशल के संयोग से (हस्ते) हाथ में (कर्म) उठाने की क्रिया होती है।

नोट—मूसल को ओखली में मारने से मूसल में वेग उत्पन्न होता है वेगवान् मूसल के संयोग से हाथ में ऊपर को उठाना रूप कर्म होता है ?

The action in the hand is from impact, and from conjunction with pestle.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

and such as in the ...
haunted by herons and Vultures ... 1-183

सं० अब अयोनिज शरीरों की उत्पत्ति का कारण कथन करते हैं

अनियतदिग्देशपूर्वकत्वात् 7-177

प्रयत्न

आदि सृष्टि में अयोनिज़ शरीर, (अनियतदिग्देश) परमाणुओं से उत्पन्न होते हैं।

नोट—दिशा और देश न होने से यह पद परमाणु का वाचक है।

Because (the non-uterine body) has antecedents of indeterminate time and space.

सं० अब और कारण कथन करते हैं।

धर्मविशेषाच्च 8-178

(धर्मविशेषात्) धर्मविशेष से (च) और अधर्म विशेष से।

नोट—जीवात्मा अपने शुभ अशुभ कर्मों के अनुसार आगे आने वाले शरीरों को धारण किया करते हैं।

Also because of peculiar merit.

सं० सर्गारम्भ के शरीरों के अयोनिज होने में अन्य भी हेतु है यथा।

समाख्याभावाच्च 9-179

(समाख्या) प्रसिद्ध नाम (भावात्) पाये जाने से (च) भी।

नोट—दुर्वासा इत्यादि नाम सदा के लिये प्रसिद्ध है और इनके शरीर अयोनिज है।

Also because names exist.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(अभिघातजे) चोट देने से उत्पन्न हुए (मुसलादौ) मूसल आदि में (कर्मणि) जो क्रिया उत्पन्न होती है उसमें (हस्तसंयोगः) हाथ का संयोग (अकारणम्) कारण नहीं है (व्यतिरेकात्) क्योंकि (व्यतिरेकात्) हस्त संयोग के बिना भी उसकी उत्पत्ति देखी जाती है।

नोट—हाथ का संयोग मूसल के उठाने में कारण नहीं है किन्तु वेग कारण है घट की उत्पत्ति में रासभ की तरह हस्तसंयोग भी अन्यथा सिद्ध है। ओखल = Mortar।

In this action produced in a pestle and the like by impact, conjunction with the hand is not a cause, being excluded from it.

सं० और भी।

तथात्मसंयोगो हस्तकर्मणि 4-186

(तथा) इसी प्रकार (आत्मसंयोगः) आत्मा का संयोग (हस्तकर्मणि) हाथ के उठाने रूप कर्म में कारण नहीं है।

In like manner conjunction with soul in relation to action in the hand (is not a cause).

सं० शंका—हाथ के उठाने में कारण क्या है ? उत्तर

अभिघातान्मुसलसंयोगाद्धस्ते कर्म 5-187

(अभिघातात्) चोट मारने से (मुशलसंयोगात्) मुशल के संयोग से (हस्ते) हाथ में (कर्म) उठाने की क्रिया होती है।

नोट—मूसल को ओखली में मारने से मूसल में वेग उत्पन्न होता है वेगवान् मूसल के संयोग से हाथ में ऊपर को उठाना रूप कर्म होता है ?

The action in the hand is from impact, and from conjunction with pestle.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सं० हाथ के साथ साथ शरीर के अन्य कर्मों में क्या कारण है ? उत्तर

आत्मकर्म हस्तसंयोगाच्च 6-188

(हस्तसंयोगात्) हाथ के संयोग से (च) और वेग से (आत्मकर्म) शरीर के अन्य अवयवों में भी कर्म होता है। यहां आत्म शब्द शरीर का वाचक है।

Action of the soul is also from conjunction with the hand.

सं० 'अपक्षेपण' कर्म की उत्पत्ति में कारण कथन करते हैं।

संयोगाभावे गुरुत्वात् पतनम् 7-189

(संयोगाभावे) संयोग के न रहने पर (गुरुत्वात्) भारी होने से (पतनम्) गिरना होता है।

In the absence of conjunction falling results from gravity.

सं० शंका=गुरुत्व वाले द्रव्य नीचे ही क्यों गिरते हैं ? उत्तर

नोदनविशेषाभावान्नोर्ध्वं न तिर्य्यग्गमनम् 8-190

(नोदनविशेषाभावात्) प्रेरणा विशेष के न होने से (उर्ध्वम्) ऊपर को (न) नहीं और (तियग्) तिरछा (गमनम्) गमन भी (न) नहीं होता।

नोट—यहाँ **'नोदन'** का अर्थ **प्रेरणा** या **संयोगविशेष** का नाम है।

No upward or sideward motion takes place without a particular impulse.

शंका—प्रेरणा विशेष क्यों नहीं होती और क्यों होती है ? उत्तर

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्रयत्नविशेषान्नोदनविशेषः 9-191

(प्रयत्नविशेषात्) विशेष प्रयत्न से (नोदनविशेषः) विशेष प्रेरणा होती है।

Particular impulse results from particular Volition.

सं० उत्क्षेपण रूप कर्मविशेष की उत्पत्ति में हेतु वतलाते हैं।

नोदनविशेषादुदसनविशेषः 10-192

(नोदनविशेषात्) विशेष प्रेरणा से (उदसनविशेषः) विशेषउछाल होता है। उत्क्षेपण कर्म का नाम 'उदसन' है अर्थात् ऊपर को फेंकना।

From particular impulse results particular casting upward.

सं० अब बालक के उत्क्षेपण में हेतु कथन करते हैं।

हस्तकर्मणा दारककर्म व्याख्यातम् 11-193

(हस्तकर्मणा) हाथ के कर्म से (दारक कर्म) बालक का कर्म (व्याख्यातम्) व्याख्यात है।

नोट—कन्दुक आदि फेंकने के समय आत्मा का संयोग और प्रयत्न मन की सहायता से हाथ में पहुंचता है, उससे हाथ चलता है, उसके साथ अन्य अंगों में भी क्रिया उत्पन्न हो जाती है। बालक का कर्म पाप पुण्य का हेतु नहीं होता।

By the action of the hand, the action of a clild is explained.

सं० उक्त अर्थ का और प्रकार से वर्णन करते हैं।

तथा दग्धस्यविस्फोटने 12-194

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(तथा) उसी तरह बालक क्रीडा के समान (दग्धस्य) पुरुष के शरीर में वह्नि कृत फफोल के (विस्फोटने) फोड़ने में।

नोट—बालक की क्रीड़ा के समान आततायों से जलाये हुए घर से जले हुए मनुष्य के आततायी को मारने के लिये किये गये कर्म भी पाप पुण्य के कारण नहीं होते। मनु कहते हैं कि आततायी के मारने में कोई दोष नहीं। आततायी कौन हैं। 1. आगलगाने वाला 2. विष देने वाला 3. हाथ में मारने के लिये शस्त्र वाला 4. धन चुराने वाला 5. खेत को छीनने वाला 6. स्त्री का अपहरण करने वाला।

In like manner in the case of the bursting open of one burnt.

In a house which has been set on fire by a felon, when a man has there been burnt, and his body torn open by the fire, the action which is produced in the hand, by the will to kill the felon, is neither a cause of merit, nor a cause of demerit.

सं० सूत्रकार ने अन्य भी उदाहरण दिया है।

यत्नाभावे प्रसुप्तस्य चलनम् 13-195

(यत्नाभावे) यत्न के न होने पर (प्रसुप्तस्य) गहरी नींद में सोये हुए का (चलनम्) उठकर चल देना।

नोट—संसार में विरला पुरुषों को यह एक प्रबल वायुरोग देखा जाता है। इस रोग का नाम somnambulism है।

Movement of the sleeping takes place in the absence of Volition.

सं० शरीर से अन्य भी प्रयत्न बिना कर्म हो जाता है।

तृणे कर्म वायुसंयोगात् 14-196

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(तृणे) तिनके में (कर्म) कर्म होता है (वायुसंयोगात) वायु के संयोग से।

नोट—बादलों का इधर-उधर घूमना, पत्ते लता वनस्पति आदि का हिलना, वृक्षों का जड़ से उखड़ जाना, भी वायु संयोग से होता है।

Action takes place in grass from conjunction with wind.

सं० अदृष्ट के अधीन होने वाले कर्मों की गणना करते हुए सूत्रकार कहते हैं।

मणिगमनं सूच्यभिसर्पणमदृष्टकारणम् 15-197

(मणिगमनं) चोर के पास मणि का जाना, चुम्बक के पास (सूच्यभिसर्पणम्) सुई का जाना यह सब (अदृष्टकारणम्) अदृष्ट से किये होते हैं।

नोट—मणि के चलाने का वर्णन प्राचीन टीकाकारों तथा महान्दार्शनिक विद्वान् शंकर मिश्र ने यह किया है। जल से पूर्ण स्वर्ण पात्र जिससे चोरी का पता लगाने के लिये प्रयोग किया जाता है उसे **'मणि'** कहते हैं ऐसे पात्र में मंत्र पढ़ा जाता है। मंत्र सामर्थ्य से जहां चोरी का धन होता है वहां चला जाता है और साथ ही चोर के पास जाकर ठहर जाता है। ऐसे मणिपात्र के चलने में **'अदृष्ट'** अज्ञात कारण है इसमें धन के स्वामी का पुण्य और चोर का पाप का अनुमान होता है। इसलिये शंकर मिश्र ने **'अदृष्ट'** का अर्थ पाप और पुण्य किया है। कोई-२ तृणविशेष जो तृणकान्त मणि के पास चला जाता है तथा चुम्बक की ओर सूई चली जाती है यह सब अदृष्ट कारण के उदाहरण हैं। कोई कोई **'अदृष्ट'** का अर्थ करते हैं **'न दृष्टिगोचर होने वाला'**।

(मणिगमनं) तृण का तृणकान्तमणि की ओर चलना और (सूच्यभिसर्पणम्) सुई का चुम्बक की ओर सरकना, (इति) यह कर्म (अदृष्टकारणम्) अदृष्ट कारण से होते हैं।

The movement of the gem, and the approach of the needle are caused by destiny.

The recovery of the stolen propeaty loadstone= चुम्बक। तृणमणि=अम्बर।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सं० जब धनुष से वाण छोड़ते हैं तब से उसके लक्ष्य पर लगने तक एक कर्म मानना चाहिये या अनेक ?

इषावयुगपत् संयोगविशेषाः कर्मान्यत्वे हेतुः 16-198

(इषौ) बाण में (अयुगपत्) अनेक समयों में (संयोगविशेषाः) भिन्न-भिन्न संयोग (कर्मान्यत्वे) कर्म के अन्य होने में (हेतुः) कारण बन जाते हैं।

Particular non-simultaneous conjunctions is an arrow are the cause of the diversity of its action.

सं० किस किस कारण से बाण के गिरने तक वाण में अनेक कर्म उत्पन्न होते हैं ?
उत्तर

नोदनादाद्यमिषोः कर्म, तत्कर्मकारिताच्च संस्कारादुत्तरं तथोत्तरमुत्तरञ्च 17-199

(नोदनात्) प्रेरणा से (इषोः) बाण का (आद्यम्) पहला (कर्म) काम आरम्भ होता है। (च) और (तत्कर्मकारितात्) उस कर्म के कर्त्तापने से (संस्कारात्) संस्कार वश (उत्तरम्) अगला (तथा) इसी प्रकार (उत्तरम्) अगला (च) और (उत्तरम्) अगला कर्म उत्पन्न होता है।

The first action of the arrow is from impulse, the next is from self-reproduction caused by the action, and in like manner the next and the next.

सं० परन्तु—

संस्काराभावे गुरुत्वात् पतनम् 18-200

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(संस्काराभावे) संस्कारों के न रहने पर (गुरुत्वात्) भारी होने से (पतनम्) पतन हो जाता है।

Falling results from gravity in the absence of self-reproduction.

पंचम अध्याय द्वितीय आह्निक

नोदनादिकों से उत्पन्न होने वाले कर्म पदार्थों की परीक्षा के प्रकरण का आरम्भ करते हैं। संयोग विशेष को या प्रेरणा को नोदन कहते हैं।

सं० उसमें सूत्रकार कहते हैं।

नोदनाभिघातात् संयुक्तसंयोगाच्च पृथिव्यां कर्म 1-201

(नोदनाभिघातात्) प्रेरणा की चोट से (च) और (संयुक्तसंयोगात्) संयुक्त पदार्थों के साथ संयोग से (पृथिव्या) पृथिवी में (कर्म) गमन और भूकम्पादि क्रिया होती है।

नोट—बाँस आदि में कहीं अग्नि की प्रेरणा से कर्म उत्पन्न होता है। कहीं कुठार के घात से होता है। कहीं घोड़े की लगाम से गाड़ी में कर्म होता है।

Action in earth results from impulse, impact and conjunction with the conjunct.

सं० पृथ्वी की दूसरी प्रकार की अदृश्य क्रिया के विषय में बताते हैं।

तद्विशेषेणादृष्टकारितम् 2-202

(तद्विशेषण) उसके विशेष से (भेद से) हुए कर्म (अदृष्टकारितम्) अदृष्ट कारण से होते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

नोट—जैसे भूकम्पादि।

That action which is produced in a different manner from these, is caused by destiny.

सं० जल की क्रिया की परीक्षा करेंगे।

अपां संयोगाभावे गुरुत्वात् पतनम् 3-203

(अपाम्) जलों के (गुरुत्वात्) भारी होने से (संयोगाभावे) संयोग न रहने पर (पतनम्) गिरना होता है।

The falling of water results from gravity in the absence of conjunction.

सं० जल के बहने रूप कर्म की उत्पत्ति में हेतु बतलाते हैं।

द्रवत्वात् स्यन्दनम् 4-204

(स्यन्दनम्) जल के बहने में (द्रवत्वात्) गीला और पतला होना हेतु है।

Flowing results from fluidity.

सं० शंका जल गुरुत्व के कारण वर्षा रूप से पृथिवी पर गिरता है किन्तु पृथिवी का जल ऊपर क्यों जाता है ? इस पर सूत्रकार कहते हैं।

नाड्योवायुसंयोगादारोहणम् 5-205

(नाड्यः) सूर्य की किरणें (वायुसंयोगात्) वायु के संयोग से (आरोहणम् जल को ऊपर चढ़ाती हैं।

नोट—सूर्य की किरणों का नाम **'नाडी'** है।

The sun's rays cause the ascent of water through conjunction with air.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सं० कभी-कभी बिना सूर्य की किरणों के भी पानी ऊपर को उठता देखा जाता है वैसे फौवारे में सो क्यों ? उत्तर—

नोदनापीडनात् संयुक्तसंयोगाच्च 6-206

(नोदनापीडनात्) धक्के और दबाव से (च) और (संयुक्तसंयागात्) संयुक्त पदार्थ के योग से भी पानी ऊपर को उठता है।

नोट—गरमी का गुण पतला और हलका करने का है। शीत का गुण जमाने और स्थूल करने का।

Through the impress of the impulse, and conjunction with the conjunct.

सं० नोदन; पीडन क्रिया न होने पर भी वृक्ष के मूल में दिया हुआ जल ऊपर कैसे चढ़ता है।

वृक्षाभिसर्पणमित्यदृष्टकारितम् 7-207

(इति) यह (वृक्षाभिसर्पणम्) जल का सब वृक्ष में जाना (अदृष्टकारितम्) अदृष्ट कारण से होता है।

The circulation in trees is caused by destiny.

सं० जल में द्रवत्व स्वाभाविक है, फिर उसमें काठिन्य एवं पुनः तरलता कैसे हो जाती है ?

अपां संघातो विलयनं च तेजः संयोगात् 8-208

(अपां) जलों का (संघातः) जमना (च) और (विलयनं) पिघलना (तेजः संयोगात्) तेज के संयोग से होता है।

The freezing and thawing of water results from conjunction with light.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सं० आकाशस्थित जल में ओले और वर्फ जमाने के लिये क्या तेजः संयोग कारण है, इसमें क्या प्रमाण ?

तत्र विस्फूर्जथुर्लिंगम् 9-209

(तत्र) उस मेघ में पैदा हुए ओलों में (विस्फूर्जथुः) बिजली की चमक और कड़क (लिंगम्) तेज की पहचान है।

In these the rolling of thunder is a mark.

सं० इसी तेजः संयोग के विषय में वेद भी प्रमाण है।

वैदिकं च 10-210

(वदिकं) वेद प्रमाण से (च) भी सिद्ध है,

नोट—आपस्ताः अग्नि गर्भमादधीरन्=उन जलों ने अग्निरूप गर्भ को ग्रहण किया।

There is also Vedic (authority establishing this)

सं० आगे बिजली की चमक का कारण बतलाते हैं।

अपां संयोगाद् विभागच्चस्तनयित्नोः 11-211

(अपां) जलों के (संयोगाद्) संयोग से (च) और (विभागात्) विभाग से (स्तनयित्नोः) मेघ में बिजली की उत्पत्ति, चमक, और कड़क, होती है।

(The rolling of thunder results) from cojunction with water and disjunction from a cloud.

सं० पृथिवी की तरह तेज और वायु की परीक्षा का आरम्भ करते हैं।

पृथिवीकर्मणा तेजः कर्म वायुकर्म च व्याख्यातम् 12-212

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(पृथिवीकर्मणा) पृथिवी कर्म के समान (तेजः कर्म) तेज के कर्म (च) और (वायु कर्म) वायु के कर्म की भी (व्याख्याताम्) व्याख्या हो चुकी, ऐसा समझना चाहिये।

The action of light and the action of air, are explained by the action of earth.

सं० पिछले सूत्र में कहे गये अर्थ को इस सूत्र में स्पष्ट करते हैं।

अग्नेरुर्ध्वज्वलनं वायोस्तिर्य्यक्पवनमणूनां मनसश्चाद्यं कर्मादृष्टकारितम् 13-213

(अग्नेः) अग्नि का (ऊर्ध्वज्वलनम्) ऊपर की ओर को जलना (वायोः) वायु का (तिर्य्यक्पवनम्) तिरछा वहना, (अणूनाम्) परमाणुओं (च) और (मनसः) मन का (आद्यं) पहला (कर्म) काम (अदृष्टकारितम्) अदृष्ट का कराया हुआ है।

The upward flaming of fire, the sideward blowing of wind, and the first action of atoms and of the internal organ, are caused by destiny.

सं० मन के कर्म को कहते हैं।

हस्तकर्मणा मनसः कर्म व्याख्यातम् 14-214

(हस्तकर्मणा) हाथ की क्रिया से (मनसः) मन की (कर्म) क्रिया का (व्याख्यातम्) व्याख्यान समझ लो।

The action of the internal organ is explained by the action of the hand.

सं० मन में क्रिया उत्पन्न होती है इसमें क्या प्रमाण हैं?

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

आत्मेन्द्रियमनोर्थसन्निकर्षात् सुखदुःखे 15-215

(आत्मेन्द्रियमनोर्थसन्निकर्षात्) आत्मा, इन्द्रिय, मन, और अर्थ विषय के परस्पर (सन्निर्कषात्)=सम्बन्ध से (सुख दुःखे) सुख और दुःख होते हैं।

Pleasure and pain result from contact of soul, sense, mind and object.

सं० शंका मन चंचल है उसका रुकना संभव नहीं, इसलिये योग संभव नहीं है बिना योग के आत्मा का साक्षात्कार नहीं हो सकता। आत्मसाक्षात्कार के बिना मोक्ष होना संभव नहीं। इस कारण वैशेषिक शास्त्र व्यर्थ हो जायेगा ? उत्त र

तदनारम्भ आत्मस्थे मनसि, शरीरस्य दुःखा-भावः सः योगः 16-216

सूत्र (मनसि) मन के (आत्मस्थे) आत्ममात्रनिष्ट हो जाने पर (तदनारम्भः) इन्द्रियों द्वारा उन विषयग्रहण आरम्भ नहीं होता, तब (शरीरस्य) शरीर को (दुःखाभावः) दुःख नहीं रहता (सः) वह (योगः) योग कहलाता है।

नोट—जब मन आत्मा में स्थित हो जाता है, तब शरीर के दुःख का अभाव होता है, ऐसे मन के स्थिर होने को जिसमें दुःख का अभाव होता है, योग कहते हैं, इसके अनन्तर आत्मा के साक्षात्कार होने से मिथ्या ज्ञान के नाश होने पर मोक्ष होता है इससे वैशेषिक शास्त्र व्यर्थ नहीं हैं।

Absence of action in the internal sensory reposing in the soul, non-existence of pain in the body, this is union.

---

1. किसी किसी पुस्तक में 'सःयोगऽ' के स्थान पर 'संयोगः' पाठ भी मिलता है। यह पाठान्तर है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सं० अब मन की अन्य क्रियाओं का वर्णन करते हैं जो अदृष्ट (न देखे हुए) प्रारब्ध कर्म संस्कार से होती हैं।

अपसर्पणमुपसर्पणमशितपीतसंयोगाः कार्यान्तर-संयोगाश्चेत्यदृष्टकारितानि 17-217

(अपसर्पणं) देह से मन का निकलना, (उपसर्पणं) देह में मन का प्रवेश करना, अशित-पीत-संयोग,) खाये हुए अन्न तथा पीये हुए जल का संयोग, (च) और (कार्यान्तर संयोगः) दूसरे कार्यों के संयोग (इति) ये सब (अदृष्ट-कारितानि) अदृष्ट द्वारा कराये जाते हैं।

The egress and in gress (of internal sensories from and into bodies) conjunctions with things eaten and drunk, and conjunctions with other effects-all these things are caused by destiny.

सं० यदि दूसरे शरीर की उत्पत्ति होना आवश्यक है तो मोक्ष कैसे होगा, इस शंका के के उत्तर में सूत्रकार कहते हैं।

तदभावे संयोगाभावोऽप्रादुर्भावश्च मोक्षः 18-218

(तत् अभावे) उस कर्मारम्भ के अभाव में (संयोग अभावः) आत्मा का मन आदि से संयोग नहीं होता (च) और (अप्रादुर्भावः) जन्म नहीं होता (मोक्षः) यही मोक्ष है।

नोट—आत्मसाक्षात्कार से मिथ्या ज्ञान के नष्ट होने पर दोष तथा प्रवृत्ति तथा दुःख, दुःख के नाश पर मोक्ष होता है। आत्मा जन्म मरण के प्रवाह से रहित हो जाता है।

Where there is non-existence of this (that is, of destiny), there is non-existence of conjunction, and non-existence of manifestation, emancipation.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सं० तम (अन्धकार) द्रव्य नहीं है इसका वर्णन करते हैं ·

द्रव्यगुणकर्मनिष्पत्तिवैधर्म्यादभावस्तमः 19-219

(द्रव्यगुण कर्म निष्पत्ति वैधर्म्यात्) पृथिव्यादि द्रव्यों, रूपादि गुणों, और उत्क्षेपण आदि कर्मों की सिद्धि के विरुद्ध होने के कारण (अभावः) प्रकाश का न होना (तमः) अन्धकार है।

Darkness is a non-entity being dissimilar to the production of substance, quality, and action.

सं० ऐसे भ्रम का कारण बताते हैं।

तेजसो द्रव्यान्तरेणावरणाच्च 20-220

(तेजसः) तेज के (द्रव्यान्तरेण) दूसरे द्रव्यों द्वारा (आवरणात्) ढ़क जाने से (च) और प्रतीति हो जाती है।

नोट—तम द्रव्य नहीं है, केवल प्रकाश का अभाव है।

And because of the obseuration of light by another substance.

सं० क्या कर्म सभी द्रव्यों में होता है, अथवा कोई ऐसे द्रव्य हैं, जहां कर्म न होता हो? सूत्रकार कहते हैं।

दिक्कालावकाशं च क्रियावद्वैधर्म्यात् निष्क्रियाणि 21-221

(दिक्कालौ) दिशा और काल (च) और (आकाशम्) आकाश (निष्क्रियाणि) क्रिया रहित पदार्थ हैं क्योंकि (क्रियावद्वैर्धम्यात्) क्रिया वाले पदार्थों से विरुद्ध धर्म वाले होने के कारण।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

Space, time and ether, are also inactive, being dissimilar to that which possesses action.

सं० इसी प्रसंग में सूत्रकार ने बताया।

एतेन कर्माणि गुणाश्च व्याख्याताः 22-222

(एतेन) इसी से (कर्माणि) कर्म (च) और (गुणाः) गुणों की (व्याख्याताः) व्याख्या की गई।

By this are explained actions and qualities.

सं० यदि गुण और कर्म निष्क्रिय हैं, तो इनका द्रव्य के साथ सम्बन्ध कैसे होता है? सम्बन्ध के लिये क्रिया का होना आवश्यक है। इस पर कहते हैं।

निष्क्रियाणां समवायः कर्मभ्यो निषिद्धः 23-223

(निष्क्रियाणाम्) निष्क्रिय गुण और कर्मों का (समवायः) समवाय सम्बन्ध (कर्मेभ्यः) कर्मों से (निषिद्धः) निषेध किया गया है।

The co-inherence of things inactive is excluded from actions.

सं० यदि गुण और कर्म दोनों निष्क्रिय हैं तो उनसे कर्मों की उत्पत्ति क्यों होती है? उत्तर

कारणं त्वऽसमवायिनो गुणाः 24-224

(गुणाः) गुण जो (कारणम्) कर्म का कारण होते हैं। (तु) वे तो (असमवायिनः) समवाय गुण वाले नहीं हैं।

But qualities as a cause are non-coinherent.

सं० दिशा की स्थिति का निर्देश करते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

गुणैर्दिग्व्याख्याता 25-225

(गुणैः) गुणों से (दिक्) दिशा का (व्याख्याता) व्याख्यान समझ लेना चाहिये।

By qualities space is explained.

सं० तथा

कारणेन कालः 26-226

(कारणेन) निमित्त कारण होने से (कालः) काल का व्याख्यान भी हो चुका।

By cause time (is explained)

षष्ठम अध्याय प्रथम आह्निक

इस आह्निक के 16 सूत्रों के अर्थ करने में हिन्दी टीकाकारों ने बड़ी भूल की है। कोई तो इनका अर्थ दान में करता है कोई भोजन में परन्तु इन सूत्रों के तत्त्वज्ञाता शंकर मिश्र ने जो अर्थ किये हैं वह वृत्ति के अनुसार हैं इस लिये मान्य है। मैं भी उन्हीं के उपस्कार के अनुसार इन सूत्रों का अर्थ कर रहा हूं।

सं० संसार के मूल कारण धर्म तथा अधर्म की परीक्षा संपूर्ण षष्ट अध्याय का विषय है। जिस धर्म तथा अधर्म की सत्ता "स्वर्गकामोयजेत्" स्वर्ग की इच्छा करने वाला मनुष्य याग करे, तथा "न कलञ्जं भक्षेत्" कलञ्जन न खाये, इत्यादि शास्त्रों में विधान तथा निषेध वाक्यों के बल से मानी जाती है। इस कारण वेद का प्रामाण्य सिद्ध करने के लिये कहते हैं।

बुद्धिपूर्वा वाक्यकृतिर्वेदे 1-227

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(वेदे) वेद में (वाक्यकृतिः) वाक्यों की रचना (बुद्धिपूर्वा) बुद्धिपूर्वक है अर्थात् वेद में कोई अक्षर और शब्द ऐसा नहीं जो निर्थक हो। यही वेद का लक्षण है।

There is in the Veda a composition of sentences consequent upon design.

विधान = precepts। निषेध = prohibitions।

सं० दूसरे प्रकार से वेद वाक्यों में बुद्धिपूर्वकत्व सिद्ध करते हैं।

ब्राह्मणे संज्ञाकर्म सिद्धिलिंगम् 2-228

(ब्राह्मणे) ब्राह्मण नाम के वेद भाग में (संज्ञाकर्म) नामकरण भी (सिद्धिलिंगम्) बुद्धिपूर्वकता का चिह्न है।

नोट—वेद की वाक्य रचना में "**बुद्धिपूर्वकत्व**" का प्रमाण यज्ञादिकों के नाम है।

The formation of names in the ब्राह्मणग्रन्थ is an evidence of design.

सं० बुद्धिपूर्वकत्व में दूसरा प्रकार कहते हैं।

बुद्धिपूर्वो ददातिः 3-229

(बुद्धिपूर्वः) बुद्धिपूर्वक (ददातिः) दान है।

नोट—(स्वर्गकामो गाँ दद्यात्) स्वर्ग की इच्छा करने वाला गोदान करे। वेदों में जिस प्रकार दान का वर्णन है, उससे प्रतीत होता है कि वेदों की रचना बुद्धिपूर्वक है। यहां **'ददाति'** का अर्थ है दान।

The words. He gives have intelligence as their antecedent. He that desires paradise give a cow.

तथा प्रतिग्रहः 4-230

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(तथा) इसी प्रकार (प्रतिग्रहः) दान लेने की विधि भी वेद में बुद्धि-पूर्वक है।

नोट—गो, पृथिवी, और स्वर्ण, का दान पुण्य के लिये और कृष्णमृगचर्म का दान पाप के लिये है। ऐसा वेद की श्रुतियां वर्णन करती हैं।

Likewise reception.

The sacred texts = श्रुतियां। The skin of the black antelope = कृष्णसार = कृष्णमृग।

सं० पुण्य तथा पाप कर्ता को होता है, इसका वर्णन करते हैं।

आत्मान्तरगुणानामात्मान्तरेऽकारणत्वात् 5-231

(आत्मान्तरगुणानाम्) अन्य आत्मा के गुणों को (आत्मान्तरे) अन्य आत्मा में (अकारणत्वात्) कारण न होने से।

नोट—एक आत्मनिष्ठ यागादि अन्य आत्मा में सुखादि की उत्पत्ति में कारण नहीं होते किन्तु उसकी आत्मा में पुण्यादि का उत्पादन करते हैं।

Because the attributes of one soul are not a cause with regard to another soul.

सं० निषिद्ध अन्न खाने वाले ब्राह्मणों तथा दुष्टचरित पुरुषों के आशीर्वाद निष्फल होते हैं।

तद् दुष्टभोजने न विद्यते 6-232

(तद्) वह पुण्यकर्म (दुष्ट भोजने) दोष युक्त ब्राह्मणों को भोजन कराने में (न) नहीं (विद्यते) होता है।

नोट—**कुण्ड** = पति के विद्यमान होने पर व्यभिचार कर्म से उत्पन्न हुआ, तथा **गोलक** = पति के मरने पर व्यभिचार कर्म से उत्पन्न हुआ, इत्यादि संकर जातियों के ब्राह्मण तथा दुष्ट आचार वाले ब्राह्मणों के भोजन से पुण्य कर्म नहीं होता।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

That does not exist in the case of the eating of the wicked.

सं० वे दुष्ट ब्राह्मण कौन है ? उत्तर

दुष्टं हिंसायाम् 7-233

(हिंसायाम्) जो ब्राह्मण हिंसा में प्रवृत्त होते हैं (दुष्टं) वे दुष्ट हैं।

नोट—'हिंसा' शब्द से सम्पूर्ण निषिद्ध कर्मों का ग्रहण है। निषिद्ध आचार में लीन पुरुष ही दुष्ट कहलाता है।

The evil has reference to wrong.

सं० दुष्ट ब्राह्मण को श्राद्धादि में भोज कराने से पाप लगता है।

तस्य समभिव्याहारतो दोषः 8-234

(तस्य) उस दुष्ट ब्राह्मण के (समभिव्याहातः) संसर्ग==संगतिसे (दोषः) पाप भी लगता है।

Demerit results from association with him.

सं० परन्तु—

तददुष्टे न विद्यते 9-235

(तत्) वह दोष (अदुष्टे) दोष रहित ब्राह्मण के संसर्ग करने पर (न) नहीं (विद्यते) होता है।

This does not exist in the case of one not unworty.

सं० यदि सत्पात्र ब्राह्मण के न मिलने पर दुष्ट ब्राह्मण को निमन्त्रण दिया जाय, पश्चात् सत्पात्र ब्राह्मण मिल जाये नो श्राद्धकर्ता को क्या करना चाहिये ?

पुनर्विशिष्टे प्रवृत्तिः 10-236

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(पुनः) फिर (विशिष्टे) सत्पात्र ब्राह्मण के मिलने पर (प्रवृत्तिः) श्राद्ध करने में प्रवृत्ति होती है।

नोट—उस दुष्ट ब्राह्मण को द्रव्यादि देकर संतुष्ट कर देना चाहिये, श्राद्ध या दान में उसका अधिकार नहीं है।

Again the procedure shoud be in relation to that which is excellent.

सं० जिस श्राद्ध और दानादि में श्राद्धकर्ता को उत्तम ब्राह्मण न मिले तो उसे क्या करना चाहिये।

समे हीने वा प्रवृत्ति 11-237

(अपने से विशिष्ट पुरुष के अभाव में)

(समे) समान (हीने वा) या अपने से हीन ब्राह्मण में (प्रवृत्तिः) प्रवृत्ति करना।

Again the procedure should be in relation to an equal or an inferior.

सं० श्राद्धकर्ता तथा दान देने वाले के उत्तम गुणों के अनुसार भी धर्म की उत्पत्ति का वर्णन करते हैं।

एतेन हीनसमविशिष्टधार्मिकेभ्यः परस्वादानं व्याख्यातम् 12-238

(एतेन) इससे (हीन, सम, विशिष्ट, धार्मिकेभ्यः) अधम, मध्यम और उत्तम धार्मिक पुरुषों से (परस्वादानं) प्रतिग्रह रूप दूसरे के धन का ग्रहण (व्याख्यातम्) व्याख्या किया गया है।

नोट—इस प्रकार के प्रतिग्रह से पुण्य होता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

By this is explained reception of property from another, from inferior, equal and superior, Virtuous persons.

सं० केवल प्राण संशय में पर धन का लेना पापजनक नहीं होता, उस अवस्था में जो चोरी करने में रुकावट करता है उसे मार दो, उसके मारने में कोई पाप नहीं।

तथा विरुद्धानां त्यागः 13-239

(तथा) इसी प्रकार (विरुद्धानां) विरोध करने वालों का (त्यागः) त्याग देना। यहां त्याग का अर्थ है बध कर देना।

नोट—किसी-किसी टीकाकार ने 'विरुद्धानां' का अर्थ किया है धर्म विरोधियों का प्रतिग्रह रूप धन 'त्याग' छोड़ दे अर्थात् उसे न ग्रहण करे।

Likewise the making away with those who are contrary. त्यागः =put to death.

इस सूत्र में आचार्य शंकर मिश्र को वृत्ति के अनुसार अर्थ करते हैं और धर्म शास्त्र का प्रमाण भी देते हैं।

कर्मणा येन केनापि मृदुना दारुणेन वा।
उद्धरेद्दीनमात्मानं समर्थो धर्ममाचरेत्॥

जिस किसी प्रकार समर्थ होता हुआ भी, सरल कर्म से अथवा कठिन कर्म से अपने शरीर को रक्षा करे ऐसा धर्म शास्त्र में कहा है।

Let a man save himself when in despair by what soever deed, fair or foul, when he is able let him practise righteousness.

सं० क्या जिसे चाहे उसका वध कर दे? इस शंका के समाधान में सूत्रकार कहते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हीने परे त्यागः 14-240

यदि (परे) आततायी अपने से (हीने) हीन हो तो उसका (त्यागः) वध करना चाहिये। उपस्कार से भिन्न, रावण भाष्य का अर्थ (परे) यदि दाता (हीने) धर्मानुष्ठान में अधम हो, तो (त्यागः) उसका दान लेना त्याग दे।

Making away with another has reference to an inferior.

सं० समान के विषय में कहते हैं।

समे आत्मत्यागः परत्यागो वा 15-241

(समे) यदि विरोधी अपने समान हो, तो (आत्मत्यागः) अपने शरीर का त्याग अथवा (परत्यागः) विरोधी का वध करना चाहिये अन्यार्थ (समे) सम में (आत्मत्यागः) अपना त्याग (वा) या (परत्यागः) दूसरे का त्याग उचित है।

In the case of an equal, suicide or the destruction of the other.

सं० और

विशिष्टे आत्मत्याग इति 16-242

यदि विरोधी अपने से (विशिष्टे) अधिक बलवान हो तो (आत्मत्यागः) आत्म त्याग करना चाहिये (इति) ऐसा कहा है।

नोट—कितनी ही पुस्तकों में 'इति' शब्द नहीं है।

In the case of a superior suicide (is to be committed)

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

षष्ठम अध्याय द्वितीय आह्निक

सं० इस आह्निक में वैयक्तिक धर्म-अधर्म का निरूपण करना अभिष्ट है। वह दो प्रकार का है दृष्ट और अदृष्ट। अब विशेष रूप से धर्म की उत्पत्ति की परीक्षा करते हैं।

दृष्टादृष्टप्रयोजनानां दृष्टाभावे प्रयोजनमभ्युदाय 1-243

(दृष्टादृष्टप्रयोजनानां) प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष फल देने वाले कर्मों में (दृष्टाभावे) दृष्ट फल के अभाव में (प्रयोजनं) प्रयोग या अनुष्ठान (अभ्युदाय) मोक्ष के लिये है।

नोट—कृषि (खेती) वाणिज्य (व्यापार) राजा की सेवा प्रत्यक्ष धन प्राप्ति के साधन हैं। इन्हें दृष्ट फल कहते हैं। यज्ञ, दान, ब्राह्मचर्य, व्रतादि, अदृष्ट कर्म हैं। यह अदृष्ट स्वर्ग और मुक्ति के देने वाले हैं।

Of action of which the motives are seen and unseen, a motive, where there is none seen, tends to exaltation.

सं० अदृष्ट फल देने वाले कर्मों की गणना करते हैं।

अभिषेचनोपवासब्रह्मचर्यगुरुकुलवासवानप्रस्थयज्ञदानप्रोक्षण दिङ्नक्षत्र मंत्रकालनियमाश्चादृष्टाय 2-244

(1) (अभिषेचनः) राज्याभिषेक या स्नान "गंगायां स्नानम्" Inaugurations or bath (2) उपवास) व्रत "एकादशीमुपवसेत्" fasting (3) (ब्रह्मचर्य्य)=आठ प्रकार के मैथुन का परित्याग continence (4) (गुरुकुलवास) वेदाध्ययन के लिये गुरुकुल में रहना residence in the family of a spiritual guide (5) वानप्रस्थ=life in the forest (6) (यज्ञ)

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

sacrifice (7) (दानं) almsgiving, "गां दद्यात् (8) (प्रोक्षणं) मंत्र पाठ-पूर्वक धान्य आदि को जल से सींचना "ब्रीहीन् प्रोक्षति" oblation (9) दिङ्=दिशा "प्राङ्मुखोऽन्नानि भुञ्जीत" the cardinal points (10) नक्षत्र=भरणी, मघा, आदि नक्षत्र में श्राद्ध -करना, constellations (11) मंत्र=प्रणव या गायत्री मंत्र का जाप incantation or sacred texts (12) काल=ग्रीष्मे पंचतपाः seasons (13) नियम=शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, और ईश्वरप्रणिधान, ये पांच प्रकार के हैं।

and religious, observances, conduce to invisible result.

सं० तथा—

चातुराश्रम्यमुपधा अनुपधाश्च 3-245

(चातुराश्रम्यम्) ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, और संन्यास, इन चार आश्रमों में विहित कर्म का अनुष्ठान (उपधाः) उपधायें (च) और (अनुपधाः) अनुपधायें भी विहित हैं।

The duty of the four periods of religious life (has been declared) fidelities and infidelities (are causes of merit and demerit.)

सं० उपधा और अनुपधा का अर्थ अगले सूत्र में महर्षि ने स्वयं कहा है।

भावदोष उपधाऽदोषोऽनुपधा 4-246

(भावदोषः) श्रद्धा के दोष (उपधा) उपधा कहाते हैं (अदोषः) श्रद्धा में दोष न होना (अनुपधा) अनुपधा कहाते हैं।

नोट—उपधा तथा अनुपधा दोनों धर्म तथा अधर्म के निमित्त कारण हैं।

A deficiency of faith is an infidelity, a non-deficiency a fidelity.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सं० शुचिता (शुद्धि) तथा अशुचिता (अशुद्धि) भी उपधा तथा अनुपधा कहाती हैं। उनमें शुचिता तथा अशुचिता का सूत्रकार विवेचन करते हैं i

यदिष्टरूपरसगन्धस्पर्शं प्रोक्षितमभ्युक्षितञ्च-तच्छुचि 5-247

(यत्) जो (इष्ट रूप रस गन्ध स्पर्श) शास्त्र से विहित, रूप, रस, गन्ध और स्पर्श वाला, (प्रोक्षितम्) मंत्र पाठ पूर्वक जल से सींचा हुआ (च) और (अभ्युक्षितम्) बिना मंत्र के केवल शुद्ध जल से सींचा हुआ (तत्) वह (शुचि) पवित्र होता है।

That which is of prescribed colour, taste, smell and touch, the aspersed, and the sprinkled, are pure.

नोट—तत्र रूपम्="अरूणया एकहायन्या पिंगलाक्ष्या गवा सोमं क्रीणाति"= रक्त वर्ण की एक वर्ष की अवस्था वाली पीत आँखों वाली गौ को देकर सोम लता को खरीदता है।

He buys the Soma for a cow, ruddy, one year old, with tawny eyes.

श्वेतं छागलमालभेत्=श्वेत वर्ण के बकरे को स्पर्श करे।

He should take a white goat.

याजनाध्यापनप्रतिग्रहैर्ब्राह्मणो धनमर्जयेत्।

ब्राह्मण याग कराना, पढ़ाना, दान लेना इत्यादि व्यापार से धन उत्पादन करे।

A ब्राह्मण should acquire wealth by performing sacrifices, by teaching, and by receiving presents.

सं० अशुचि का लक्षण कहते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अशुचीति शुचिप्रतिषेधः 6-248

(अशुचि) अपवित्र है (इति) यह (शुचिप्रतिषेधः) पवित्रता का निषेध है। अर्थात् शुचि से भिन्न अशुचि है।

Impure denotes the negation of the pure.

सं० और

अर्थान्तरञ्च 7-249

(अर्थान्तरम्) विधान किये हुए पदार्थ से भिन्न दूसरा पदार्थ (च) भी अशुद्ध है।

नोट—वाक् दुष्ट पदार्थ भी अपवित्र होते हैं।

And something else. Which is vitiated by speechot by disposition.

सं० क्या शुचि भोजन सब किसी से लेकर भोज्य है ? उत्तर नहीं। क्योंकि

अयतस्य शुचिभोजनादभ्युदयो न विद्यते नियमाभावात् 8-250

(नियमाभावात्) नियम के न रहने से (अयतस्य) अहिंसादि यमों से रहित पुरुष का (शुचिभोजनात्) शुचि भोजन करने से (अभ्युदयः) धर्म या कल्याण (न) नहीं (विद्यते) होता।

To the unrestrained there accrues no exaltation from eating what is pure, in asmuch as there is an absence of religious observance.

"हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचम्य वाग्यतो भुञ्जीत" हाथ तथा पैर को धोकर आचम कर मौन होते हुए भोजन करे।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

A man should eat after washing his hands and feet, and rinsing his mouth, restrained in speech.

नोट—जो पुरुष अहिंसा आदि व्रतों का पालन नहीं करता उसका दिया हुआ शुद्ध भोजन भी संसर्ग दोष से दूषित है, इसलिये कल्याणकारी नहीं ।

विद्यते वाऽर्थान्तरत्वात् यमस्य 9-251

(वा) अथवा (यमस्य) अहिंसा आदि यम का (अर्थान्तरत्वात्) अन्य अर्थ होने से (विद्यते) शुचि भोजन से लोक परलोक का कल्याण भी होता है ।

नोट—युद्ध में पुरुषों के लिये यम नियम का कोई बन्धन नहीं केवल शुचि भोजन से उनका कल्याण होता है ।

It accrues, because restraint is something elsc.

सं० और भी एक कारण है कि

असति चाभावात् 10-252

(असति) शुद्ध भोजन में हिंसादि दोष के न होने पर (च) और (अभावात्) हिंसादि दोष न होने से लोक परलोक के पुण्य में बाधा नहीं ।

नोट—यम नियम होने पर भी यदि पवित्र भोजन न हो तो पुण्य नहीं होता अतः यम-नियम तथा पवित्र भोजन दोनों ही पुण्य के कारण हैं ।

For there is non-existence (of exaltation) where (the eating of pure food) does not exist.

सं० कर्म की परीक्षा हो चुकी, अब दोष की परीक्षा का आरम्भ करते हैं—

सुखाद् रागः 11-253

(सुखाद्) सुख से (रागः) इच्छा या आसक्ति होती है ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

From pleasure arises desire.

सं० अब पुरुष प्रवृत्ति के निमित्तभूत राग, द्वेष की उत्पत्ति में ओर कारण कथन करते हैं।

तन्मयत्वाच्च 12-254

(तन्मयत्वात्) तन्मय हो जाने से (च) भी राग और द्वेष हो जाते हैं।

Also through that being engrained.

सं० अब राग द्वेष की उत्पत्ति में और कारण बतलाते हैं।

अदृष्टाच्च 13-255

(अदृष्टात्) अदृष्ट से अर्थात् पर्वजन्म के संस्कारों से (च) भी राग और द्वेष उत्पन्न होते हैं।

Also through destiny.

सं० अब राग द्वेष की उत्पत्ति में और कारण कथन करते हैं।

जातिविशेषाच्च 14-256

(जातिविशेषात्) विशेष जाति से (च) भी राग और द्वेष होते हैं।

नोट—मनुष्य जाति को अन्न, दुग्ध, फल और पुष्प से, मृगजाति का तृण से, ऊंट को कांटों वाली झाड़ियों से, कबूतर का धान्य कण से और शेर का मांस से, राग है।

नकुल का सर्प से, घोड़े का भैंसे से, बिल्ली का चूहे से, कुत्ते का गीदड़ से और उल्लू का कौए से, द्वेष है।

Also through perticularity of race.

सं० राग द्वेष निमित्तक विहित निषिद्ध कर्मों में प्रवृत्ति कथन करते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

इच्छाद्वेषपूर्विका धर्माधर्मप्रवृत्तिः 15-257

(धर्माधर्मप्रवृत्तिः) धर्म और अधर्म में प्रवृत्ति (इच्छाद्वेषपूर्विका) राग और द्वेष पूर्वक होती है।

Activity in merit or demerit has for its antecedents desire and aversion.

सं० अब रागद्वेष पूर्वक धर्माधर्म प्रवृत्ति का फल कहते हैं।

तत् संयोगो विभागः 16-258

(तत्) उस धर्म, अधर्म प्रवृत्ति से (संयोगः) जन्म (विभागः) और मृत्यु होती है।

By these are conjunction and disjunction.

सं० मोक्ष का निरूपण करते हैं।

आत्मकर्मसु मोक्षो व्याख्यातः 17-259

(आत्मकर्मसु) आत्मा के श्रवण आदि कर्म के परिपूर्ण होने पर (मोक्षः) जन्म मरण श्रृंखला से भोक्ष मिलता है (व्याख्यातः) यह कहा गया है।

Emancipation is declared as dependent on the actions of the soul.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सप्तम अध्याय प्रथम आह्निक

इस सप्तम अध्याय में गुणों की परीक्षा का वर्णन है।

उक्ता गुणाः 1-260

(गुणाः) गुण (उक्ता) कहे गये हैं।

नोट—इस आह्निक में गुण परीक्षा के पांच प्रकरणों का वर्णन है।

The qualities have been stated.

सं० सर्वप्रथम सूत्रकार ने रूपादि चार गुणों की अनित्यता का कथन किया है।

पृथिव्यादिरूपरसगन्धस्पर्शा द्रव्यानित्यत्वादनित्याश्च 2-261

(पृथिव्यादिरूपरसगन्धस्पर्शाः) पृथिवी आदि चार द्रव्यों में रूप, रस, गन्ध और स्पर्श गुण (द्रव्यानित्यत्वात्) द्रव्यों के अनित्य होने से (अनित्याः) अनित्य हैं।

नोट—(च) च 'पद' से संख्या परिणाम आदि का भी ग्रहण है।

Also the colour, taste, smell, and touch of the earth, inasmuch as substances are non-eternal.

सं० नित्य द्रव्यों के गुण नित्य होते हैं।

एतेन नित्येषु नित्यत्वमुक्तम् 3-262

(एतेन) इसी प्रकार से (नित्येषु) नित्य द्रव्यों में (नित्यत्वम्) नित्य होना (उक्तम्) कहा गया है।

नोट—अर्थापत्ति द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है, कि ये गुण नित्य द्रव्यों में रहने पर नित्य होते हैं।

By this is declared their eternity in things eternal.

सं० उस नित्यता को सूत्रकार स्पष्ट करते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सप्तम अध्याय प्रथम आह्निक

इस सप्तम अध्याय में गुणों की परीक्षा का वर्णन है ।

उक्ता गुणाः 1-260

(गुणाः) गुण (उक्ता) कहे गये हैं ।

नोट—इस आह्निक में गुण परीक्षा के पांच प्रकरणों का वर्णन है ।

The qualities have been stated.

सं० सर्वप्रथम सूत्रकार ने रूपादि चार गुणों की अनित्यता का कथन किया है ।

पृथिव्यादिरुपरसगन्धस्पर्शा द्रव्यानित्यत्वादनित्याश्च 2-261

(पृथिव्यादिरूपरसगन्धस्पर्शाः) पृथिवी आदि चार द्रव्यों में रूप, रस, गन्ध और स्पर्श गुण (द्रव्यानित्यत्वात्) द्रव्यों के अनित्य होने से (अनित्याः) अनित्य हैं ।

नोट—(च) च 'पद' से संख्या परिणाम आदि का भी ग्रहण है ।

Also the colour, taste, smell, and touch of the earth, inasmuch as substances are non-eternal.

सं० नित्य द्रव्यों के गुण नित्य होते हैं ।

एतेन नित्येषु नित्यत्वमुक्तम् 3-262

(एतेन) इसी प्रकार से (नित्येषु) नित्य द्रव्यों में (नित्यत्वम्) नित्य होना (उक्तम्) कहा गया है ।

नोट—अर्थापत्ति द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है, कि ये गुण नित्य द्रव्यों में रहने पर नित्य होते हैं ।

By this is declared their eternity in things eternal.

सं० उस नित्यता को सूत्रकार स्पष्ट करते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अप्सु तेजसि वायौ च नित्या द्रव्यनित्यत्वात् 4-263

(द्रव्यनित्यत्वात्) द्रव्य के नित्य होने से (अप्सु) जल के परमाणुओं में (तेजसि) अग्नि के परमाणुओं में (च) और (वायौ) वायु के परमाणुओं में (नित्याः) गुण भी नित्य हैं।

They are eternal in water, light, and air, inasmuch as the substance are eternal.

सं० जल, तेज वायु, तीन अनित्य द्रव्यों के रूपादि गुणों के विषय में कहते हैं।

अनित्येष्वनित्या द्रव्यानित्यत्वात् 5-264

(द्रव्यानित्यत्वात्) द्रव्यों के अनित्य होने से (अनित्येषु) अनित्य द्रव्यों में, (अनित्याः) गुण भी अनित्य हैं।

In things non-eternal they are non-eternal, the because substances are non-eternal.

सं० पृथिवीगत रूपादि गुणों के विषय में कहते है।

कारणगुणपूर्वकाः पृथिव्यां पाकजाः 6-265

(कारणगुणपूर्विकाः) अपन-अपने कारणों के गुणों से आये हुए (पृथिव्याम्) पृथिवी में घटादि (पाकजाः) अग्नि संयोग से उत्पन्न होते हैं।

नोट—पृथिवी में केवल गन्ध गुण तो अपना है और रूपादि गुण अग्नि आदि अन्य द्रव्यों के साथ पकने से उत्पन्न हो जाते हैं।

(Colour, taste, smell, and touch,) produced by combustion in earth, have for their antecedent the qualities of their causes.

सं० क्योंकि—

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

एकद्रव्यत्वात् 7-266

प्रत्येक गुण का केवल एक ही द्रव्य होने से।

Because there is only one substance.

सं० क्रम प्राप्त संख्या गुण की परीक्षा अपेक्षित है। पर उसके दुरुह होने के कारण सूचि-कटाह न्याय के अनुसार अल्प विवेच्य परिमाण गुण की परीक्षा आरम्भ करते हैं।

अणोर्महतश्चोपलध्यनुपलब्धी नित्ये व्याख्याते 8-267

(अणोः) अणु की (च) और (महतः) महत् की (उपलब्ध्यनुपलब्धी) उपलब्धि और अनुपलब्धि=(नित्ये) नित्य होती है यह (व्याख्याते) बतलाया जा चुका है।

नोट—यह उपलब्ध और अनुपलब्ध होना सार्वकालिक नित्य है।

The perception and non-perception of the atomic and of that which has magnitude, have been explained to be constant.

सं० परिमाण गुण के कारणों की गणना कहते हैं।

कारणबहुत्वाच्च 9-268

(कारणबहुत्वात्) बहुत कारणों के होने से (च) भी, महत् परिणाम की उत्पत्ति होती है।

Also in consequence of a plurality of causes, extension in produced.

सं० अणु परिणाम का वर्णन करते हैं।

अतो विपरीतमणु 10-269

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(अतः) इस प्रत्यक्ष महत् परिमाण से (विपरीतं)=जो विरुद्ध, अप्रत्यक्ष हो (अणु) वह अणु परिमाण है।

The contrary of this is the minute.

सं० कमल गट्टा आंवला आदि में महत्परिमाण होने पर भी अणु है, यह व्यवहार गौण होता है। यह सूत्रकार स्वयं कहते हैं।

अणु महदिति तस्मिन् विशेषभावात् विशेषाभावाच्च 11-270

(अणु) छोटा (महत्) बड़ा (इति) यह व्यवहार (तस्मिन्) उस पदार्थ में (विशेषभावात्) विशेष होने से (च) और (विशेषाभावात्) विशेष न होने से भी होता है। 'अणु' यह व्यवहार गौण तथा 'महत' यह व्यवहार मुख्य हैं।

नोट—एक ही पदार्थ को दूसरे पदार्थ की अपेक्षा से छोटा कहते हैं और उसी को तीसरे पदार्थ की अपेक्षा से बड़ा भी कहते हैं। जैसे एक ही आंवला बिल्प से छोटा और फालसे वड़ा कहलाता है। यहां विशेष शब्द महत् या अणु के लिये सूत्र में प्रयुक्त है।

The notions greater and smaller (arise) in this conception (of a relatively great and a relatively small object) from the existence of particularity, and from the non-existence of particularity.

सं० उक्त दोनों व्यवहारों के मध्य एक के मुख्य और दूसरे के गौण होने में हेतु बतलाते हैं।

एककालत्वात् 12-271

एक काल में होने से, अणु व्यवहार गौण है।

नोट—जिस काल में हम आंवले को बिल्व से छोट कहते हैं उसी एक काल में उसी आंवले को फालसे से वड़ा भी कहते हैं।

Because the time is one.

सं० उक्त अर्थ में और हेतु कहते है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

दृष्टान्ताच्च 13-272

(च) और (दृष्टान्तात्) दृष्टान्त से भी सिद्ध है।

नोट—जैसे गौ हाथी से छोटी और बकरी से बड़ी होती है।

Also because of the example.

सं० तो क्या छोटेपन का छोटापन और बड़ेपन का बड़ापन भी होता है ? उत्तर नहीं, क्योंकि—

अणुत्वमहत्त्वयोरणुत्वमहत्त्वाऽभावः कर्म-गुणैर्व्याख्यातः 14-273

(अणुत्वमहत्त्वयोः) छोटापन और बड़ापन का (अणुत्वमहत्त्वाभावः) अन्य छोटापन और बड़ापन नहीं होता यह बात (कर्मगुणैः) कर्म और गुणों के व्याख्यान में (व्याख्यातः) कही गई है।

The non existence of greatness and smallness in greatness and smallness, is explained by greatness and smallness.

सं० इसी बात को अगले सूत्र में भिन्न-भिन्न करके समझाते हैं कि—

कर्मभिः कर्माणि गुणैश्च गुणा व्याख्याताः 15-274

(कर्मभिः) उत्क्षेपणादि विशिष्ट कर्मों से (कर्माणि) कर्म (च) और (गुणैः) रूपादि विशिष्ट गुणों से (गुणाः) गुण की (व्याख्याताः) व्याख्या हो चुकी है। अथवा कर्मों से रहित कर्म, गुणों से रहित गुण व्याख्यात हैं।

Actions are explained to be (Void) of actions, and qualities of qualities.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सं० तथा

अणुत्वमहत्त्वाभ्यां कर्मगुणाश्च व्याख्याताः 16-275

(अणुत्वमहत्त्वाभ्यां) अणुत्व और महत्त्व के व्याख्यान से (कर्णगुणाः) कर्म और गुण (च) भी (व्याख्याताः) कहे गये समझो।

नोट—जिस प्रकार अणुत्व का अणुत्व नहीं होता और महत्त्व का महत्त्व नहीं होता इसी प्रकार गुण और कर्मों में अगुणत्व और महत्त्व नही।

Actions moreover and qualities are explained to be (Void) of smallness and greatness.

सं० और

एतेन दीर्घत्वह्रस्वत्वे व्याख्याते 17-276

(एतेन) इससे (दीर्घत्वहस्वत्वे) दीर्घता और ह्रस्वता (व्याख्याते) व्याख्या किये गये समझो।

By this length and shortness are explained.

सं० शंका अणुत्व, महत्त्व, दीर्घत्व और ह्रस्वत्व, ये चारों परिमाण नित्य हैं या अनित्य ? उत्तर

अनित्येऽनित्यम् 18-277

(अनित्ये) अनित्य द्रव्य में (अनित्यम्) यह चारों परिमाण अनित्य होते हैं।

In the non-eternal (extension) is non-eternal.

सं० और

नित्ये नित्यम् 19-278

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(नित्ये) नित्य द्रव्य में (नित्यम्) परिमाण भी नित्य होते हैं।

In the eternal it is eternal.

सं० वैशेषिक शास्त्र के सिद्धान्त का उदाहरण देते हैं।

नित्यं परिमण्डलम् 20-279

(परिमण्डलम्) परमाणु का परिमाण (नित्यम्) नित्य है।

नोट—जैसे परमाणु द्रव्य नित्य है, वैसे उसका परिमाण भी नित्य है। वैशेषिक शास्त्र की परम्परा में **'परिमण्डल'** या **'पारिमाण्डल्य'** परमाणु को कहते हैं।

न्यायसिद्धान्तयुक्तावली में विश्वनाथ ने कहा है।

पारिमाण्डल्यभिन्नानां कारणत्वमुदाहृतम्।

Atomic extension is eternal.

सं० शंका = इसका कैसे निश्चय हो कि परमाणु में भी परिमाण है ? उत्तर

अविद्या च विद्यालिंगम् 21-280

(अविद्या) अविद्या (च) भी (विद्यालिंगम्) विद्या की पहचान है। अर्थात् अविद्या विद्या का अनुमापक है। सरसों, आंवला बेलफल इत्यादि द्रव्यों में आपेक्षिक अणु-महत् परिमाण का व्यवहार होता है। परन्तु वस्तुतः ये सभी द्रव्य महत् परिमाण वाले हैं।

Ignorance, moreover, is an indication of knowledge.

सं० आकाश और आत्मा में महत्परिमाण है।

विभवान्महानाकशस्तथा चात्मा 22-281

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(विभवात्) व्यापक होने से (आकाशः) आकाश (च) और (आत्मा) आत्मा (महान्) महत्त्व परिमाण वाले हैं।

नोट—यहां आत्मा शब्द से जीवात्मा और परमात्मा दोनों का ग्रहण हो सकता है पर आकाश के साथ उपमानोपमेय होने से परमात्मा का ग्रहण ही उचित है।

Ether, in consequence of its universal pervasion, is infinitely great, and so likewise is soul.

सं० मन में अणु परिमाण हैं इसका वर्णन करते हैं।

तदभावादणुमनः 23-282

(तत्) उस व्यापकता के (अभावात्) न होने से (मनः) मन (अणु) अणु है।

In consequence of non-existence of that (universal pervasion) the internal organ is absolutely small.

सं० दिक् का परिमाण कहते हैं।

गुणैर्दिग्व्याख्याता 24-283

(गुणैः) गुणों के साथ (दिक्) दिशा की (व्याख्याता) भी व्याख्या हो गई।

By its qualitics space is explained (to be all comprehensive)

सं० काल की व्यापकता को बतलाते हैं।

कारणे कालः 25-284

(कारणे) कारण में (कालः) काल है। अर्थात् काल का व्याख्यान हो गया।

नोट—पर अपर आदि व्यवहार के कारण में काल ऐसा नाम है।

Time relates to a cause.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सप्तम अध्याय द्वितीय आह्निक

सं० संख्या की परीक्षा करते हुए प्रथम उसको रूपादि गुणों से उसको भिन्न कथन करते हैं।

रूपरसगन्धस्पर्शव्यतिरेकादर्थान्तरमेकत्वम्

1-285

(रूपरसगन्धस्पर्शाः) रूप-रस-गन्ध और स्पर्श के (व्यतिरेकात्) अभाव से (एकत्वम्) एकत्व आदि संख्या (अर्थान्तरम्) भिन्न पदार्थ है।

Because of the exclusion of colour, taste, smell, and touch, unity is a different object.

सं० और भी

तथा पृथक्त्वम् 2-286

(तथा) इसी प्रकार (पृथक्त्वम्) पृथक्त्व गुण भी रूपादियों से भिन्न है।

नोट—जैसे एक घट दूसरे घट से पृथक् है तब घट का एक होना और दूसरे घट से पृथक् होना रूपादि गुणों के अन्तरगत नहीं हो सकता।

Likewise individuality.

सं० एकत्व में एकत्व का तथा पृथक्त्व मे पृथक्त्वा का लोक व्यवहार देखा जाता है, क्या यह यथार्थ है ?

एकत्वैकपृथक्त्वयोरेकत्वैकपृथक्त्वाभावोऽणुत्वमहत्त्वाभ्यां व्याख्यातः 3-287

(एकत्वैकपृथक्त्वयोः) एकत्व और एक पृथक्त्व में (एककत्वैकपृथक्त्वाभावः) दूसरे एकत्व और दूसरे एकपृथक्त्व का अभाव है जो (अणुत्व महत्त्वाभ्याम) अणत्व और महत्त्व के साथ (व्याख्यातः) वर्णन किया गया है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Maharishi Vedic University

The non-existence of unity, and single individuality in unity and single individuality is explained by smallness and greatness.

सं० इसी अर्थ को पुष्ट करते हुए सूत्रकार ने बताया।

निःसंख्यत्वात्कर्मगुणानां सर्वैकत्वं न विद्यते 4-288

(कर्मगुणानां) कर्मों और गुणों के (निःसंख्यत्वात्) संख्या रहित होने से (सर्वैकत्वम्) सबका एक होना (न) नहीं (विद्यते) होता।

Unity does not exist in all things, for actions and qualities are void of number.

सं० कर्म और गुण में संख्या की प्रतीति भ्रम है इसका वर्णन करते हैं।

भ्रान्तं तत् 5-289

(तत्) कर्म और गुण में जो संख्या प्रतीत होती है वह (भ्रातं) भ्रम है।

नोट—गुण और कर्म में एकत्व हीने का ज्ञान भ्रान्त है। ज्ञान शब्द सूत्र में शेष है।

That (notion) is erroneous.

सं० एक घड़ा, एक वस्त्र, एक द्रव्य, इत्यादि लौकिक प्रयोग भी क्या गौण समझने चाहिये ? नहीं

एकत्वाभावाद् भक्तिस्तु न विद्यते 6-290

(एकत्वाभावाद्) एकत्व न होने से (तु) तो (भक्ति) गौणता (न) नहीं (विद्येत) है।

नोट—प्रधान प्रयोग पूर्वक ही गौण प्रयोग होता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

In consequence of non-existence of unity, secondariness does not exist.

सं० कार्य, कारण और पृथक्त्व का भेद बतलाते हैं।

कार्यकारणयोरेकत्वैकपृथक्त्वाभावादेकत्वैकपृथक्त्वं न विद्यते 7-291

(कार्यकारणयोः) कार्य और कारण में (एकत्वैकपृथक्त्वाभावात्) एकत्व और एकपृथक्त्व न होने से (एकत्वैकपृथक्त्वं) एकत्व और एकपृथक्त्व (न) नहीं (विद्यते) है।

Of cause and effect there is not unity and single individuality, in consequence of the non existence of unity and single individuality:

सं० तथा

एतदनित्ययोर्व्याख्यातम् 8-292

(एतद्) यह नियम (अनित्ययोः) अनित्व एकत्व, और एकपृथक्त्व में (व्याख्याताम्) व्याख्यान किया गया है।

This is explained in relation to non-eternal (cause and effect.

सं० अब संयोग की परीक्षा करते हैं।

अन्यतरकर्मजः उभयकर्मजः संयोगश्च संयोगः 9-293

(अन्यतरकर्मजः) दो में से किसी एक के कर्म से उत्पन्न होने वाला (उभयकर्मजः) दोनों के कर्म से उत्पन्न होने वाला (च) और (संयोगजः) संयोग से उत्पन्न होने वाला (संयोगः) संयोग होता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

Conjunction is produced by the action, of one of the two conjunct objects, by the action of both, and by conjunction.

सं० विभाग का व्याख्यान करते हैं।

एतेन विभागो व्याख्यातः 10-294

(एतेन) इस संयोग के व्याख्यान से तीन प्रकार के (विभागः) विभाग का भी (व्याख्यातः) व्याख्यान हो गया।

By this disjunction is explained.

सं० जैसे द्रव्य में संयोग विभाग रहते हैं, ऐसे संयोग में संयोग और विभाग में विभाग रहता है, या नहीं ?

संयोगविभागयोः संयोगविभागाभावोऽणुत्व-महत्त्वाभ्यां व्याख्यातः 11-295

(संयोगविभागयोः) संयोग और विभाग में (संयोगविभागाभावः) संयोग और विभाग का अभाव है। यह (अणुत्वमहत्त्वाभ्यां) अणुत्व और महत्त्व के द्वारा (व्याख्यातः) कहा गया समझना चाहिये।

The non-existence of conjunction and disjunction in conjunction and disjunction is explained by smallness and greatness.

सं० जो अणुत्व, महत्त्व में अणुत्व महत्त्व के अभाव का विस्तारपूर्वक निरूपण पीछे किया गया है, अब उसका स्मरण करते हैं।

कर्मभिः कर्माणि, गुणैश्च गुणाः अणुत्वमहत्त्वा-भ्यामिति 12-296

(इति) ऐसा पीछे कहा गया है कि (कर्मभिःकर्माणि) कर्मों के साथ कर्म (च) और (गुणैः, गुणाः) गुणों के साथ गुण (अणुत्वमहत्त्वाभ्याम्) अणुत्व और महत्त्व के द्वारा कहा गया समझना चाहिये।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

Actions (are explained to be void) of actions and qualities by smallness and greatness.

सं० कार्यद्रव्य और कारणद्रव्य दोनों के परस्पर संयोग विभाग का निषेध करते हैं।

युतसिद्धयभावात् कार्यकारणयोः संयोगविभागौ न विद्येते 13-297

(कार्यकारणयोः) कार्य और कारण का (संयोगविभागौ) संयोग और विभाग (न) नहीं (विद्यते) होता क्योंकि (युतसिद्ध्यभावत्) जुड़ा हुआ होना सिद्ध न होने से।

नोट—कारण मृत्तिका में कार्य घट जुड़ा हुआ सिद्ध नहीं हो सकता। इसलिये घट और मृत्तिका में जो कि कार्य और कारण हैं, संयोग और विभाग नहीं मान सकते। स्वतन्त्र स्थिति का नाम **'युतसिद्धि'** है अथवा युतसिद्धि पद वैशेषिक शास्त्र में पारिभाषिक है—परस्पर सम्बन्ध से रहित दो द्रव्यों की स्थिति युतसिद्धि कही जाती है।

Inasmuch as there is non-existece of unconnectedness, there exist not conjunction and disjunction in an effect and its cause.

सं० सूत्रकार पूर्व पक्ष से प्रकरण का आरम्भ करते हैं।

गुणत्वात् 14-298

(गुणत्वात्) गुण होने से (द्रव्य और गुण में संयोग और विभाग नहीं मान सकते)

Inasmuch as it is a quality (a word has not conjunction with the object which it denotes)

सं० उक्त अर्थ की सिद्धि में और हेतु कथन करते हैं।

गुणोऽपि विभाव्यते 15-299

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(गुणः) गुण (अपि) भी (विभाव्यते) शब्द से प्रतिपादन किया जाता है।

A quality also is implied.

सं० क्योंकि

निष्क्रियत्वात् 16-300

क्रिया रहित होने से (शब्द का अर्थ के साथ संयोग सम्बन्ध नहीं है; क्योंकि संयोग तो क्रिया से उत्पन्न होता है)

Inasmuch as there is no action (in the term and the object denoted by it, there exist no conjunction between them.)

सं० और

असति नास्तीति च प्रयोगात् 17-301

(असति) असत् पदार्थ में (च) भी (न अस्ति) नहीं है (इति) ऐसा (प्रयोगात्) प्रयोग होने से।

नोट—घट पदार्थ के नहीं होने पर **'नास्ति घटः'** घट नहीं है, ऐसा प्रयोग होता है इससे स्पष्ट है कि अर्थ के अभाव में भी शब्द है।

Inasmuch also as the expression is not is used of the non existent.

सं० इससे सिद्ध हुआ कि—

शब्दार्थवसम्बन्धौ 18-302

(शब्दार्थौ) शब्द और अर्थ, (असम्बन्धौ) सम्बन्ध रहित हैं।

The word and its meaning are without connection.

सं० शब्द और अर्थ में परस्पर संयोग तथा समवाय सम्बन्ध क्यों नहीं? सूत्रकार कहते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

संयोगिनो दण्डात् समवायिनो विशेषाच्च 19-303

(संयोगिनः) संयोगी पुरुष का (दण्डात्) दण्ड से (च) और (समवायिनः) सम्वाय सम्बन्ध वाले का (विशेषात्) विशेष अवयव से (जैसे ग्रहण होता है वैसे अर्थ का ग्रहण शब्द से नहीं होता।)

नोट—यदि अर्थ के साथ शब्द का संयोगसम्बन्ध अथवा समवायसम्बन्ध होता तो अर्थ के साथ शब्द की प्रतीति होती। परन्तु ऐसा तो नहीं होता, इससे प्रतीत होता है कि शब्द के साथ अर्थ का कोई सम्बन्ध नहीं। जैसे हाथी का सूंड के साथ अवयव विशेष से सम्बन्ध है और दण्डी पुरुष का दण्ड के साथ संयोगासम्बन्ध है तब दण्डी पुरुष के साथ दण्ड और हाथी के साथ उसकी सूंड का ग्रहण होता परन्तु घटदर्शन के साथ घट शब्द का ग्रहण नहीं होता। इसलिये शब्द और अर्थ न तो संयोग सम्बन्ध है और न ही सम्वाय सम्बन्ध है।

(The cognition) of that which possesses conjunction (results from knowledge of the conjunct as) from a staff, and (the cognition) of that which possesses co-inhesion (results) from the particular.

A man with a staff and an elephant with a trunrk.

सं० शंका—यदि शब्द और अर्थ में दोनों प्रकार का सम्बन्ध नहीं है तो शब्द से अर्थ का ज्ञान क्यों होता है ? उत्तर

सामयिकः शब्दादर्थप्रत्ययः 20-304

(शब्दात्) शब्द से (अर्थप्रत्ययः) जो अर्थ का ज्ञान होता है वह (सामयिकः) सांकेतिक है।

नोट—ईश्वर के संकेत को समय कहते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

The recognition of a meaning from a word is conventional. तौतातिका: = **प्रभाकरमीमांसका:**

सं० परत्व और अपरत्व का वर्णन करते हैं।

एकदिक्काभ्यामेककालाभ्यां सन्निकृष्टविप्रकृष्टाभ्यां परमपरञ्च 21-305

(एकदिक्काभ्याम्) एक ही दिशा में रहने वाले (एककालाभ्याम्) एक ही काल में रहने वाले (सन्निकृष्टविप्रकृष्टाभ्याम्) समीप और दूर से (परम्) परत्व (च) और (अपरत्वम्) अपरत्त्व होता है।

The prior and posterior (are produced) by two objects occupying the same space and time and near and remote.

सं० कालिक परत्व और अपरत्व गुण में सूत्रकार विशेष कहते हैं।

कारणपरत्वात् कारणापरत्वाच्च 22-306

(कारणपरत्वात्) कारण के समीप होने से परत्व (च) और (कारणापरत्वात्) कारण के दूर होने से अपरत्व होता है।

(Priority and posteriority result) from posteriority of the cause, and from priority of the cause.

०सं परत्वापरत्व में परत्वापरत्व का अभाव कहते हैं।

परत्वापरत्वयोः परत्वापरत्वाभावोऽणुत्वमहत्त्वाभ्यां व्याख्यातः 23-307

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(परत्वापरत्वयोः) परत्व और अपरत्व का (परत्वापरत्वाभावः) दूसरा परत्व और अपरत्व न होना (अणुत्वमहत्त्वाभ्याम्) अणुत्व और महत्त्व के साथ (व्याख्यातः) व्याख्या हो चुकी है।

The non-existence of priority and posteriority in priority and posteriority, is explained by minuteness and greatness.

सं० अणुत्व महत्व में अणुत्व महत्वाभाव का विस्तारपूर्वक वर्णन करते हैं।

कर्मभिः कर्माणि 24-308

(कर्मभिः) कर्मों से (कर्माणि) कर्म कहे जा चुके हैं।

Actions (are void) of actions.

सं० सूत्रकार ने इसी विषय में अन्य उदाहरण कहा।

गुणैर्गुणाः 25-309

(गुणैः) गुणों से (गुणाः) गुण कहे जा चुके हैं।

Qualities (are void) of qualities.

सं० शंका = समवाय क्या पदार्थ है ? उत्तर

इहेदमिति यतः कार्यकारणयोः स समवायः 26-310

(इह) इसमें (इदं) यह है (इति) इस प्रकार का ज्ञान (यतः) जिसके कारण (कार्यकारणयोः) कार्य और कारण में = अवयव और अवयवी में होता है (सः) वह (समवायः) समवाय है।

That is co-inherence by virtue of which it may be said of cause and effect that the one is in the other.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सं० द्रव्य से लेकर विशेष पर्यन्त पांच पदार्थों से समवाय सम्बन्ध पदार्थ का भेद सूत्रकार कहते हैं।

द्रव्यत्वगुणत्वप्रतिषेधो भावेन व्याख्यातः 27-311

(द्रव्यत्वगुणत्वप्रतिषेधः) द्रव्यत्व और गुणत्व का निराकरण (भावेन) सत्ता से (व्याख्यातः) व्याख्या किया गया है।

The negation of the essence of substance and quality is explained by existence.

सं० संवाय एक ही है।

तत्त्वं भावेन 28-312

वह संवाय (तत्त्वं) एक है और (भावेन) सत्ता जाति के समान नित्य है। अर्थात् समवाय एक है और नित्य है।

Its reality (is explained) by existence.

अष्टम अध्याय प्रथम आह्निक

सं० बुद्धि नामक गुण की परीक्षा अष्टम अध्याय का विषय है। बुद्धि की परीक्षा करते हुए प्रथम उसके भेद प्रत्यक्ष की परीक्षा का आरम्भ करते हैं।

द्रव्येषु ज्ञानं व्याख्यातम् 1-313

(द्रव्येषु) पृथिवी आदि द्रव्यों में (ज्ञानं) बुद्धि नामक गुण का (व्याख्यातं) निरूपण किया गया है।

Cognition was explained among substance.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सं० परन्तु

तत्रात्मा मनश्चाप्रत्यक्षे 2-314

(तत्र) उनमें (आत्मा) आत्मा (च) और (मनः) मन (अप्रत्यक्षे) प्रत्यक्ष नहीं हैं।

संकेत—'च' शब्द से वायु, आकाश, काल, दिशा, और परमाणुओं, का ग्रहण है।

Therein soul and the internal sense are imperceptible.

सं० प्रत्यक्ष ज्ञान की उत्पत्ति का प्रकार बतलाते हैं।

ज्ञाननिर्देशे ज्ञाननिष्पत्तिविधिरुक्तः 3-315

(ज्ञाननिर्देशे) जहां ज्ञान का निर्देश किया है वहां (ज्ञाननिष्पत्तिविधिः) ज्ञान प्राप्त होने की रीति (उक्तः) बतलाई जा चुकी है।

The mode in which cognition is originated has been stated in the enunciation of cognition.

सं० उस ज्ञान की उत्पत्ति की विधि किस प्रकार है।

गुणकर्मसु सन्निकृष्टेषु ज्ञाननिष्पत्तेर्द्रव्यं कारणम् 4-316

(सन्निकृष्टेषु) इन्द्रियों के समीप आये हुए (गुणकर्मसु) गुणों और कर्मों में (ज्ञाननिष्पत्तेः) ज्ञान की उत्पत्ति से (द्रव्यम्) द्रव्य (कारणम्) ज्ञान का कारण है।

Qualities and actions being brought into contact (with the organs of sense), substance is the cause of production of cognition.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सं० और

सामान्यविशेषेषु सामान्यविशेषाभावात् ततएव ज्ञानम् 5-317

(सामान्यविशेषेषु) सामान्य और विशेषों में (सामान्यविशेषाभावात्) दूसरा सामान्य और दूसरा विशेष न होने से (ततः) उनसे (एव) ही (ज्ञानम्) ज्ञान होता है।

Inasmuch as in universals and particulars there exist not universals and particulars, cognition of general and special essences results thence (from contact effected by substance.)

सं० शंका —किस की अपेक्षा से द्रव्य गुण कर्म विषयक ज्ञान उत्पन्न होता है? उत्तर

सामान्यविशेषापेक्षं द्रव्यगुणकर्मसु 6-318

(द्रव्यगुणकर्मसु) द्रव्यों, गुणों और कर्मों के विषय में (सामान्यविशेषापेक्षं) सामान्य और विशेष की अपेक्षा से ज्ञान उत्पन्न होता है।

(Cognition) of substances, qualities, and actions supposes the universal and particular.

सं० उसमें भी

द्रव्ये द्रव्यगुणकर्मापेक्षम् 7-319

(द्रव्ये) द्रव्य विषय में (द्रव्यगुणकर्मापेक्षम्) द्रव्य, गुण और कर्म की अपेक्षा वाला ज्ञान उत्पन्न होता है।

(Cognition) of substance supposes substunce, quality and action.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सं० परन्तु

गुणकर्मसु गुणकर्माऽभावाद् गुणकर्मापेक्षं न विद्यते 8-320

(गुणकर्मसु) गुणों और कर्मों में (गुणकर्माऽभावात्) दूसरे गुण और कर्म न होने से (गुणकर्मापेक्षम्) गुणों और कर्मों की अपेक्षा वाला ज्ञान (न) नहीं (विद्यते) होता है।

Inasmuch as there exist no qualities and actions in qualities and actions, there is no cognition thereof which supposes qualities and actions.

सं० उदाहरण

समवायिनः श्वैत्याच्छ्वैत्य बुद्धेश्च श्वेते बुद्धिः, ते एते कार्यकारणभूते 9-321

(समवायिनः) समवाय सम्बन्ध से रहने वाले किसी द्रव्य के (श्वैत्यात्) श्वेत होने से (च) और (श्वैत्यबुद्धेः) श्वेतत्व के ज्ञान से (श्वेते) श्वेत द्रव्य में (बुद्धिः) ज्ञान उत्पन्न होता है (ते) वे दोनों (एते) ये (कार्यकारणभूते) कार्यरूप और कारणरूप ज्ञान हैं।

सं० शंख में श्वेतता समवाय सम्बन्ध से रहती है शंख की श्वेतता (सफेदी) कारण ज्ञान है और श्वेत शंख का ज्ञान कार्यज्ञान है।

The cognition of a white object results from the whiteness of the substratum, and from the cognition of whiteness, and these same stand in a relation of cause and effect. Whiteness of the conch.

सं० परन्तु

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

द्रव्येष्वनितरेतरकारणाः 10-322

(द्रव्येषु) अनेक द्रव्यों में जो अनेक ज्ञान उत्पन्न होते हैं वे (अनितरेतर-कारणाः) एक दूसरे के कारण नहीं होते।

(Cognitions) of substances are not causes one of the other.

सं० क्योंकि—

कारणाऽयौगपद्यात् कारणक्रमाच्च घटपटादि बुद्धीनां क्रमो न हेतुफलभावात् 11-323

(कारणाऽयौगपद्यात्) कारणों के एक साथ उत्पन्न न होने से (च) और (कारणक्रमात्) कारणों के क्रमपूर्वक होने से (घटपटादिबुद्धीनाम्) घट पट आदि ज्ञानों में (क्रमः) क्रम होता है। (न) न कि (हेतुफलभावात्) कारण का फल होने से।

The sequence of the cognitions of the water-pot, piece of cloth, resulting from non-simultaneity of the causes (of the cognitions), and from the sequence of their causes, does not result from a relation of cause and effect.

आठवां अध्याय द्वितीय आह्निक

सं० अब ज्ञान के प्रकार का उदाहरण देते हैं।

अयमेष त्वया कृतं भोजयैनमितिबुद्ध्यपेक्षम् 1-324

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(अयम्) यह है, (एषः) वह है, (त्वया कृतं) तुम ने किया, (एनंभोजय) इनको भोजन कराओ (इति) इस प्रकार का ज्ञान (बुद्ध्यपेक्षम्) भिन्न-भिन्न बुद्धियों से होता है।

This, That, Done by thee, Feed him, such expressions are relative to cognition.

सं० ऐसे ज्ञान की अपेक्षा क्यों होती है ? तो सूत्रकार ने बताया।

दृष्टेषु भावाददृष्टेश्वभावात् 2-325

(दृष्टेषु) देखे हुए विषयों में (भावात्) होने से (अदृष्टेषु) न देखे हुए विषयों में (अभावात्) न होने से।

Inasmuch as (such expressions) exist in reference to objects seen, and do not exist in reference to objects unseen.

सं० वैशेषिक शास्त्र में 'अर्थ' शब्द से किसका ग्रहण होता है ? उत्तर

अर्थ इति द्रव्यगुणकर्मसु 3-326

(अर्थ इति) बैशेषिक शास्त्र में 'अर्थ' इस शब्द से (द्रव्यगुणकर्मसु) द्रव्य गुण कर्म तीनों का ग्रहण होता है।

The term object applies to substances, qualities and actions.

सं० सूत्रकार दूसरे प्रकरण का अवतरण करते हैं।

द्रव्येषु पञ्चात्मकत्वं प्रतिषिद्धम् 4-327

(द्रव्येषु) द्रव्यों में (पञ्चात्मकत्वम्) पञ्चात्मक होने का (प्रतिषिद्धम्) निषेध किया गया है।

Under substances identity with the five elements was denied.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सं० जैसे

भूयस्त्वाद् गन्धवत्त्वाच्च पृथिवी गन्धज्ञाने प्रकृतिः 5-328

(भूयस्त्वाद्) बहुत होने से (च) और (गन्धवत्त्वात्) गन्ध वाला होने से (पृथिवी) पृथिवीतत्त्व (गन्धज्ञाने) गन्ध का ज्ञान कराने में नासिका इन्द्रिय (प्रकृतिः) कारण है।

In the cognition of odour earth is the matter, inasmuch as it possesses plurality and odour.

सं० तथा

तथापस्तेजोवायुश्च रसरूपस्पर्शज्ञानेऽविशेषात् 6-329

(तथा) इसी प्रकार (अविशेषात्) समान होने से (रसरूपस्पर्शज्ञाने) रस, रूप, और स्पर्श, के ज्ञान कराने वाले रसना, चक्षु, और त्वचा इन्द्रियों में क्रम से (आपः) जल (तेजः) तेज (च) और (वायुः) वायु कारण हैं।

In like manner water, light, and air, are (the material causes of the organs of taste, sight and touch), inasmuch as they have no difference from taste, colour, and touch.

नवम अध्याय प्रथम आह्निक

सं० प्रागभाव का वर्णन करते हैं।

क्रियागुणव्यवदेशाऽभावात् प्रागऽसत् 1-330

(क्रिया गुणव्ययदेशाऽभावात्) क्रिया और गुण का व्यवहार न पाया जाने से (प्राक्) उत्पत्ति से पूर्व (असत्) कार्यमात्र असत् होता है। इस सूत्र से प्रागभाव की सिद्धि होती है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(An effect) is antecedently non-existent, inasmuch as there is non-existence of assertion of actions and qualities.

सं० ध्वंसाभाव का वर्णन करते हैं।

सदसत् 2-331

सत् असत् हो जाता है।

नोट—इस सूत्र में जो है, वह नहीं रहता, जैसे जो घट है वह दण्डादि के घात से टूट गया तो जो सत् है वह असत् हो गया।

The existent (becomes) non-existent.

सं० अभाव-द्रव्य गुण कर्मरूप नहीं है। ये अभाव से भिन्न हैं। सूत्रकार बतलाते हैं।

असतः क्रियागुणव्यपदेशाभावादर्थान्तरम् 3-332

(क्रियागुणव्यपदेशाभावात्) क्रिया और गुण के व्यवहार के अभाव से (असतः) असत् से सत् (अर्थान्तरम्) भिन्न पदार्थ है।

(Existence) is a thing distinct from non-existence inasmuch as actions and qualities are not ascribed (to the non-existent)

सं० अन्योन्याभाव का वर्णन करते हैं।

सच्चासत् 4-333

(सत्) सत् (असत्) असत् (च) भी होता है।

नोट—घोड़ा गाय नहीं, गाय घोड़ा नहीं

The existent also is non-existent.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सं० अत्यन्ताभाव का वर्णन करते हैं।

यच्चान्यदसदतस्तदसत् 5-334

(च) और (यत्) जो पदार्थ (अतः) सत्, असत् दोनों विधियों से (अन्यत्) भिन्न है (तत्) वह (असत्) ऐसा असत् है जो कभी सत नहीं होगा।

नोट—आकाश पुष्प, सींगों वाला खरगोश, मरुमरीचिका, रोयों वाला कछुआ आदि।

Whatever else, moreover, than these is non-existent, is (absolutely) non-existent.

सं० ध्वंसाभाव के प्रत्यक्ष का वर्णन करते हैं।

असदिति भूतप्रत्यक्षाभावात् भूतस्मृतेर्विरोधि-प्रत्यक्षवत् 6-335

(असत्) नहीं है, (इति) इस प्रकार (भूतप्रत्यक्षाभावात्) उत्पन्न होकर नष्ट हुए घटादि के प्रत्यक्ष न होने से परन्तु (भूतस्मृतेः) पूर्व में रहे घटादि के स्मरण से (विरोधिप्रत्यक्षवत्) विरोधि घटादिकों के प्रत्यक्ष के समान है।

(Perception) that a thing is non-existent results from non-existence of a past perception, and reminiscence of the past, like the perception of a repugnant object.

सं० प्रागभाव के प्रत्यक्ष का वर्णन करते हैं।

तथाऽभावे भावप्रत्यक्षत्वाच्च 7-336

(तथा) इसी प्रकार ध्वंसाभाव के समान (अभावे) प्रागभाव में (च) भी (भावप्रत्यक्षत्वात्) प्रागभाव का प्रत्यक्ष होता है।

Likewise also from perception of existence is non-existence.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सं० अन्योन्याभाव के प्रत्यक्ष का वर्णन करते हैं।

एतेनाघटोऽगौरधर्मश्च व्याख्यातः 8-337

(एतेन) इससे (अघटः) घट का न होना (अगौः) गौ का न होना (च) और (अधर्मः) धर्म का न होना (व्याख्यातः) व्याख्यान किया गया है।

Hereby are explained the negations not a water-pot, not a cow, and demerit.

सं० अत्यन्ताभाव के प्रत्यक्ष का वर्णन करते हैं।

अभूतं नास्तीत्यनर्थान्तरम् 9-338

(अभूतम्) नहीं हुआ, (न-अस्ति) नहीं है (इति) ये दोनों (अनर्थान्तरम्) एक दूसरे से भिन्न नहीं, अर्थात् एक ही अर्थ के वाचक हैं।

(The negation) Is not designates nought else than that which has not been.

सं० जैसे

नास्ति घटोगेहे इति, सतो घटस्य गेहसंसर्ग प्रतिषेधः 10-339

(गेहे) घर में (घटः) घट (न अस्ति) नहीं है (इति) इस कथन में (सतः) वर्तमान (घटस्य) घट का (गेहसंसर्गप्रतिषेधः) घर के साथ संसर्ग का प्रतिषेध है। प्रतिषेध = न होना

(The proposition) that there is not a water-pot in a house, is a negation of connection between an existent water-pot and the house.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सं० यहां तक बाह्येन्द्रियप्रत्यक्ष की परीक्षा कही, आगे मानसिक प्रत्यक्ष का वर्णन करते हैं।

आत्मन्यात्ममनसोः संयोगविशेषादात्म प्रत्यक्षम् 11-340

(आत्मनि) आत्मा में (आत्ममनसोः) आत्मा और मन के (संयोग-विशेषात्) संयोग विशेष से (आत्मप्रत्यक्षम्) आत्मा का प्रत्यक्ष ज्ञान होता है।

Perception of the soul (re ults) from a particular conjunction between the soul and the internal organ in the soul.

सं० उस दशा में युक्तयोगी को न केवल आत्मा का प्रत्यक्ष होता है, अपितु अन्य सूक्ष्मातिसूक्ष्म द्रव्यादि पदार्थों का भी प्रत्यक्ष हो जाता है। इस पर सूत्रकार कहते हैं।

तथा द्रव्यान्तरेषु प्रत्यक्षम् 12-341

(तथा) इसी प्रकार (द्रव्यान्तरेषु) दूसरे परमाणु आदि द्रव्यों में (प्रत्यक्षम्) प्रत्यक्ष ज्ञान होता है।

Likewise perception of other substances.

सं० वियुक्त योगी के प्रत्यक्ष ज्ञान को सूत्रकार कहते हैं।

असमाहितान्तः करणा उपसहृतसमाधयस्तेषाञ्च 13-342

(असमाहितान्तःकरणाः) जिनका अन्तःकरण निरन्तर समाधि में स्थित नहीं रहता (च) और (उपसंहृतसमाध्यः) जिनका योगपूर्ण हो गया है (तेषां) उन दोनों प्रकार के योगियों को आत्मादि सम्पूर्ण सूक्ष्म द्रव्यों का प्रत्यक्ष होता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

नोट—योगी दो प्रकार के होते हैं, एक **कदाचित् समाहित अन्त:करण** दूसरे **सर्वदा समाहित अन्त:करण**। वैशेषिकों की परिभाषा में पहले को **असमाहित अन्त:करण** और दूसरे को **उपसंहृतसमाधि** कहते हैं।

In those also whose internal organ is not meditative, and in those whoes meditation is consummated (there is perception of soul, exsion etc.)

सं० द्रव्यों में होने वाले गुण और कर्म का भी योगी को प्रत्यक्ष होता है।

तत् समवायात्कर्मगुणेषु 14-343

(तत्) उसके (समवायात्) समवाय सम्बन्ध से (कर्मगुणेषु) कर्म औरगुण पदार्थों में भी योगी को प्रत्यक्ष होता है।

(Perception) of actions and qualities (arises) from co-inherence therein.

सं० आत्मसाक्षात्कार हो जाने से आत्मगुणों का साक्षात्कार हो जाता है।

आत्मसमवायादात्मगुणेषु 15-344

(आत्मसमवायात्) आत्मा में समवाय सम्बन्ध से रहने के कारण (आत्मगुणेषु) आत्मा के गुणों का भी योगी को प्रत्यक्ष होता है।

(Perception) of the attributes of the soul (arises) from co-inherence in soul.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

नवम अध्याय द्वितीय आह्निक

सं० अनुमान का वर्णन करते हैं।

अस्येदं कार्यं, कारणं, संयोगि, विरोधि, समवायि, चेति लैंगिकम् 1-345

(अस्य) इसका (इदं) यह (कार्य) कार्य है, यह (कारणं) कारण है (संयोगि) संयोगी है (विरोधि) विरोधी है (च) और (समवायि) सदा साथ मिला रहने वाला है (इति) इसको (लैङ्गिकम्) लिंग से होने वाला कहा है।

नोट—कार्य को देखकर कारण का, कारण को देखकर कार्य का, संयोग को देखकर संयोगी का विरोध को देखकर विरोधी का, और समवाय को देखकर समवायी का ज्ञान होता है, उसको लैंगिक=अनुमान ज्ञान कहते हैं।

Inferential cognition is that one thing is the effect or cause of, conjunct with, repugnant to, or co-inherent in, another.

विरोधी से जैसे फुंकार छोड़ते फूलते क्रोधित सर्प को देखकर झाड़ी की ओट में नकुल के होने का अनुमान होता है। समवायि से जैसे जल की गरमी से तेज का अनुमान होता है।

An ichneumon (mongoose) concealed by bushes, from observation of an excited snake.

सं० लिंगलिंगी के सम्बन्ध ज्ञान का वर्णन करते हैं।

अस्येदं कार्यकारणसम्बन्धश्चावयवाद् भवति 2-346

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(अस्य) इस लिंगी (व्याप्य) का (इदम्) यह लिंग (व्यापक) है (च) और (कार्यकारणसम्बन्धः) कार्य कारण सम्बन्ध है यह ज्ञान (अवयवात्) उदाहरण से (भवति) होता है।

नोट—महानस=रसोईघर में धूम और वह्नि का एक स्थान में होना देखा जाता है। धूम=लिंग और वह्नि-लिंगी है।

That one thing belongs to another, the connection of cause and effect, arises from a portion.

The ocean from the rising of the moon, the rise of Canopus from the tranquillity of the water.

सं० शाब्दज्ञान की परीक्षा करते हैं।

एतेन शाब्दं व्याख्यातम् 3-347

(एतेन) इस अनुमान व्याख्यान से (शाब्दम्) शाब्दज्ञान भी (व्याख्यातम्) व्याख्या किया गया है।

By this verbal knowhedge is explained.

सं० लिंग के पयार्य कथन कहते हैं।

हेतुरपदेशोलिंग प्रमाणं करणमित्यनर्थान्तरम् 4-348

हेतु, अपदेश, लिंग, प्रमाण और करण (इति) ये (अनर्थान्तरम्) एक ही अर्थ वाले हैं।

There is no difference of meaning in argument, reason, mark, evidence and instrument.

सं० अनुमान के ही अन्तरगत अन्य उपमानादि प्रमाण आ जाते हैं।

अस्येदमिति बुद्ध्यपेक्षितत्वात् 5-349

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(अस्य) इस कार्य का (इदम्) यह कारण है (इति) यह बात (बुद्ध्य-पेक्षितत्वात्) बुद्धि=ज्ञान पर निर्भर रहने के कारण है।

नोट—उपमानादि अन्य प्रमाण भी अनुमान से पृथक् नहीं। सूत्र में 'अस्य' और 'इदम्' दोनों सर्वनाम पद हैं ये यथाप्रसंग अभिमत अर्थ का बोध कराते हैं।

Because they are implicated in the notion of this belonging to that.

सं० अब स्मृति की परीक्षा करते हैं।

आत्ममनसोः संयोगविशेषात् संस्काराच्च स्मृतिः 6-350

(आत्ममनसोः) आत्मा और मन के (संयोगविशेषात्) संगोगविशेष से (च) और (संस्कारात्) संस्कार से (स्मृतिः) स्मृति ज्ञान होता है।

Reminiscence results from a particular conjunction of the soul with the internal organ, and from reproduction.

सं० स्वप्नदशा में होने वाले स्मृति ज्ञान के विषय में कहते हैं।

तथा स्वप्नः 7-351

(तथा) इसी प्रकार आत्मा और मन के संयोगविशेष से और संस्कार से भी (स्वप्नः) स्वप्न ज्ञान=स्मृति ज्ञान होता है।

नोट—यह असत्य ज्ञान है और कभी-कभी सत्यज्ञान भी हो जाता है।

कृष्णाम्बरधरा नारी कृष्णगन्धानुलेपना।
उपगूहति यं स्वप्ने तस्य मृत्युर्नसंशयः॥

So also dreaming.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सं० स्वप्न के अन्तर्गत होने वाले स्वप्न ज्ञान के विषय में कहते हैं।

स्वप्नान्तिकम् 8-352

इसी प्रकार (स्वप्नान्तिकम्) स्वप्न के अन्तर्गत होने वाला ज्ञान, आत्मा और मन के संयोगविशेष से और संस्कार से भी होता है।

नोट—'तथा' शब्द की पूर्व सूत्र से अनुवृत्ति आ रही हैं।

(So also) consciousness in dreaming.

सं० शंका—स्मृतिज्ञान और स्वप्नज्ञान में भेद पाया जाता है, और कारण दोनों का एक ही है, अर्थात् आत्मा और मन के संयोगविशेष से तथा संस्कार वश स्मृति होती है, और इन्हीं कारणों से स्वप्न भी होता है। तब स्मृति और स्वप्न दो क्यों हैं, एक ही क्यों नहीं—? उत्तर

धर्माच्च 9-353

(धर्मात्) धर्म से (च) भी स्वप्न ज्ञान होता है।

Also from merit.

सं० अब अविद्या की परीक्षा करते हैं।

इन्द्रियदोषात् संस्कारदोषाच्चाऽविद्या 10-354

(इन्द्रियदोषात्) इन्द्रियों के दोष से (च) और (संस्कारदोषात्) संस्कार के दोष से भी (अविद्या) मिथ्याज्ञान होता है।

Nescience results from derangement of the organs of sense, and from imperfection in reproduction.

सं० अविद्या का लक्षण कहते हैं।

तद् दुष्टज्ञानम् 11-355

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(तत्) वह अविद्या (दुष्टज्ञानम्) दोष युक्त ज्ञान है।

नोट—व्यभिचारी ज्ञान को अविद्या कहते हैं।

This is imperfect cognition.

विद्या का लक्षण कहते हैं।

अदुष्टं विद्या 12-356

(अदुष्टं) दोष रहित ज्ञान (विद्या) विद्या है।

नोट—प्रमा या यथार्थ ज्ञान विद्या है।

Free from imperfection it is science.

सं० धर्म से क्या प्राप्त होता है ? उत्तर

आर्षं सिद्धदर्शनञ्च धर्मेभ्यः 13-357

(आर्षं) ऋषि सम्बन्धी ज्ञान, (च) और (सिद्धदर्शनं) सिद्धों का दर्शन भी (धर्मेभ्यः) पूर्व कृत धर्मों से होता है।

The knowledge of inspired sages, and perfect vision result from merits.

दशम अध्याय प्रथम आह्निक

सं० सुख और दुःख दोनों गुणों की परीक्षा करते हुए प्रथम उनका परस्पर भेद कथन करते हैं।

इष्टानिष्टकारणविशेषाद् विरोधाच्च मिथः सुख दुःखयोरर्थान्तरभावः 1-358

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(इष्ट-अनिष्ट कारणविशेषात्) प्रिय और अप्रिय कारणों के भेद से (च) और (विरोधात्) परस्पर विरोध से (सुखदुःखयोः) सुख और दुःख दोनों गुण (मिथः) आपस में (अर्थान्तरभावः) भिन्न हैं।

नोट—इष्ट—जैसे माला, चन्दन, स्त्री आदि, अनिष्ट—सर्प कांटा आदि।

Inasmuch as causes desirable and undesirable are different and opposed, the relation of pleasure and pain is that of reciprocally different objects.

सं० सुख और दुःख दोनों गुणों का ज्ञान से भेद बतलाते हैं।

संशयनिर्णयान्तराभावश्चज्ञानान्तरत्वे हेतुः 2-359

(च) और (संशय-निर्णय-अन्तर-अभावः) संशय और निर्णय के अन्तर्गत न होना भी, (ज्ञान-अन्तरत्वे) ज्ञान से भिन्न होने में (हेतुः) कारण है।

नोट—सुख दुःख की अनुवृत्ति पूर्व सूत्र से आ रही है। संशय दो कोटि में होता है निर्णय एक कोटि में। सुख दुःख, संशय और निर्णय के ज्ञान से भिन्न हैं।

Non-inclusion in doubt and assurance is a mark that (pleasure and pain) are different from cognition.

सं० सुख और दुःख को ज्ञान से भिन्न होने में दूसरा हेतु देते हैं।

तयोर्निष्पत्तिः प्रत्यक्षलैंगिकाभ्याम् 3-360

(तयोः) संशय और निर्णय दोनों की (निष्पत्तिः) उत्पत्ति (प्रत्यक्ष-लैंगिकाभ्याम्) प्रत्यक्ष और अनुमान से होती है।

नोट—सुख और दुःख न प्रत्यक्ष सामग्री से उत्पन्न होता है न अनुमान से।

The production thereof (doubt and assurance) is by means of perception and inference.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सं० अनुमान प्रमाण से सुख दुःख का भेद बतलाते हैं।

अभूदियपि 4-361

(अभूत्) हुआ था (इति) इससे (अपि) और भविष्यत् में होगा। इससे भी सुख दुःख अनुमान से भिन्न हैं।

नोट—ज्ञान में भूत काल का सम्बन्ध रहता है, सुख और दुःख में भूतकाल का सम्बन्ध नहीं रहता। वह सुख और दुःख वर्तमान काल में नहीं होते।

The notion of the past also (is a difference between cognition and pleasure and pain.)

सं० ज्ञान से सुख दुःख के भिन्न होने को पुनः बतलाते हैं।

सति च कार्यादर्शनात् 5-362

(च) और (सति) प्रत्यक्ष ज्ञान और अनुमान ज्ञान के होने पर भी (कार्य-अदर्शनात्) सुख दु ख के कार्य मुख को प्रसन्नता और मुख की मलिनता आदि न देखे जाने से सिद्ध होता है कि ज्ञान से सुख दुःख भिन्न हैं।

Also (pleasure and pain are not form of cognition) inasmuch as the effect is not (always) observed, where (the antecedents) are.

सं० सुख दुःख दोनों गुणों का ज्ञान से भिन्न होने में और हेतु बतलाते हैं।

एकार्थसमवायिकारणान्तरेषु दृष्टत्वात् 6-363

(एक-अर्थ-समदायिकारण-अन्तेषु) एक अर्थ (द्रव्य) में समवाय सम्बन्ध से रहने वाले असाधारण कारणों के (द्रष्टत्वात्) देखे जाते से सिद्ध होता है कि सुख दुःख दोनों गुण ज्ञान से भिन्न हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

Because (pleasure and pain) are observed to depend on other causes co-inherent with the same object.

सं० यदि कारण भेद से ज्ञान, सुख दुःख आदि का परस्पर भेद है, तो शरीर के सिर, पीठ, उदर आदि अंगों का भेद नहीं होना चाहिए, क्योंकि इनके कारण अस्थि, मांस, रुधिर आदि एक हैं। कारण एक होने पर इनका भेद करो ?

एकदेशे इत्येकस्मिन् शिरः पृष्ठमुदरं मर्माणि तद्विशेषस्तद्विशेषेभ्यः 7-364

(एकस्मिन्) एक शरीर में जो (शिरः) सिर (पृष्ठं) पीठ (उदरं) पेट (मर्माणि) सन्धि स्थान (इति) इस प्रकार का जो व्यवहार होता है वह (एकद्रेशे) शरीर के अवयवों में है (तद्विशेषः) उन अवयवों का परस्पर भेद (तद्विशेषेभ्यः) उनके विशेष कारणों से होता है।

The head, the back, the stomach, and the vitals are in one part, in one (body), their difference results from the difference thereof (that is, from the difference of their causes.)

दशम अध्याय द्वितीय आह्निक

सं० कारणों का विशेष रूप से वर्णन करते हैं।

कारणमिति द्रव्ये कार्यसमवायात् 1-365

(कारणं) समवायि कारण है (इति) ऐसा व्यवहार (द्रव्ये) द्रव्य में होता है, क्योंकि (कार्यसमवायात्) कार्यों में समवाय सम्बन्ध होने से।

नोट—कार्यों का समवाय सम्बन्ध द्रव्यों में ही होता है।

The position, with-regard to a substance, that it is a cause, results from the co-inherence of its effects.

सं० निमित्तकारणों का वर्णन करते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

संयोगाद् वा 2-366

(वा) अथवा (संयोगाद्) संयोग के द्वारा द्रव्य निमित्तकारण भी होता है।

Or from conjunction.

सं० कर्म पदार्थ जैसे कारण होते हैं वह कहते हैं।

कारणे समवायात् कर्माणि 3-367

(कारणे) कारण में (समवायात्) समवाय से (कर्माणि) कर्म (असम्वायि कारण होते हैं)

सं० जिस संयोग का कार्य के साथ समवाय है उसी के साथ कर्म का समवाय है।

Through co-inherence in the cause actions [are non coinherent causes]

सं० रूपादि गुणों की उत्पत्ति में असमवायिकारण की व्यवस्था करते हैं।

तथा रूपे कारणैकार्थसमवायाच्च 4-368

(तथा) उसी प्रकार (रूपे) रूप में (कारण-एकार्थ-समवायात्) कारण के साथ एक अर्थ में समवाय होने से (च) भी कारणता का व्यवहार होता है।

Also, likewise, through co-inherence in the same object with the cause in regard to colour.

सं० कर्म और रूपादि गुणों की तरह संयोग भी असम्वायिकरण होता है। उदाहरण

कारणसमवायात् संयोगः पटस्य 5-369

(कारणसमवायात्) कारण में समवाय से (पटस्य) पट का (संयोगः) संयोग असमवायि कारण है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

Conjunction through co-inherence in the cause (is the non-coinherent cause) of a piece of cloth.

सं० 'प्रचय' नाम का शिथिल संयोग महत्परिमाण का असमवायी कारण होता है।

कारणकारणसमवायाच्च 6-370

(कारणकारणसमवायात्) कारण के कारण में समवाय से (च) भी संयोग को कारणता होती है।

नोट—जैसे कई रुई के पिण्डों (balls of cotton) के अवयवों में वर्तमान संयोग रुई के पिण्डों में महत्परिमाण उत्पन्न करता है।

Also through co-inherence with the cause of the cause.

सं० निमित्तकारण का वर्णन करते हैं।

संयुक्तसमवायादग्नेर्वैशेषिकम् 7-371

(संयुक्तसमवायात्) संयुक्त समवाय से (अग्नेः) अग्नि का (वैशेषिकम्) विशेष गुण उष्णता है।

नोट—अग्नि की उष्णता से घटादि में रंग संयुक्त समवाय से होते हैं। पृथिवी क विशेष गुण पाकज है। जो कारण समवायिकारण और असमवायिकारण न हो वही निमित्त कारण है यही **निमित्तकारण** का सामान्य लक्षण है।

The differentiating character of fire (is an operative or efficient cause) through co-inherence with conjunct.

सं० वेद में पूर्व उक्त प्रामाण्य को दृढ़ करने के लिये सूत्रकार कहते है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

दृष्टानां दृष्टप्रयोजनानां दृष्टाभावे प्रयोगोऽभ्युदयाय 8-372

(दृष्टानां) देखे हुए कर्मों का और (दृष्टप्रयोजनानां) जिनका प्रयोजन शास्त्र से और उपदेश से ज्ञात है ऐसे कर्मों का (प्रयोगः) अनुष्ठान (दृष्टाभावे) दृष्ट न होने से अर्थात् दृष्ट फल न होने से, तथा प्रत्यक्ष न होने से भी (अभ्युदाय) स्वर्ग प्राप्ति और मुक्ति के लिये होता है।

The employment of visible observances, the uses whereof are visible, in the absence of visible results tends to exaltation.

सं० ईश्वर ने वेद बतलाया है इसी में विवाद है? इसका समाधान सूत्रकार करते हैं।

तद्वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यमिति 9-373

(तद्वचनात्) ईश्वर का वचन होने से (आम्नायस्य) वेद (प्रामाण्यं) स्वतः प्रमाण है। (इति) इस प्रकार

(It has been stated that) authoritativeness pertains to revelation because declared by Him.

ऐसा कहा है।

रागाज्ञानदिभिर्वक्ता ग्रस्तत्वादनृतं वदेत्।
ते चेश्वरे न विद्यन्ते स ब्रूयात् कथमन्यथा॥

अनुराग, अज्ञान, अहंकार, आदि दोषों से ग्रसित हुआ वक्ता मिथ्या वचन को कहता है। वे दोष ईश्वर में नहीं पाये जाते इसलिये वे कैसे मिथ्या कहेगा।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

परिशिष्ट

द्वित्वे च पाकजोत्पत्तौ विभागे च विभागजे ।
यस्य न स्खलिता बुद्धिस्तं वै वैशेषिकं विदुः ।।

वैशेषिक शास्त्र की परम्परा में यह एक कहावत चली आ रही है, कि **द्वित्व संख्या** की उत्पत्ति के प्रकार में, पृथिवी परमाणुओं के गन्धादि गुणों की पाकज उत्पत्ति के प्रकार में तथा विभागज विभाग की उत्पत्ति-प्रक्रिया में जिसकी बुद्धि डांवाडोल नहीं होती, उसको वैशेषिक शास्त्र का विशेषज्ञ समझना चाहिये। वैशेषिक दर्शन के पाण्डित्य की यह कसौटी है।

जयन्त भट्ट ने न्यायमञ्जरी कहा है—

यादृगेव हि निक्षिप्तो घटः पाकाय कन्दुके ।
पाकेऽपि तादृगेवासावुद्गतो दृश्यते ततः ।।

यहाँ **'कन्दुक'** पद **'आवा'** (Kien) के लिए प्रयुक्त हुआ है **आश्रयविनाशादेव विनश्यतीति**=न्यायकन्दली तथा उत्तर भारत के प्रख्यात तान्त्रिक प्रह्लाद-नारायणी जी मुरादावाद वाले।

आभार प्रदर्शन

पं० मायाराम जी शास्त्री अध्यक्ष सनातन धर्म मंदिर लाजपत नगर, हनुमद् भक्ति परायण श्री बोधराज जी लाजपत नगर मेन मार्कीट, कर्म-काण्ड मार्तण्ड पं० कल्याणदास जी पुष्करण। (पुष्टिकर) तथा उत्तर भारत के प्रख्यात तान्त्रिक प्रह्लादनारायण जी मुरादाबाद वाले इन सब महानुभावों का हृदय से धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने सूत्रों के लिखने में बड़े सुन्दर परामर्श दिये।

आभारी चेतसाहं श्री कल्याणस्य दिनं दिनम् ।
ग्रन्थाः समर्पिता येन सहाया ग्रन्थ लेखने ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वंश परिचय:

पंचनद (पंजाब) देश में इरावती (रावी नदी) के किनारे लाहौर (लोहकोट) नामक नगर है। पंजाब केसरी महाराजाधिराज रणजीतसिंह जी के शासन काल में जगद् विख्यात् बोधसिंह जी राजपंडित हुए। उनके पुत्र अचरजराम उनके पुत्र मधुसून मिश्र हुए। उनके पुत्र मेरे पिता पं० जमीता राम जी हुए। जिन्होंने पंजाब University के सर्वप्रथम batch से 'शास्त्री' परीक्षा में 'प्रथम' स्थान प्राप्त किया, जिन्होंने बड़े-बड़े प्रकाण्ड विद्वानों के श्री-चरणों में बैठकर वेद, वेदाङ्ग, न्याय, साहित्य, व्याकरण, काव्य आदि का बड़े परिश्रम से अध्ययन किया। पठन-काल में जिन्होंने 'Vice-Roy-Repon' से 'स्वर्ण-स्तवक' पारितोषिक के रूप में प्राप्त किया। स्वामी रामतीर्थ जी को अक्षरारम्भ से प्रारम्भ कर B. A. का 'संस्कृत-कोर्स' एक वर्ष में पढ़ाया। आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी के साथ छः मास तक सत्यार्थप्रकाश का आरम्भ किया। देश के कोने-कोने से विद्यार्थी, महात्मा, साधु श्री-चरणों में आते और विद्याध्ययन के बाद समर्थ विद्वान हो घर लौटते। ऐसे पूज्य पिता के श्री-चरणों का ध्यान करके—वैशेषिक-दर्शन की 'सरला' नाम की टीका प्रस्तुत कर रहा हूँ। मेरे दो सुपुत्र हैं—संसारचन्द्र व श्रीचन्द्र। संसारचन्द्र के विनयविशाल, तथा श्रीचन्द्र के राजन और कपिल।

विदुषामनुचरा ज्ञानचन्द्रः

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.